आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक 45215/86

शिक्षाप्रद साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका

जीवन वैभव

स्थापना वर्ष : 34 वर्ष अंक : 4 अक्टूबर से दिसंबर 2020

दीपावली अंक

इस अंक के आकर्षण

- दीपावली पाँच दिवसीय महापर्व
- संतति प्राप्ति और समग्र बाधाएं
- गुरू का कारकत्व मारकेश प्रभाव
- शनि का साढ़ेसाती
- जीवन में संस्कारों का महत्व
- जीवन में वास्तुशास्त्र का महत्व
- ग्रहों के दुष्प्रभाव कैसे दूर करें
- मधुमेह ठीक हो सकता है मगर
- वैदिक ज्योतिष में पितृ आदि-दोष की पहचान और निदान
- कैंसर रोग और ज्योतिषीय विश्लेषण
- किसी कुण्डली को कैसे देखें और निर्णय लें
- लक्ष्मी प्राप्ति हेतू श्री सूक्त एवं
- समृद्धि हेतू लक्ष्मीअष्ट्क
- त्रैमासिक भविष्य फल, व्रतपर्व एवं शुभ मुहूर्त तथा अन्य सभी स्थायी स्तम्भ

मूल्य : 30 रू.

समृद्धिदायक है महालक्ष्मी अष्टक

नमस्तेस्तु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते!
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
नमस्तेतु गरुदारुढै कोलासुर भयंकरी!
सर्वपाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी!
सर्वदुख हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
सिद्धि बुद्धि प्रदे देवी भक्ति मुक्ति प्रदायनी!
मंत्र मुर्ते सदा देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
आध्यंतरहीते देवी आद्य शक्ति महेश्वरी!
योगजे योग सम्भुते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
स्थूल सुक्ष्मे महारोद्रे महाशक्ति महोदरे!
महापाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
पद्मासन स्थिते देवी परब्रह्म स्वरूपिणी!
परमेशी जगत माता महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
श्वेताम्भर धरे देवी नानालन्कार भुषिते!
जगत स्थिते जगंमाते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
महालक्ष्मी अष्टक स्तोत्रं य: पठेत भक्तिमान्नर:!
सर्वसिद्धि मवाप्नोती राज्यम् प्राप्नोति सर्वदा!!
एक कालम पठेनित्यम महापापविनाशनम!
द्विकालम य: पठेनित्यम धनधान्यम समन्वित:!!
त्रिकालम य: पठेनित्यम महाशत्रुविनाषम!
महालक्ष्मी भवेनित्यम प्रसंनाम वरदाम शुभाम!!

जीवन वैभव

परिवार की ओर से

संपादक
डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

नवरात्रि एवं दीपावली

पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

जीवन वैभव

शिक्षाप्रद साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका

स्थापना वर्ष : 34, अंक-4, अक्टूबर-दिसंबर 2020

●

संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

●

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

●

कानूनी सलाहकार
श्री के.बी. उपाध्याय

●

सलाहकार मण्डल
श्री डी.पी. दुबे (आय.ए.एस.), श्रीमती पुष्पा चौहान,
श्री मनोज अग्निहोत्री, सुनील भण्डारी (मुम्बई),
सौरभ पुरोहित, विनोद जोशी, डॉ. अरविंद राय

●

प्रकाशन कार्यालय : 15-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा. : 9425008662

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)

प्रकाशित लेखों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति	–	30 रुपये
वार्षिक	–	100 रुपये
त्रैवार्षिक	–	300 रुपये
आजीवन	–	1800 रुपये

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ क्र.
1.	वंदना	2
2.	अमृत घट	4
3.	वैभव दर्शन	5
4.	जन्मकुण्डली का छठवां भाव	7
5.	संतति प्राप्ति और समग्र बाधाएं	9
6.	गुरू का कारकत्व और मारकेश प्रभाव	11
7.	शनि की साढ़े साती	13
8.	जीवन में संस्कारों का महत्व	15
9.	जीवन में वास्तुशास्त्र का महत्व	17
10.	वारो का जातक के स्वभाव पर प्रभाव	19
11.	ग्रहों के दुष्प्रभाव कैसे दूर करें	22
12.	मधुमेह ठीक हो सकता है मगर...	23
13.	वैदिक ज्योतिष में पितृ आदि-दोष की पहचान और निदान	25
14.	कैंसर रोग और ज्योतिषीय विश्लेषण	28
15.	किसी कुण्डली को कैसे देखें और निर्णय लें	31
16.	दशम भाव	33
17.	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	35
18.	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	39
19.	आपके पत्र	42

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंट्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011 (म.प्र.) से मुद्रित, संपादक: डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादक: स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव

वन्दना

संकटनाशन गणेश स्त्रोतम्

प्रणम्यं शिरसा देव गौरीपुत्रं विनायकम।
भक्तावासं स्मरैनित्यंमायुःकामार्थसिद्धये।।1।।

****

प्रथमं वक्रतुण्ड च एकदंतं द्वितीयकम।
तृतीयं कृष्णं पिंगाक्ष गजवक्त्रं चतुर्थकम।।2।।

****

लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्ण तथाष्टकम् ।।3।।

****

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।।4।।

****

द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्य यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वासिद्धिकरं प्रभो।।5।।

****

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ।।6।।

****

जपेद्वगणपतिस्तोत्रं षडभिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ।।7।।

****

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।8।।

भावार्थ : नारद जी बोले-पार्वती नंदन देव देव श्री गणेश जी को सिर झुका कर प्रणाम करें और फिर अपनी आयु, कामना और अर्थ की सिद्धि के लिए उन भक्तनिवासका नित्य प्रति स्मरण करें।।1।। पहला वक्रतुंड (तेढ़े मुख वाले), दूसरा एकदंत (एक दांत वाले), तीसरा कृष्णपिंगाक्ष (काली और भूरी आंखों वाले), चौथा गजवक्त्र(हाथी के से मुख वाले)।।2।। पांचवा लंबोदर (बड़े पेट वाले), छठा विकट(विकराल), सातवां विघ्न राजेंद्र (विघ्नों का शासन करने वाले राजाधिराज) तथा आठवां धूम्रवर्ण (धूसर वर्ण वाले)।।3।। नवां भालचंद्र (जिसके ललाट पर चंद्रमा सुशोभित है), दसवां विनायक, ग्यारहवां गणपति और बारहवां गजानन।।4।। इन बारह नामों का जो पुरुष (प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल) तीनों सन्ध्याओं में पाठ करता है, हे प्रभो! उसे किसी प्रकार के विघ्न का भय नहीं रहता; इस प्रकार का स्मरण सब प्रकार की सिद्धियां देने वाला है।।5।। इससे विद्याभिलाषी विद्या, धनाभिलाषी धन, पुत्रेच्छु पुत्र चैता मुमुक्षु मोक्ष गति प्राप्त कर लेता है।।6।। इस गणपतिस्तोत्र का जप करे तो छः माह में इच्छित फल प्राप्त हो जाता है तथा एक वर्ष में पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है-इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है।।7।।जो पुरुष इसे लेकर आठ ब्राह्मणों को समर्पण करता है, गणेश जी की कृपा से उसे सब प्रकार की विद्या प्राप्त हो जाती है।।8।।

सम्पादक की कलम से...

सम्मानीय पाठक बंधु

हमें यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि जीवनवैभव त्रैमासिक पत्रिका ने अपने स्थापना वर्ष के 34 वर्ष पूरे कर लिए हैं। समाज के लिए उपयोगी तथा शिक्षाप्रद साहित्य के साथ-साथ भारतीय प्राच्य संस्कृति के विशेष विषय ज्योतिष एवं अध्यात्म विषय अध्यात्म पर विद्वानों के समय-समय पर आलेख प्राप्त होते रहे जिससे कि आपको ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदाय की जाती रही है। जीवन वैभव ने हमेशा राष्ट्रहित, परिवार और समाज के विकास और कल्याण की भावना रखते हुए अपने लेखों के माध्यम से ज्ञान प्रदाय करने का कार्य किया है तथा आगे भी संकल्परत हैं। आप सभी पाठकों को यह अक्टोबर 2020 का अंक प्रदाय करते हुए इस प्रकाशन से जुड़े रहने के लिए पूरा सम्पादक मण्डल आभारी है।

आप इस ज्ञानयज्ञ से अधिक से अधिक विद्वान लेखक और पाठक बंधु जुड़ते जाकर ज्ञान के रसास्वादन करते हुए जीवन के सर्वांगीण विकास में जीवन वैभव परिवार से जुड़कर सहभागी बन सकें, यही हमारे पाठकवृन्द और सहयोगी साथियों से अपेक्षा है। यह प्रकाशन आपको जीवन में मार्गदर्शक के रूप में सदैव ज्ञान का असीमित भण्डार के द्वार खुले रखकर सेवारत रहेगा।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
संपादक

अमृत घट

1. यदि जीवन में उन्नति करने और बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है और यदि कोई खराब बात है तो वह है अपनी शक्तियों को बिखेर देना। **- इमर्सन**
2. जिसमें तुम्हारी प्रवृत्ति है उसी में लगे रहो अपनी बुद्धि के मार्ग को मत छोड़ो। प्रकृति तुम्हें जो कुछ बनाना चाहती है, वही बनो। तुम्हें विजय प्राप्त होगी इसके विपरीत यदि तुम और कुछ बनना चाहोगे तो कुछ भी ना बन सकोगे। **- सिडनी स्मिथ**
3. उबलते हुए पानी में जिस प्रकार हम अपना प्रतिबिंब नहीं देख सकते उसी प्रकार हम क्रोधी बनकर नहीं समझ सकते कि हमारी भलाई किस बात में हैं। **- महात्मा बुद्ध**
4. मनुष्य को कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे वह अपने आप को छोटा और हीन समझने लगे। - **संत ज्ञानेश्वर**
5. ज्ञानी पुरुष वह है जो अपनी बुद्धि से काम लेता है किसी भी काम को करने से पहले उसका परिणाम सोच लेना ही बुद्धिमानी की निशानी है। **- स्वामी रामतीर्थ**
6. ईश्वर कल्पवृक्ष है जो उसके समक्ष कहता है, हे प्रभु मेरे पास कुछ नहीं है उसे सचमुच कुछ नहीं मिलता। लेकिन जो कहता है भगवान तूने मुझे सब कुछ दिया है ,उसे सब कुछ मिल जाता है। **- स्वामी रामकृष्ण परमहंस**
7. शिष्टाचार शारीरिक सुंदरता की कमी को पूर्ण कर देता है। वही व्यक्ति सर्वाधिक सुंदर है, जो अपने शिष्टाचार से दूसरों के हृदय पर विजय प्राप्त कर सकता है। बिना शिष्टाचार के सौंदर्य का कोई मूल्य नहीं। **- स्वेटमार्डन**
8. वे कितने निर्धन है, जिनके पास धैर्य नहीं है। क्या आज तक कोई जख्म बिना धैर्य के ठीक हुआ है। **- शेक्सपियर**
9. निश्चय ही आरोग्य शरीर से ही धर्म और कर्तव्य का पालन हो सकता है। रोगी शरीर से नहीं। **- दयानन्द**
10. महान बनने की सबसे पहली सीढ़ी नम्रता है, नम्रता वह अमोद्य अस्त्र है जो हमें सफलता की राह दिखाता है और मानव को देवता बना देता है। **- रस्किन**

वैभव दर्शन

सदा ज्ञान के दानी बने

स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

दो अक्षर का शब्द है 'दानी' परंतु इसका अर्थ बड़ा गहरा है आपके मन में यह विचार आएगा कि जब देने को होगा तब ही तो दानी बन सकते हैं अन्यथा दानी कैसे बन सकते हैं क्यों क्या है। - ***संपादक***

दान का अर्थ मात्र केवल धन दौलत का दान ही नहीं है। हमने अपने जीवन में जो कुछ सीखा है वह दूसरों को बताना भी दान की श्रेणी में आता है।यदि हम कोई ऐसी कला जानते हैं जिसको कोई व्यक्ति अपना रोजगार के रूप में अपना सकता है तो उसके लिए बहुत बड़ा दान हुआ। यदि आपके थोड़े से प्रयास से किसी व्यक्ति को रोजगार में सुविधा मिल सकती है तो उससे उत्तम दान और क्या हो सकता है? अज्ञानी को ज्ञान, कायर को हिम्मतवान, जीवन से निराश व्यक्ति को जीवन के प्रति आशावान करने की सीख देना, शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति को स्वास्थ्य लाभ हेतु सहयोग करना आदि भी तो दान के रुप में ही माना जा सकता है।

इस प्रकार का सहयोग करना मानव मात्र के लिए उत्तम कर्म है जिसे दानी व्यक्ति ही कर सकते हैं अतएव दानी बनना चाहिए। कोई बीमार व्यक्ति है एवं उसे रक्त की आवश्यकता है आपका रक्त यदि उस बीमार व्यक्ति के रक्त में समानता रखता है तो रक्त दान देना बहुत महत्व का दान है जिससे बीमार व्यक्ति को जीवनदान मिल सकेगा।

दान और परोपकार के बारे में आचार्य विनोबा भावे जी का कहना है कि परोपकार रहित मनुष्य के जीवन को धिक्कार है उससे तो वह पशु ही धन्य हैं जिनका चमड़ा भी दूसरों के काम आता है। दान के अंतर्गत सद्बुद्धि, सदआचरण करना सीखना भी महत्वपूर्ण है। सद् ज्ञान सीखना बहुत बड़ा दानी है क्योंकि वह व्यक्ति के अंदर ही पशुत्व भावना को समाप्त करते हुए मानवता के बीजों को प्रस्फुरण कराने में सहयोगी है। अतएव सद्ज्ञानदाता व्यक्ति को समाज सेवा में सर्वोपरि माना जाना चाहिए।।

आचार्य रमण ने कहा है कि- सबसे उत्कृष्ट दान ज्ञान का दान है।

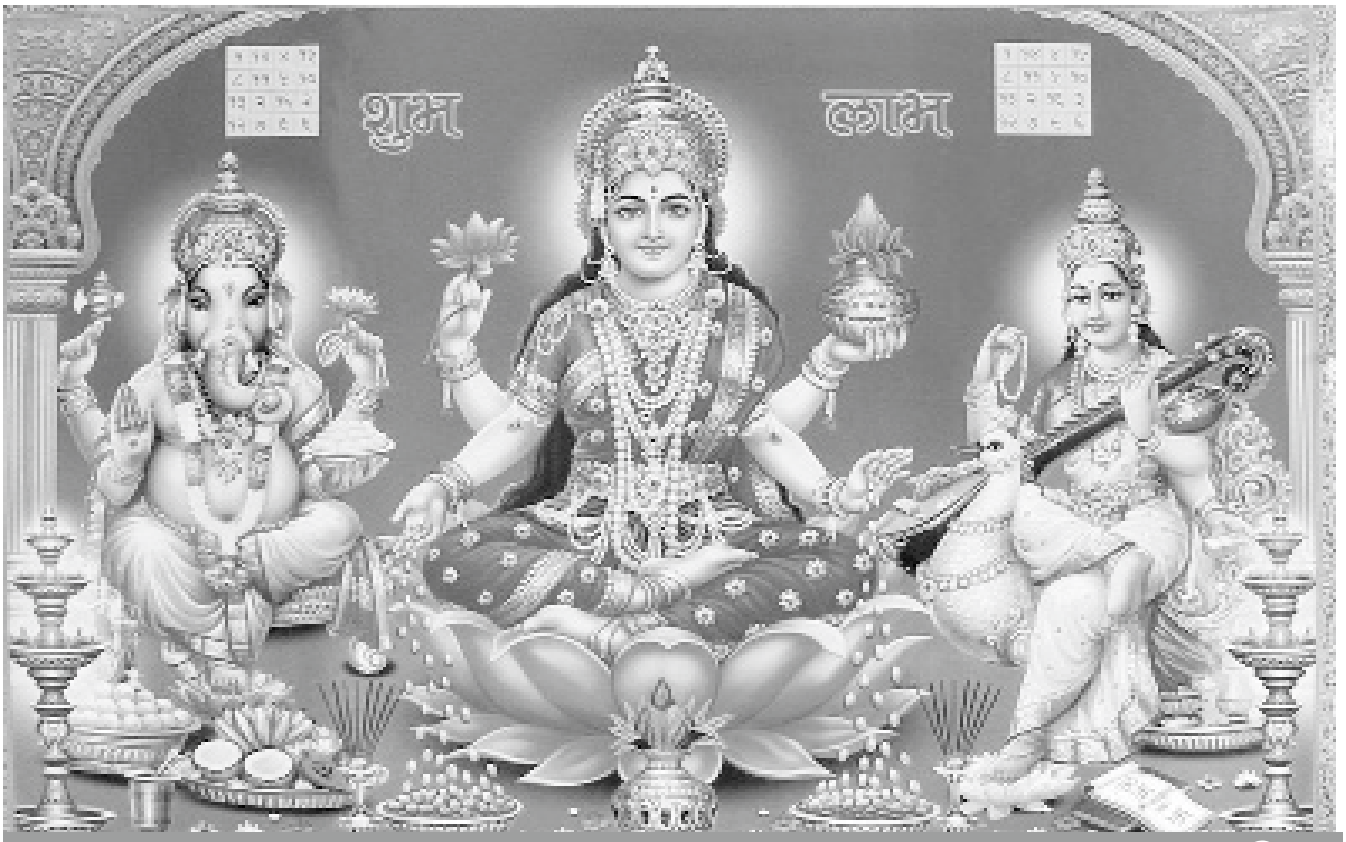

दीपावली पांच दिवसीय महापर्व

5 दिवस की पर्वत श्रृंखला दीपावली पर्व इस बार आश्विन मास के अधिक मास होने के कारण नवंबर में आ रहा है पांच दिवसीय पर्व में धनवंतरी जयंती अर्थात धनतेरस का पर्व दिनांक 13 नवंबर 2020 को रहेगा शुक्रवार सूर्योदय के समय से लेकर सवेरे 10:30 तक धन्वंतरी पूजन कलश स्थापन किया जाना चाहिए साथ ही सायं काल 5,30 से 6,30 के बीच दक्षिण की ओर यम कोण की तरफ दीप दान करना चाहिए तथा द्वार पर दोनों तरफ दीपक लगाने के बाद धन और लक्ष्मी की पूजन करना चाहिए जिससे सतोगुणी धन प्राप्त हो करअनावश्यक कठिनाईयां और स्वास्थ्य बाधा उपस्थित ना हो सके।

दिनांक 14 नवंबर 20 को रूप चौदस और दीपावली पर्व दोनों एक साथ में प्रातः काल तेल उबटन करके अपामार्ग तथा शतोषाधि जलमें डालकर स्नान करना रूप सौंदर्य तथा सु स्वास्थ्य की कामना भगवान से करना चाहिए। सायंकाल में

लक्ष्मी पूजन का दिन दीपावली पर्व

कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या के दिन दीपावली का पर्व मनाया जाता है इस पर्व के बारे में यह मान्यता है कि देवताओं एवं राक्षसों के द्वारा समुद्र मंथन किया गया था तब समुद्र मंथन के समय क्षीर सागर से महालक्ष्मी प्रकट हुई थी इस महालक्ष्मी ने भगवान विष्णु को अपने पति के रूप में स्वीकार किया था इसी कारण दीपावली के दिन सुख समृद्धि की कामना से लक्ष्मी पूजन की जाती है लक्ष्मी को चंचला भी कहते हैं यह स्थिरता से कहीं नहीं रहती है इस कारण से दिवाली के दिन स्थिर लक्ष्मी के लिए स्थिर लग्न में लक्ष्मी पूजन किया जाना चाहिए वृषभ सिंह कुंभ एवं वृश्चिक लग्न स्थिर लग्न कहलाते हैं विशेषकर प्रदोष काल में वृषभ लग्न रहता है इस कारण से वृषभ लग्न में लक्ष्मी पूजन करना स्थिर लक्ष्मी के लिए शुभ माना गया है। दीपावली पर्व के लिए स्थिर वृषभ लग्न जोकि सायं 5:38 से 7:37 के वीच में स्थाई लक्ष्मी हेतु महालक्ष्मी पूजन करना तथा घर में दीपदान करना चाहिए। अपने व्यवसायिक प्रतिष्ठान की पूजन के लिए दिन में स्थिर लग्न में 12:55 से 2:29 के बीच दिन में पूजन आरंभ कर लेना चाहिए कुछ परिवारों में निशिथकाल में पूजन की जाती है जो कि सिंह लग्न मे होती है। इसके लिए उपयुक्त समय रात्री में 12 बजकर 8 मिनिट से 2 बजकर 21 मिनिट के बीच का समय रहेगा।

दिनांक 15 नवंबर 20 रविवार को 10:41 के बाद अन्नकूट, गोवर्धन पूजा 16 नवंबर सोमवार को द्वितीय तिथि के अनुसार यम द्वितीया एवं भाई दूज का आयोजन रखा जा सकता है इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय सबेरे 9:00 से 11 एवं सायंकाल 4:30 से 7:30 के बीच उपयुक्त रहेगा।

(फलित ज्योतिषियों के विचार मंथन)

जन्मकुण्डली का छठवां भाव

संकलन : डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

इन्टेलेक्चुअल एस्ट्रोलोजिकल सोसायटी के तत्वाधान में विद्वान ज्योतिषियों के बीच छठवां भाव पर विचार विमर्श हुआ और सभी विद्वानों ने अपने ज्ञान और अनुभव के बिन्दु जन्मकुण्डली के छठवें भाव पर साझा किए उनमें से चयनित विद्वानों के सारगर्भित बिन्दु पाठकों के लाभार्थ यहां प्रस्तुत है - ***हेमचन्द्र पाण्डेय***

(श्री केदार सिंह चौहान, भोपाल)

धर्म,अर्थ,काम ,मोक्ष में से 2,6,10 भाव अर्थ त्रिकोण बनाते हैं। इस अनुसार, छठे भाव को अर्थ से जुड़ा हुआ माना जाता है। आधुनिक ज्योतिषी गण छठे भाव को धन यानी पैसों के संदर्भ में लेने लगे हैं। जो कि आधुनिक परिस्थितियों के अनुसार ठीक भी है। कैसे ? एक उदाहरण लेते हैं- पुरातन काल में संभवतः राजा के द्वारा न्याय किया जाता था किसी को न्याय के लिए वकील या कोर्ट या सरकार को फीस या पैसे नहीं देने पड़ते थे। ऐसे ही रोगों का उपचार भी इतना महंगा नहीं होता था , बल्कि वैद्य , हकीम संभवतः बहुत कम दक्षिणा में इलाज कर दिया करते होंगे। लेकिन अस्पताल आदिसभी अर्थ लाभ पर केंद्रित हो गए हैं। अतः छठा भाव भी आधुनिक समय में धनागमन का स्त्रोत बन गया है। सदा से ही स्वास्थ्य को भी धन मानागया है। आज वहीं स्वास्थ्य सेवाएं धन का स्त्रोत बन गई हैं। ऋण का भाव भी षष्ठम भाव है बैंक द्वारा ऋण देकर ब्याज की वसूली की जाती हैं। इस दृष्टिकोण से छठा भाव आधुनिक परिपेक्ष्य में धनागमन का स्त्रोत है।

(शील कुमार गुप्ता कानपुर द्वारा छठा भाव विश्लेषण)

यह छठ्वां भाव आपका डिवोशन है समर्पण है। ये भाव पंचम भाव से दूसरा भाव है तो ये भाव पंचम के विषयों का एक्सपोजर है। इस भाव से ये पता चलता है कि किसी भी विषय पर आप कितने समर्पित है। आपने दोस्ती अधिक कर ली या दोस्ती के प्रति समर्पित हो गए तो दुश्मन अधिक हो गए। आप भोजन के प्रति समपित हो गए तो रोग सक्रिय हो गए। आप खर्चो में जुट गए तो ऋण हो गया। वास्तव में ये भाव अधिक सधा हुआ संतुलन चाहता है। ये भाव कॉम्पिटिशन का भी है। जितने सधे हुए संतुलन से पढ़ाई करेगे सफलता की संभावना उतनी ही बढ़ती जाएगी।

जातक जो जीवन मे जो भी संतुलन के कार्य करने होते है वो इस भाव से देखे जाते है। ये भाव सप्तम से द्वादश है। नैसर्गिक सप्तम भाव तुला राशि है। छठा भाव इससे द्वादश है। यानी ये भाव संतुलन को बिगाडने का पूरा पूरा कार्य करता है। इस भाव को साधने से सप्तम भाव अपने आप ही संभल जाता है। जीवन साथी से तलाक कोर्ट केस इस भाव से देखते है। ये भाब दोनो पक्षो के बीच विवाद /समझोंता या दोनो पक्षो के बीच संतुलन साधने के भी है। कोर्ट पुलिस का भी ये भाव है जहाँ दोनो पक्षो के बीच पंचायत करवाई जाती है। वास्तव में ये भाव रिजल्ट का नही बल्कि प्रोसेस का है। जैसे ये भाव रोग ऋण शत्रु का है इनसे मुक्ति का नही है। रोग ऋण शत्रु से निबटने के लिए संतुलन चाहिए। रोग से निबटने के लिए शरीर का संतुलन ऋण के लिए धन का संतुलन शत्रु के लिए व्यवहार का संतुलन रिश्तों को निभाने के लिए भी संतुलन चाहिए इसलिए नॉन जेनिटिक रिश्ते मामा मौसी धर्म भाई बहन ये भी इस भाव से ही देखे जाते है।

(नरेशकुमार शर्मा भोपाल)

छठा भाव कुंडली का महत्वपूर्ण स्थान है यह कुंडली का प्रथम त्रिकस्थान है, जीवन में आने वाली पहली कठिनाइयां बाधाएं जीवन के तीन नेगेटिव बिंदु रोग ऋण और रिपु यहीं से देखे जाते हैं। रोग वह है जो हमारी इस जन्म की दैनिक दिनचर्या/कर्म के बिगड़ने के कारण पैदा होता है जिसे हम आधि कहते हैं प्रारब्ध के वशीभूत जो पूर्व के जन्म जन्मांतर से संचित कर्मों के कारण व्याधि के रूप में प्राप्त होता है वह अष्टम भाव में जिसे मिटाया नहीं जा सकता ना जिसका कोई उपाय किया जा सकता। बड़े से बड़ा बलवान व्यक्ति भी इस व्याधि को भोग करके ही रोग को नष्ट कर सकता है। छठे भाव के द्वारा प्राप्त ऋण भी वह है जिसके द्वारा हम अपने दैनिक आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति कर सकते हैं और जीवन के दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति को थोड़ा आसान बना लेते हैं, प्रायः देखा गया है कुछ लोग जीवन भर आजीवन ऋण में डूबे ही रहते हैं, जिंदगी भर किसी ना किसी का ऋण चुकाते रहते हैं, वह अष्टम भाव है, रिपु वह है जो किसी न किसी तरीके से वाणी के द्वारा हमारा नुकसान करता है जीवन में मिलने वाली हमारी आवश्यकताओं को अपनी वाणी से क्षति पहुंचाता है, शत्रु जो हमारे सामने आकर विरोध करता है वह अष्टम भाव है, छठा भाव हाउस ऑफ सक्सेस है यह दैनिक आमदनी का भाव है क्योंकि यह हमारे विपक्षी सातवें भाव का 12 वां है सातवें भाव का व्यय हमारा फायदा। छठवां भाव हमारे कर्म का भाग्य है, छठवां भाव अधीनता का भाव है इसलिए यह आजीविका के क्षेत्र में नौकरी को प्रदर्शित करता है, छठा भाव चतुर्थ से तृतीय उपचय भाव है इसलिए है हमारी अर्जित की गई प्रॉपर्टी, मकान की दूसरी मंजिल का भाव है।

(श्री मनोज सिंह चौहान)

मेरी दृष्टि में छठवां भाव काफी सारे कारकत्वों पर प्रकाश डालता है, कालपुरुष गणना अनुसार छटवें स्थान को बुध का प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया है। बुध जो कि जातक की बुद्धि कैसी है ? सोच की दिशा क्या है ?? जातक के निर्णय कैसे और किस प्रकार की हो सकते हैं ??? को साधारणतः कुंडली में स्थित बुध इंगित करता है। बुध की उच्च राशि कन्या का उदय छटवें स्थान से माना गया है। इसका मतलब प्रथम तो यह कि बुध ग्रह ही वह आधार होगा जिसमें मानसिक समस्याओं से निबटने का सामर्थ्य शक्ति व विशिष्टताएँ व्यक्ति/जातक में होंगी , वे समस्याएँ जो मानव जीवन को पग पग में दृष्टिगत होती हैं, या वे कारण जिनसे समस्याएँ पैदा होती हैं सामान्यतः छटवें भाव से ही देखी जाएंगी जैसे रोग, रिपु, ऋण, प्रतियोगिता , वगैरह।

व्यक्ति चाहे तो अपने बुद्धि बल से इन सबपर विजय पा सकता है, काबू पा सकता है इसके लिये हमें निश्चित ही कन्या राशि के अधिपति बुध की शरण में जाना होगा।

आप देखिए प्रकृति ने कितनी सूक्ष्मता से

राशि निर्धारण किया हुआ है, एक ओर बुध को तृतीय भाव पराक्रम को भी इसका नेतृत्व सौंपा है वहीं छटवें कॉम्पिटिशन भाव को नेतृत्व भी इसी का सौंपा है, मतलब साफ है, बगैर हिम्मत-पराक्रम/पुरुषार्थ के बुद्धि निरर्थक है ...दोनों का तालमेल ज़रूरी है, पराक्रम/शत्रुता/संघर्ष व लड़ने के लिये व्यक्ति को शौर्य वीरता हिम्मत व ताकत की आवश्यकता होती है जो मंगल हमें प्रदान करता है, दोनों ही भाव जहाँ बुध की राशियों का वर्चस्व है वहाँ का कारकत्व मंगल को सौंपा गया है, मंगल 3रे एवं 6वें भाव में प्रबल कारक माना गया है। मतलब साफ है बुद्धि और बल के सामंजस्य व तालमेल से व्यक्ति हर समस्या से निजात पा सकता है।

अब बात जो उभर के सामने आती है वह यह कि जब दोनों ही समान भाव के लिए ज़िम्मेदार हो रहें हैं तो फिर बुध और मंगल आपस में शत्रु क्यों? आइये इसे समझते हैं, जैसे हर सिक्के के दो पहलू होते हैं बगैर एक के दूसरे का कोई भी औचित्य अस्तित्व या महत्व नहीं है... एक का होना ही दूसरे के होने की पुष्टि करता है, जैसे उजाले का दूसरा पक्ष अंधेरा है, लेकिन एक के बगैर दूसरे की आप कल्पना भी नहीं कर सकते, किसी व्यक्ति या वस्तु पर प्रकाश डालेंगे तो ही अंधेरे के रूप में परछाईं का उद्भव होगा.. या यह कहा जाये कि जहाँ उजाला या प्रकाश कम होता चला जाता है.... अँधेरा वहीं से अपनी शुरुआत करता है.... किसी एक तेज प्रकाशवाले बल्ब के प्रकाश को अगर बहुत धीरे-धीरे मन्दा करते चले जायें तो कुछ ही देर में प्रकाश पूर्णतः अंधकार में परिवर्तित हो जाता है या यों कह लो कि प्रकाश की तीव्रता या आवृत्ति इतनी कम हो जाती है कि हमारी खुली आँखों उस कम प्रकाश को देख पाने में असमर्थ होती हैं प्रकाश होता अवश्य है लेकिन इतना कम जिसे हम अँधकार की उपमा दे देते हैं .. दर असल अँधकार अपने आप में कुछ है ही नहीं.. प्रकाश का ना होना अँधकार हो जाना है ...या अँधकार की पुष्टि है... इन्ही दोनों के बीच एक बिन्दु आता है जिसे हम न अँधकार कह सकते हैं ना ही उजाला यही बीच का ठहराव..केन्द्र.. ही जीवन की अभिव्यक्ति है सार्थकता है जहाँ दोनों है भी और दोनों नहीं भी हैं। ठीक उसी तरह फिर.से विषय पर लौटते हुए प्रकाश डालने की कोशिश करता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति विशेष में मानसिक बुद्धि और शारीरिक बल का समायोजन निहित होता है, जो कुण्डली में बुध और मंगल द्वारा प्रकट होते हैं दोनों का अच्छा तालमेल ही व्यक्ति को विजय दिलाता है, हालांकि दोनों की प्रकृति भिन्न है, बुध मानसिक बल है तो मंगल शारीरिक बल है ज्योतिषीय दृष्टिकोण से दोनों को एक दूसरे का शत्रु कहा गया है, प्रैक्टिकली भी देखा गया है जहां बुद्धि बल अधिक है वहां शारीरिक बल अक्सर कम पाया जाता है जबकि जहां शारीरिक बल अधिक के वहां बुद्धि कि अक्सर कुछ कमी पाई जाती है बहुत कम उदाहरण देखने में मिलते हैं जहां दोनों का सामंजस्य बढ़िया है ...बस सारा रहस्य व तथ्य यहीं छुपा हुआ है ....फिर वही बात जो मैं कहना चाहता हूँ... उभर कर सामने आती है कि दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है एक मानसिक बल है दूसरा शारीरिक बल, जहां बुद्धि अपने हथियार डाल रही होती है इंसान का शारीरिक बल हिम्मत मारकर सिर उठाने लगता है और जहाँ शारीरिक बल हताश होने लगता है, बुद्धि को सक्रियता मिलना प्रारंभ हो जाती है, ठीक अंधकार और प्रकाश की तरह और दोनों के बीच का जो केंद्र बिंदु है वहां व्यक्ति ठहर जाए तो जीत निश्चित है यानी मानसिक बल (बुद्धि) और शारीरिक बल (ताकत) का समान प्रयोग करते हुए कोई लड़ाई लड़ी जाए चाहे वह रोग के प्रति हो शत्रु के प्रति हो या फिर किसी प्रतियोगिता के प्रति या फिर कोई नौकरी ही क्यों ना हो दोनों का तालमेल (शारीरिक और मानसिक बल) व्यक्ति को विजय बना सकता है।

कहने का तात्पर्य है कि जहां एक और बुध को छठे भाव का काल पुरुष को राशि प्रतिनिधित्व दिया है और तीसरे भाव को भी जहां से व्यक्ति की मानसिक युद्ध का आकलन किया जाता है बुद्धि बल का निर्धारण देखा जाता है उन्हीं दो भावों (तीसरे व 6वे) को मंगल का कारकत्व प्रदान किया गया है, जहां से व्यक्ति के शारीरिक बल हिम्मत मेहनत आदि को तौला जाता है। दोनों का बेहतरीन समायोजन क्योंकि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं अगर तालमेल बढ़िया रहे तो व्यक्ति की प्रत्येक *बाधा रोग ऋण शत्रु प्रतियोगिता आदि में जीत निश्चित है।

(हरदीप सिडाना, भटिण्डा, पंजाब)

सब से पहले तो जो ये जो प्रश्न देखें तो प्रश्न लग्न में खोई हुई वस्तु का संबन्ध इस भाव से आने पर वस्तु को इन स्थानों पर तलाशने से खोई वस्तु मिलने की संभावना रहती है. चिकित्सा शास्त्र के अनुसार भी पाचन-तन्त्र में परेशानी हुए बिना स्वास्थ्य में खराबी आने की संभावनाएं कम ही रहती है. छठे घर से काम के प्रति समर्पण, काम करने का तरीका, नौकरी में स्थायित्व तथा खाने-पीने के आदतों की वजह से होने वाली बीमारियों का आंकलन किया जाता है. जातक की बीमारी जल्द से ठीक होगी या समये लगेगा इस बात को समझने एक लिए इस भाव की स्थिति को देखा जाता है. इस भाव के प्रभाव में यदि लग्न ग्रसित होता है तो जातक की रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होगी। छठा घर, सप्तम भाव का व्यय स्थान होने के कारण जीवनसाथी के व्ययों की जानकारी देता है. वैवाहिक मामलों को लेकर कोर्ट-कचहरी में जाने की संभावनाएं इस घर से देखी जाती है. साझेदारी व्यापार का टूटना भी इस घर का प्रभाव होता है. जन्म कुण्डली का छठा भाव एक प्रकार से दुःस्थाय न भी होता है. इस भाव की राशि, ग्रह प्रभाव इत्यादि के कारण जातक को जीवन में कई तरह के उतार-चढ़ाव बने ही रहती हैं. इस भाव का प्रभाव जातक को विरोधियों, बीमारी और कर्ज की स्थिति से रुबरु कराता है. अब जो कृष्णमूर्ति पद्धति में इस भाव और इसमें बैठे ग्रह नक्षत्र एवं राशि नक्षत्र के आधार पर सूक्ष्म विवेचन द्वारा जातक के जीवन की घटनाओं को समझ कर फलादेश किया जाता है. ये ऋण भाव के नाम से भी जाना जाता है. शरीर के अंगों में इस भाव से पेट, पाचन तंत्र आदि देखा जाता है. इसलिए इस घर को पेट से होने वाली बीमारियों का विचार किया जाता है. इस घर के स्वामी के पीड़ित होने पर व्यक्ति के रोग ग्रस्त होने की संभावनाएं बनती है. छठा घर कोर्ट-कचहरी का होने के कारण जिस भाव का स्वामी इस घर में स्थित होता है. उस भाव से जुडे सम्बन्ध के कारण कोर्ट-कचहरी का सामना करना पड़ता है

जैसेः- तीसरे घर का स्वामी, जन्म कुण्डली में अगर छठे घर में हो तथा भाईयों से सम्बन्ध मधुर न हो तो, किसी मामले को लेकर कोर्ट-कचहरी में जाने की स्थिति बन सकती है. हम छठे घर से प्रतिस्पर्धाओं का विचार भी करते है. खेल में जीतना, चुनाव में जीतना, तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के लिए भी इसी घर को देखा जाता है. इसी प्रकार नौकरी के क्षेत्र में भी इस भाव से संबंधित फलों को देखा जाता है. जीवन में मिलने वाली पहली नौकरी को इसी से देखा जा सकता है जीवन में होने वाली अनेक प्रतियोगिताओं में आप किस प्रकार विजयी होंगे ओर आपको इस क्षेत्र में कैसे लाभ मिलेगा ये बातें समझने के लिए बहुत छठे भाव की आवश्यकता प्राप्त होती है. इसी प्रकार लग्न का संबंध जब षष्ठम भाव और अष्टम भाव से होता है तो इस स्थिति में जातक को असाध्य रोग होने की संभावना भी अधिक हो जाती है. इस स्थान पर मंगल जैसे पाप ग्रह के होने से व्यक्ति में संघर्ष से लड़ कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति भी जन्म लेती है. अन्य

बातों में सफाई, सफाई विभाग, मजदूर यूनियन, नौकर, दुश्मनी, परेशानियां, ऋण, ओवर ड्राफ्ट सुविधा तथा पालतू पशुओं का विचार किया जाता है. ये भाव उन स्थितियों को दर्शाता है जहां संघर्ष अधिक करने की आवश्यकता होती है. किसी भी काम को जातक कितनी सक्षमता से आगे बढ़ते हुए ले जाता है वह हमे इस भाव के द्वारा पता चल पाता है. छठा घर, तीसरे घर से चतुर्थ घर होने के कारण इस घर से छोटे-भाई बन्धुओं की भौतिक सुख-सुविधाओं को देखा जाता है. इस घर से इनकी शिक्षा भी देखी जाती है. भाईयों के द्वारा घर या वाहन लेने की संभावनाओं का विचार भी इसी घर से होता है. छोटी यात्राएं, घर बदलना, संतान की आर्थिक स्थिति, जीवनसाथी का विदेश जाना, पिता का मान-सम्मान, शोहरत का विचार भी इस घर से किया जाता है. इस भाव में व्यक्ति को अपने घर, सुख का , किसी पर विजय पाने इत्यादि बातों के लिए इस भाव की मदद चाहिए होती है. यहां स्थिति कोई शुभ ग्रह अपने प्रभाव से हार सा जाता है. उसकी स्थिति कमजोर हो जाती है, अपनी शुभता को नहीं दे पाता है.

छठे भाव का घर में स्थान - अनाज या पका हुआ खाना रखने की जगह, नौकरों का कमरा, जानवरों के रहने का स्थान घर में छठे भाव का स्थान माना जाता है. ये रिपु भाव भी है । इसी भाव से मामा, मौसी, बहन, बुआ, सौतेली माँ, सम्बन्धी रिश्ते , झगड़े , कैद आदि भी देखे जा सकते हैं। जन्म लग्न का सम्बन्ध जो अपने स्तर या सब के द्वारा 6, 8,12 से जुड़े तो वो जातक जिंदगी में मौके मिलने के बावजूद कुछ खास नही कर पाते।

(प्रमोद शास्त्री)

मुझे लगता है प्रत्येक भाव सातवाँ भाव उसका ऑपोजिट है। लग्न जीवन है तो सातवा मारक भाव है। आठवां भाव उम्र है तो दूसरा भाव उम्र का नाशक मारक भाव है। ऐसे ही यदि बारहवां भाव खर्च है तो छठा भाव आमदनी का स्रोत भी है। बारहवां भाव अंतर ऊर्जा के व्यय का केंद्र है तो छठा भाव पहलवानी व्यायाम कसरत के द्वारा ऊर्जा संचय का भाव भी है। पत्नी भाव अर्थात सप्तम भाव से छठा भाव होने के बाद भी यदि सैया सुख भी है तो कहीं न कहीं उनके लिए छठा भाव सुख का सृजन अस्थान भी होना चाहिए। दोष गुण दोनों के मिश्रण से श्रृष्टि बनी है और कम से कम बिना दोष के मिश्रण के आकार तो नहीं ही दिया जा सकता है। रोग भी जीवन के लिए आवश्यक है लेकिन संतुलित शत्रु में लोभ और काम को भी शत्रु कहा गया है जो अति आवश्यक है। उच्च स्तरीय लोग और व्यापारी तथा कोई राष्ट्र कर्जा के बगैर तो इनका जीवन ही संभव नहीं है फिर दोष कहां रह गया जब उसकी उपस्थिति सार्वभौमिक हो गई और सार्वजनिक रूप से उसे स्वीकार लिया गया छठा भाव रोग ऋण शत्रु के द्वारा केवल हानि की ही संकेत नहीं देता रोग बीमारी चिकित्सालय कंपटीशन में बैठने वाले शत्रु को हराकर स्वयं विजेता बनकर उच्च स्तरीय लोन लेकर और राष्ट्रीय स्तर की कंपनियों के संचालन और उससे लाभ अर्जन का भी संकेत छठा भाव देता है बशर्ते अन्य भाव भावेश और दशा अंतर्दशा को ध्यान में रखा जाना उचित है।

(बीना देसाई, मुम्बई)

ज्योतिष में रोग, ऋण, शत्रु भाव कहेंगे। अर्थ त्रिकोण का महत्व भाव, दिनचर्या का महत्वपूर्ण भाव, यहाँ सामने मतलब सप्तम का व्ययभाव, है नौकरी निमित्त सारे जवाब यहाँ से लेंगे त्रिकस्थान का एक भाव क्योंकि ये कन्या राशि का भाव कालपुरुष आधरित जो धान्य आधरित होती है और हमारी बीमारी भी उदर आधरित से ही शुरुआत होती है। जब तक उदर सही बीमारी की मात्रा कमी, इसलिए बीमारी हेतु इसको देखना आवश्यक है। यहाँ जो ग्रह या कुंडली आधरित राशि उसी आधरित आप का रोग की शुरुआत कर्ज भाव भी इसको कहते जो ग्रह यहा आया उसके गुणधर्म और उसी समय गोचर और दशा भी शामिल हुई तोह कर्ज लेना आवश्यक होगा। यहाँ बैठा शनि अपने स्वभाव अनुसार देरी देगा कर्ज मिलने और चुकाने में जब कि मंगल मिलेगा भी तुरंत और खत्म भी करेगा पर बार बार लेनी की चाह होगी क्योंकि ये कालपुरुष का लग्नेश और अष्टमेश भी है तोह लग्नेश जहाँ हो चाह उस भाव की, और अष्टम का लाभ भाव होने से अब पोसिटिव देखे तो छठवे स्वामी, बैठे ग्रह, और नवांश की स्ट्रेंघट पर ननिहाल, पुत्र की आमदनी, जॉब का क्षेत्र, माँ के भाई बहन, इन सबसे फायदा या शुभत्व प्राप्त होता है, हमेशा त्रिकस्थान बुरा फल देगे ऐसा नही वह शुभ,और अशुभ दोनो का महत्व रखता है। दशा, अंतर मैं जब भी ये भाव सूचित हो, कुंडली आधरित अकारक ग्रह जुड़े और गोचर से ये भाव पाप पीड़ित बने तब जातक को रोग की सम्भवना बनेगी।

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय, सम्पादक

छठवें भाव पर चर्चाके दौरान उपरोक्त विद्वानों के विचार दिएगए है वस्तुतः षष्ठम भाव से आशय है कालपुरुष की छठवी याने कन्याराशि से है जिसका स्वामीबुध है अर्थात संयमित जीवन वाणीपर नियंत्रण और नियमितता से जीवन जीने वाला व्यक्तिरोग ऋण और रिपु से रहित और नौकरी करने वाला व्यक्ति उत्तम रूपसे समय व्यतीत कर सकता है। छठवां भाव या त्रिक भाव के अंतर्गत प्रथम पंक्ति अर्थ त्रिकोण वाला भाव जिसमें व्यक्ति की पंचम भाव का धन भाव यानेबुद्धि का धन समाहित है, लग्न का द्वितीय भाव वाणी काऔर उसका पंचम भाव रिपु ऋण और रोग का कहलाता है हमारी वाणी का कारक बुध ही काल पुरुष की तीसरी राशि का भाव तीसरा और छठा भाव कन्या याने बुध का है। स्पष्ट है कि व्यक्ति वाणीसे अपना पराक्रम का परिचय देता है। अशुद्ध अख्खड़ भाषा का प्रयोग व्यर्थ में करता है और वैमनस्य पैदा करने लगता है जिसका आशय शत्रु है और शत्रुता के रूप में वाणी की परिणिती हो जाती है। शत्रुता से बचाव के प्रयास में शारीरीक सूझ बूझ नहीरख पाता और अन्ततः बीमार पड़ जाता है। यही काम षष्ठम भाव का है व्यक्ति को प्रतियोगिता में भाग लेने का साहस देता है और ग्रहों के अशुभत्व के अनुसार अपना विजय अथवा हार स्वीकार करता है षष्ठम का सप्तम भाव व्यय भाव होता है कहने का आशय है कि आदमी यदि व्यर्थ व्यय ना करें तो अपने जीवन में कुछ पूंजी बचा लेता है वह पूंजी धन की भी हो सकती है और स्वास्थ्य की भी हो सकती है। तीसरे एवं छठे भाव का कारक मंगल होते हुए भी बुध के साथ संतुलन बनाए रखना ही जीवन की विशेषता है क्योंकि दोनों में आपस में शत्रुता है मंगल और बुध का परस्पर संतुलन ना बिगड़े दूषित वाणी और जवान का चञ्चपन दोनों मिलकर शत्रुता और रोग के मूल कारण बनते हैंदोनो बुध महाराज के ही स्वभाव के है यदि इनका संतुलन बना दिया तो मंगल की अप्रसन्नतानही होपाती। दशम द्वितीयऔर षष्ठम भाव याने अर्थ त्रिकोण में सफल ता मिलकर जीवन रण में व्यक्ति विजयी हो जाता है। संत तुलसीदास बहुत बड़े अध्यात्मिक ज्योतिषी थे क्योंकि उन्होंने अपने रामचरितमानस में सुख का साधन इस प्रकार बताया है

धर्म न अर्थ न कर्म रुचि
गति ना चहुं निर्वाण जन्म जन्म
सियाराम पद
यही वरदान हूं आन।।

उन्होंने अपने जीवन में धर्म अर्थ काम और मोक्ष तीनों त्रिकोण की मांग भगवान से नहीं की है अर्थात जीवन को खुली किताब के रूप में जीकर प्रभु की सेवा में रहना ही स्वीकारा है। अपने कर्म से वाणीसे संयमित और सतोगुणी रहकर और शत्रुता रहित जीवन जीने वाला व्यक्ति ही सफल व्यक्तित्व वाला हो सकता है और इसके लिए बुध याने बुद्धि से संतुलन रखना ताकि इसके स्वामी भगवान गणेश जी कृपा बनी रह सकती है।

संतति प्राप्ति और समग्र बाधाएं

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

संतति प्राप्ति की कई प्रकार की विषमताएं ग्रहों के प्रभाव के कारण रहती है जिसके कारण पंचम भाव अपना पूरा फल नहीं दे पाता ।संतान का कारक गुरू अपनी शुभ्दृष्टि से संतान योग बनाता है वही गुरू की पंचम भाव में उपस्थिति होना अल्प संतति अथवा कन्या संतान देताहै।इस प्रकार संतान का कारक बृहस्पति पंचम भाव में स्थित होने पर संतान में बाधा उत्पन्न करता है।

चंद्रमा की अशुभ स्थिति महिलाओं के मासिक धर्म को अनियमित करती है जिसके कारण भी संतान उत्पत्ति में बाधाएं होती हैं यदि त्रिक भाव के स्वामी क्रूर ग्रह या पाप ग्रह हो और पंचम भाव को अथवा पंचमभावेश को दृष्टि करते हो ऐसी स्थिति में पंचम भाव के फल को देने में बाधाएं उपस्थित होती है इसके साथ ही पति पत्नी के नाड़ी दोष होने पर भी गर्भ के समय बालक के गले में नाल में उलझ जाना,बालक के गर्भ में वांछित विकास नही होना आदि संतान उत्पत्ति में कारण या रुकावट अथवा गर्भपात मे से कोई भी संभव होते हैं।

मैंने अपना अनुभव में पाया है कि ग्रहों की कितना ही विपरीत स्थिति क्यों ना हो जब गुरु संतान का कारक है ऐसी स्थिति में गुरु मंत्र ,गायत्री मंत्रअथवा संतान गोपाल स्तोत्र से अभिमंत्रित जल चिकित्सक के उपचार के अतिरिक्त रूपसे यदि गर्भवती महिला को नियमित दिया जाए तब होने वाले कोई भी विकार गर्भवती को नही होकर पुष्ट और स्वस्थ बालक की उत्पत्ति होती है तथा वह बालक संस्कारित भी होता है इसमें कोई संशय नहीं है, इसी कारण हमारे पूर्व ऋषियों ने पंचम भाव का कारक बृहस्पति माना गया है।

पुरुष की पत्रिका में यदि शुक्र कमजोर है पाप ग्रहों से पीड़ित है या शत्रु ग्रह के साथ में तो शुक्राणु की कमजोरी संभव है ।स्नायुओं का स्वामी बुधग्रह होने के कारण यदि वह शनि से दृष्ट है अथवा शत्रु ग्रह के नक्षत्र में है ऐसी स्थिति में भी संतान उत्पति के लिए बाधक बनता है। महिलाओं की कुंडली में मंगल त्रिक भाव का स्वामी होकर अशुभत्व रखते हुए पंचम भाव अथवा पंचमेश को दृष्टि करता है ऐसी स्थिति में गर्भ के समय में ध्यान रखने की आवश्यकता होती है कि कहीं गर्भपात ना हो जाए।

महिलाओं के मासिक धर्म के लिए मंगल एवं चंद्रमा का बड़ा महत्व है जो कि नियमितता देता है अनियमित मासिक धर्म होने पर भी गर्भधारण में समस्या आती है इन सभी स्थितियों को मद्दे नजर रखते हुए जीवन की नियमितता अत्यंत आवश्यक है।

संतान की संख्या के बारे में पंचम भाव से प्रथम संतान सप्तम से द्वितीय संतान तथा नवम भाव के तृतीय संतान की जानकारी ली जासकती है जिसके लिए इन भावों के भावेश तथा भाव पर ग्रहों की उपस्थिति अथवा दृष्टि में प्रभाव भी अधिक स्पष्टता प्राप्त हो सकती है । गुरू की आराधना संतान गोपाल स्तोत्र का पाठ करना भी संतान सुख दायक है।

संतान हीन को संतान होना तथा संतान होने के बाद माता पिता को अपने आचरणों से संतोष प्रदान करना भी संतान सुख की श्रेणी में माना जाता है।

गुरू का कारकत्व और मारकेश प्रभाव

श्रीमती पुष्पा चौहान

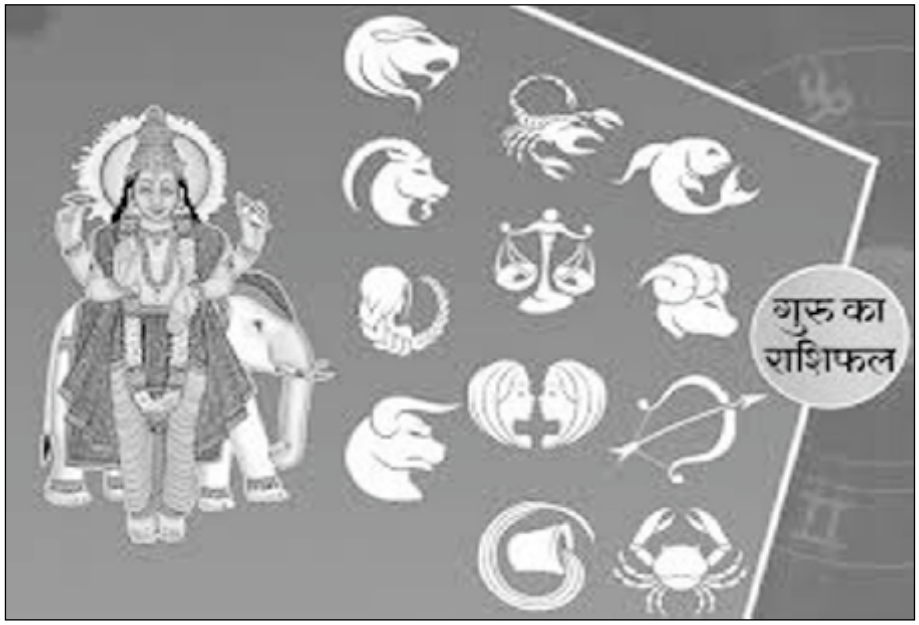

बृहस्पति धनु और मीन राशि के स्वामी हैं। इन की महादशा 16 वर्ष की होती है। बृहस्पति प्रत्येक राशि पर 13 महीने रहते हैं। वक्र गति होने पर इसमें अंतर आ जाता है। ज्योतिष में यह पीले-भूरे रंग का, नेत्र व बाल, पुष्ट वह ऊंची छाती, मोटी और नाटी देह , भारी आवाज, पीला सुनहरे रंग का पुरुष, ब्राह्मण, सद्गुणी, द्रिपद, उत्तर पूर्व दिशा का स्वामी, मधुर स्वाद और कफ प्रदान सौरमंडल का सर्वश्रेष्ठ ग्रह है वह सभी देवता का गुरु होने के कारण इसे गुरु भी कहते हैं। सूर्य और चंद्रमा जहां राज्य कारक है वहीं पर गुरु राज्य कृपा कारक है।

यह कर्क राशि में उच्च व इसी में 5 अंशों में परम उच्च का होता है। मकर राशि में नीच का व इसी राशि में 5 अंशों में परम नीच का होता है। इसकी मूल त्रिकोण राशि धनु 0 से 13 अंश तक तत्पश्चात 14 से 23 अंश तक स्वराशि मानी गई है। इसकी मित्र राशियां में मेष, सिंह, वृश्चिक है तथा वृष, मिथुन ,कन्या, तुला शत्रु राशियां है। मकर व कुंभ में सम माना जाता है। इस के मित्र ग्रह सूर्य, चंद्रमा, मंगल है और बुध, शुक्र इसके शत्रु ग्रह है तथा शनि, राहु, केतु इसके सम ग्रह है। इसके नक्षत्र पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद है। 16 वर्ष की महादशा होकर 1,10,11 भाव में बलि होता है। इसकी पूर्ण दृष्टि अपने स्थान से 5,7,9 स्थानों पर होती हैं। यह कर्क राशि में उच्च का होता है परंतु सिंह व कुंभ राशि में भी उच्च जैसा फल देता है। यह अध्यात्म, धर्म, भाग्य, शील, संयम सदाचार, सद व्यवहार, न्याय, गंभीरता तथा मोक्ष का कारक भी है। इसका रत्न पुखराज है और इसका दिन बृहस्पतिवार है।

गुरु का कारकत्व गुण - यह गुरु ग्रह यश, धन, बुद्धि ,विद्या ,ज्ञान धर्म, मोक्ष, सत्य, न्याय, दर्शन, लोकहित ,पवित्र धर्मस्थल, संतान, बड़े भाई, पत्नी, स्वस्थ देह का कारक है। शुभ एवं बली गुरु का जातक हमेशा सत्य, न्याय, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हेतु प्रयत्नशील बौद्धिक कर्मों में रूचिवान होता है। कुंडली में अन्य ग्रहों की स्थिति अनुकूल होने पर यह शुभ व बली गुरु जातक को अधिकारी, प्रोफ़ेसर, साहित्य सृजक , दार्शनिक, जज, वकील, संपादक, चर्च, मठ तथा अन्य पवित्र स्थल का अधिकारी, प्रकाशन, खाद्य तेल, घड़ी, वस्तु, अनाज व दालों का व्यापारी बनाता है। शनि के साथ यहां 3,6, 10,11 मे भी यश, पद, धन से सुखी करता है। अन्य भागों में गुरु शनि की युति यश, पद, धन में कमी करती हैं। यह शरीर में वसा, आमाशय, आत, लीवर, गुर्दे ,पाचन तंत्र पर अधिकार रखता है इसीलिए दूषित होने पर इन से संबंधित रोग, दुर्बल पाचन क्रिया, गैस, मधुमेह की बीमारी देता है।

भाव 5 पर गुरु की दृष्टि से पुत्र, भाव 11 पर दृष्टि से बड़े भाई, भाव 3 पर दृष्टि से छोटे भाई तथा स्त्री जातक की कुंडली में भाव 7 या उसके स्वामी सप्तमेश पर दृष्टि से पति प्राप्त होता है। मंगल से गुरु का और सूर्य से चंद्रमा का बल बढ़ता है।

गुरु का मारकेश गुण - भाव 8 और इससे अष्टम यानी भाव 3 दोनों ही आयु के भाव है। इन भावों में द्वादश स्थान 2 और 7 भाव आयु के व्यय अर्थात मृत्यु का स्थान होते हैं। इनके स्वामी द्वितीयेश व सप्तमेश मारक का कार्य करने के कारण मारकेश कहलाते हैं। 6 ,8 ,12 भाव के स्वामी भी मारकेश है। भाव 2 एवं 7 में तथा इनके स्वामियों के संग पापी ग्रह की स्थिति भी मारक होती हैं। अतः ग्रहों का मारक प्रभाव घटते क्रम में इस प्रकार हैं-भाव 2 में स्थित पाप ग्रह अत्याधिक प्रबल, उससे कम 2 भाव का स्वामी द्वितीयेश, फिर द्वितीयेश से युक्त ग्रह, सप्तम भाव में स्थित पाप ग्रह, सप्तमेश, सप्तमेश से युक्त ग्रह, भाव 12 इसका स्वामी द्वादशेष युक्त ग्रह, निर्बल अष्टमेश वह फिर निर्बल तृतीयेश। द्वितीयेश और सप्तमेश गुरु और शुक्र जैसे शुभ ग्रह मारक होते हैं। इनमें गुरु प्रबलतम मारक, शुक्र प्रबल और बुध उससे कम होता है। यह शुभ ग्रह मारक स्थान 2 या 7 भाव में या अन्य किसी भाव में किसी पापी ग्रह के साथ स्थित होकर मारक होते हैं। त्रिक स्थान 6 ,8 ,12 मे राहु व केतु भी मारक होते हैं। सूर्य और चंद्रमा कभी भी मारक नहीं होते। सूर्य आयु का कारक है परंतु मारकेश के संग यह मारक प्रभाव रखता है। इसी तरह चंद्रमा निर्मल अवस्था में पाप ग्रह मध्यस्थ में या पाप ग्रहों के संग या मारकेश के संग मारक यानी अरिष्ट कारक है। शनि की महादशा में गुरु या शुक्र की अंतर्दशा में मृत्यु योग बनता है। वृष, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुंभ लग्नो में गुरु मारक होता है।

अधिक मासका महत्व और किए जाने वाले कार्य?

राजा हिरण्यकश्यपु को अस्त्र शस्त्र एवं अन्य वरदानो सहित दिन रात एवं ब्रह्मा के बनाए हुए वर्ष के 12 माह के किसी भी माह में उसकी मृत्यु नहीं हो इस प्रकार का वरदान प्राप्त था इसलिए हिरण्यकश्यप का वध करने के लिए विष्णु को 13 वे माह का निर्माण करना पड़ा

तभी से प्रत्येक तीसरे वर्ष में एक अधिक मास आता है किंतु हम सभी जानते हैं कि सूर्य की 12 संक्रांति के आधार पर वर्ष में 12 माह होते हैं और प्रत्येक माह का कोई न कोई देवता और स्वामी अवश्य है किंतु प्रत्येक लगभग 3 वर्ष में आने वाले इस अधिक मास का ही कोई स्वामी नहीं होने से भगवान सेप्रार्थना की तो श्री कृष्ण ने इस अधिक मास को अपने दिव्य गुण प्रदान करते हुए *इसको पुरुषोत्तम मास के नाम से प्रतिष्ठित कियाऔर यह वरदान दिया कि इस माह में जो धार्मिक अनुष्ठान, भगवान की कथा अथवा तीर्थ यात्रा, ईश्वर दर्शन एवं पवित्र नदियों में स्नान करके प्रभु भक्ति मे लीन रहेगा अथवा दान पुण्य करेगा उसे मनचाहा यथा योग्य फल प्राप्त होगा।

तभी से इस अधिक मास को पुरुषोत्तम मास के नाम से जाना जाता है इसलिए यह मास हम सबके लिए चिंतन मनन एवं आत्म निरीक्षण का महीना है!

इस अधिक मास में सूर्य संक्रांन्ति नही आती है मुहूर्त ज्योतिष में सूर्य संक्राति का महत्व है सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र की गणना के आधार पर मुहूर्त निर्णय किए जाते है। अतः सूर्य संक्रांन्ति नही होने के फल स्वरूप मंगल कार्य ,गृह प्रवेश, विवाहादि कार्य नही होते।

शनि की साढ़े साती

श्री एस.एस. लाल, आई.पी.एस
से.नि डायरेक्टर जनरल पुलिस

जब गोचर का शनि जन्म कालिन चंद्रमा से भाव 12, चंद्र राशि लग्न यानि भाव 1 में चंद्रमा से भाव 2 में संचरण करता है, उस अवधि को साढ़े साती कहते हैं। शनि एक राशि में ढाई साल तक रहता है। 3 भावों में शनि साढ़ेसाती सात साल तक परिभ्रमण करता है। इसीलिए इसे शनि की साढ़े साती कहते हैं। जातक अपने जीवन में 3 बार शनि की साढ़ेसाती से पीड़ित होता है। अपवाद स्वरूप ही कोई दीर्घायु वाला जातक चौथी साढ़े साती को भोग पाता है।

प्रत्येक दशा में साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव अलग-अलग प्रकार का होता है। प्रथम आवृत्ति अधिक शक्तिशाली होती हैं, और कष्ट, पीड़ाओ, अवरोधों के अंबार लगा देती है। द्वितीय आवृत्ति अपेक्षाकृत कुछ कम कष्टदायक रहती हैं। जातक सुविधाजनक मार्ग खोज लेता है। तृतीय आवृत्ति भीषण कष्ट पहुंचाती हैं। जातक चारों ओर से स्वयं को संकट से घिरा पाता है। जातक की बुद्धि बल सभी निष्फल हो जाते हैं।यहां यह तथ्य भी विचारणीय है की साढ़ेसाती हर स्थिति में हर जातक के लिए अत्यधिक दुखदायी नहीं होती है। यदि शनि जन्मांग में उच्च राशि में स्थित हो या मकर, कुंभ में हो या मित्र के घर में हो या मूल त्रिकोण राशि पर भ्रमण कर रहा हो, तो प्रभाव अपेक्षाकृत शुभ ही रहता है। वृष और तुला लग्न के जातकों में प्रायः साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव, अन्य की अपेक्षा, कम पाया जाता है।साढ़े साती के तीनो चरणों में शनि दशा का फलित निम्न बिंदुओं में विचारणीय है।

प्रथम चरण - जब शनि गोचरवश चंद्र लग्न से भाव 12 में आता है, तब यह साढ़ेसाती का प्रथम चरण कहलाता है। इसमें धन का अधिक अपव्यय होता है। परिवार से दूर रहने की विवशता भी कष्ट देती है। स्वास्थ्य, विशेष रुप से नेत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। बुद्धि भ्रमित रहती है। संतान पक्ष की ओर से चिंता रहती है। पूर्व निर्धारित योजनाओं में सफलता नहीं मिलती है।

द्वितीय चरण- जब शनि चंद्र लग्न में गोचर होता है, तो यह साढ़ेसाती का द्वितीय चरण कहलाता है। यह जातक को अनावश्यक विवादों में उलझाता है। लक्ष्य प्राप्ति अत्यंत कठिन तथा असंभव भी हो जाती हैं। सुख शांति में अनेक व्यवधान आते हैं। गृहस्थी अव्यवस्थित हो जाती हैं, लंबी कष्टकारक यात्राएं करनी पड़ती है। सामाजिक दृष्टि से अपयश हानि का सामना करना पड़ता है।

तृतीय चरण- जब शनि चंद्र लग्न से द्वितीय स्थान यानी भाग 2 में विचरण करता है, तो यह स्थिति तृतीय चरण कहलाती हैं। तब सभी प्रकार के सुखों का नाश होता है। शारीरिक रूप से दुर्बलता प्रतीत होती हैं। कोई कलंक, या आरोप लगने की स्थिति बन सकती हैं। मित्रों और रिश्तेदारों से अनबन, नीच प्रवृत्ति के लोगों के कारण ठगी का शिकार होना तथा स्त्री और संतान कष्ट से पीड़ा होती है।

कंटक शनि- गोचर शनि जब चंद्र लग्न से 4,7 ,10 भाग्य स्थान में जाता है तो उसे कंटक शनि कहते हैं, तब साधारण रूप से कंटक शनि मानसिक दुख की वृद्धि करता है वह जीवन को अव्यवस्थित बनाता है। जब ये गोचर में चंद्र लग्न से 4 भाव में हो तब जातक के निवास स्थान में अवश्य परिवर्तन होता है वह स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है। जब यह चंद्र लग्न से 7 वें भाव में हो तो जातक का परदेश वास होता है और यदि भाव 7 के चर राशि में हो तो यह फल अवश्य ही होता है। चंद्र लग्न से शनि गोचर में भाव 10 में हो तो जातक के व्यवसाय आदि में गड़बड़ी होती है। चंद्रमा से चतुर्थ और अष्टम शनि शनि की अढैया कहलाती है जो कि कष्ट, परिवर्तन, भ्रमण तथा धनहानि करती है।

शनि की साढ़ेसाती में दान करने योग्य वस्तुएं- नीलम ,लोहा, काला तिल, काली उड़द, सरसों का तेल, काला वस्त्र, काली गाय, काला जूता, लोहे से निर्मित पात्र आदि का दान अमावस्या, सोमवती अमावस्या, सूर्य-चंद्र ग्रहण,

संक्रांति ,व्यतिपात के समय सुपात्र को ही करना उचित रहता है।

शनि की साढ़ेसाती के उपाय- शनि की साढ़ेसाती लगने पर निम्न उपाय करने से साढ़ेसाती के प्रभाव को कम किया जा सकता है-

1. सोने की अंगूठी में नीलम धारण करें या नाव की कील की अंगूठी अथवा काले घोड़े की नाल की अंगूठी मध्यमा उंगली में धारण करें।
2. घर में नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की ही चादरो तथा नीले वस्त्र का उपयोग करें।
3. शनिवार की शाम को पीपल के पेड़,या वट के नीचे तिल के तेल का दीपक जलाएं सफेद वस्त्र में काले तिल बांधकर पानी में प्रवाहित करें तथा गुड -तेल की बनी रेवडिया बाटे।
4. शनिवार को अपने हाथ की नाप की 19 हाथ वाली रस्सी, या धागे की माला बनाकर पहने, 2 रोटी पहले वाली पर तेल और दूसरी पर घी लगाकर, संभव हो तो, काली गाय को खिलाएं शनिवार के दिन बंदरों को केले और चने खिलाए।काली गाय की सेवा करें। उसके सींगो पर मौली और खुरो पर रोली लगाएं।
5. शनि की शांति के लिए महामृत्युंजय का जाप करें।
6. जिनके जन्म काल में, गोचर में, महादशा में, 27 अंतर्दशाओ में या लग्न 2,4,8,12 भाव में शनि हो तो वह पवित्र होकर प्रातः, मध्याव्ह, सायंकाल आदि दशरथ रचित शनि स्त्रोत पड़े तो शनि की पीड़ा कम होकर शुभ फलदाई होगा।

शनि को कल्याणकारी बनाने के लिए शनि शुभ होने पर निम्न उपाय-

1. चांदी की अंगूठी में नीलम मध्यमा उंगली में शनिवार को प्रातः पहिने। नीले रंग की वस्तु का उपयोग करें। लोहा, तेल, चमड़ा आदि का व्यापार करें शनिवार के दिन सरसों के तेल का तिलक करें और खाने में इसका उपयोग करें।
2. पांच शनिवार शनिदेव या भैरव मंदिर में सरसों के तेल का दीपक जलाएं। शनिवार को घर में भैंस रखें। शनिवार को उड़द की दाल खाएं। शनिवार को भूरा काला कुत्ता पाले। स्टील के बर्तनों का उपयोग करें। सिर और बदन पर सरसों का तेल लगाए।
3. काले घोड़े के नाल का छल्ला मध्यमा उंगली में पहने या शनि के दिन लोहे का कड़ा हाथ में डालें।

साढ़ें साती के दौरान विभिन्न राशियों में भ्रमण पर शुभ या अशुभ जानने की तालिका

राशि	प्रथम चरण (पूर्वा)	द्वितीय चरण (मध्य)	अंतिम चरण (उत्तरार्ध)
मेष	अत्याधिक अशुभ	अत्याधिक अशुभ	सामान्य
वृष	शुभ	शुभ	शुभ
मिथुन	शुभ	शुभ	अत्याधिक अशुभ
कर्क	शुभ	अत्याधिक शुभ	अशुभ
सिंह	अशुभ	अशुभ	शुभ
कन्या	अशुभ	शुभ	अत्याधिक शुभ
तुला	शुभ	अत्याधिक शुभ	अशुभ
वृश्चिक	अत्याधिक शुभ	अशुभ	सामान्य
धनु	अशुभ	सामान्य	शुभ
मकर	सामान्य	शुभ	शुभ
कुंभ	शुभ	अत्याधिक शुभ	सामान्य
मीन	अत्याधिक शुभ	सामान्य	अत्याधिक अशुभ

शनि में पाया देखने की विधि - जन्म लग्न से चंद्रमा जिस भाव में हो तो उस भाव के अनुसार 'पाया' निर्धारण होता है । जैसे

1. सोने का पाया- चंद्रमा लग्न से 1,6,11 भाव में होने से सोने का पाया होता है।
2. चांदी का पाया-चंद्रमा लग्न से 2,5,9 भाव में हो तो चांदी का पाया होता है।
3. तांबे का पाया- चंद्रमा से यदि 3,7,10 मे हो तो तांबे का पाया होता है।
4. लोहे का पाया-लग्न से चंद्रमा यदि 4 ,8 ,12 भाव में हो तो लोहे का पाया होता है।

चांदी का पाया सर्वोत्तम व लाभकारी होता है। सोने का पाया कुछ खराब होता है इसको ठीक करने के लिए 9 प्रकार का अनाज वह सोने का दान करने से कुछ राहत मिलती है। लोहे का पाया सबसे खराब माना जाता है। इस में जन्मा बालक स्वयं व अन्यो के लिए कष्टकारी होता है।शनि का दान करने से कुछ ठीक होता है। के पाये में जन्मा बालक श्रेष्ठ होता है पिता को सम्मान दिलाता है।

शनि की उपासना- शनि की उपासना के लिए निम्न में से किसी एक मंत्र अथवा सभी को श्रद्धा अनुसार नियमित एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए जब का समय संध्या काल तथा कुल जप संख्या 23000 होने चाहिए।

बीज मंत्र - ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनै चराय नमः।

सामान्य मंत्र- ऊँ शं शनैचराय नमः।

जीवन में संस्कारों का महत्व

संतोष श्रीवास्तव

बच्चा जब जन्म लेता है तब वह दुनियादारी से अनभिज्ञ होता है । वह सरल स्वभाव होता है लेकिन उम्र बढने के साथ साथ उसमें समझ आने लगती है और उस समय वह कोमल डाली के समान होता है, उसे जिधर जैसा मोड़ो मुड़ता जायेगा उसकी यही उम्र बहुत नाजुक होती है , इसी समय में उसे संस्कार, संस्कृति और अच्छे विचारों की जरूरत होती है ।

मानव जीवन में संस्कारों का बहुत महत्व है। संस्कारविहिन व्यक्ति देश समाज परिवार के लिए बोझ तुल्य होता है।

जब बच्चा गर्भ में रहता है तभी से उसमें संस्कार की बुनियाद बननी शुरू हो जाती है , इसीलिये गर्भ के समय माँ को धार्मिक वचन गीत सुनने के लिए कहा जाता है।

बच्चा जब जन्म लेता है तब वह दुनियादारी से अनभिज्ञ होता है। वह सरल स्वभाव होता है लेकिन उम्र बढने के साथ साथ उसमें समझ आने लगती है और उस समय वह कोमल डाली के समान होता है, उसे जिधर जैसा मोड़ो मुड़ता जायेगा उसकी यही उम्र बहुत नाजुक होती है , इसी समय में उसे संस्कार, संस्कृति और अच्छे विचारों की जरूरत होती है।

संस्कार के मायने

- जब घर का वातावरण संस्कारमय होगा तब वहाँ रहने वाले हर व्यक्ति की कार्य प्रणाली, विचार अच्छे होंगे।
- घर के बड़े बुजुर्ग बच्चों में अच्छे संस्कार डालने में अहम् भूमिका निभा सकते हैं।
- घर पर धार्मिक आस्था विश्वास का माहौल रखे।
- सुबह शाम भगवान के आगे दीपक जलाये।
- नित्य आरती पूजन प्रार्थना स्वयं करें और बेटे बहू नाती पोतों को भी शामिल करें।
- बच्चों को सदा सत्य बोलने के लिए प्रेरित करें।
- क्षणिक लाभ के लिए किसी को नुकसान नहीं पहुँचाये।
- ईमानदारी मेहनत लगन से अपने काम करें।
- आलस कामचोरी से दूर रहें।
- घर के बड़े बुजुर्गों की इज्जत करें और उनका आशीर्वाद लें।
- बड़े बुजुर्गों की सहायता करें, समय से भोजन दवाई दें।

बच्चों के संस्कार उनकी धरोहर

- बच्चे घर परिवार से होते हुए पाठशालाओं और अपने मित्रों के साथ रहते हुए , अच्छे संस्कार होने पर सब के प्रिय बने रहेंगे। यही

उनकी और उनके परिवार की धरोहर है। घर परिवार की पहचान है। तब सब कहेंगे :-

देखो अमुक परिवार का यह बच्चा कितना संस्कारी है या उसके परिजनों ने उसे कितने अच्छे संस्कार दिये है।

- स्कूल कालेज के साथ ही साथ उसके कार्यस्थल पर भी उसकी तारीफ होगी।
- संस्कारी व्यक्ति जीवन में सफलता के नये नये आयाम छूता है , और जीवन की बुलंदियों पर पहुँचता है।

अच्छे संस्कारों की बुनियाद कैसे डाली जाये

- बच्चों को उनके दादा दादी नाना नानी माता पिता महान पुरुषों की जीवनीशैली , सिद्धांत और विचारधारा बतायें और उनसे प्रेरित करें।
- रामायण गीता आदि धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने के लिए प्रेरित करें।
- भोजन करते समय शांत रहे , पहले भगवान को भोग लगाये और खुश मन से जो भी भोजन बना है , उसे प्रसाद समझ कर ग्रहण करें।
- रात सोते समय या घुमने ले जाते समय साहसी प्रेरणादायक कहानी सुनायें।
- टीवी मोबाइल का बच्चों के द्वारा उपयोग करते समय ध्यान रखें। बाल उपयोगी चीजे ही उन्हें देखने दें और वह भी सीमित समय के लिए।
- घर में पति-पत्नी आपस में लडाई झगड़ा नहीं करें, एक दूसरे को अपशब्द नहीं कहें, इन बातों का बच्चों पर गलत असर पड़ता है और वह भी संस्कारहीन , झगडालू हो जाते हैं ।
- यह भी सही है कि संस्कारहीन बच्चे, माता पिता पर बोझ स्वरूप होते हैं, वह गलत काम करके उनका नाम तो डूबते ही हैं और समाज में बदनामी भी झेलने को मजबूर करते हैं।

इस तरह हम पाते है कि व्यक्ति के जीवन में संस्कारों का बहुत महत्व है और इसकी शुरूआत जन्म से ही हो जाती है।

संस्कारी बच्चे हमेशा देश परिवार घर के उत्थान के बारे में सोचते है और काम करते हैं।

आधुनिकता आज बच्चों को दिशाहीन कर रही है और उनके भटकने के मौके ज्यादा हैं । ऐसे समय में बच्चों में अच्छे संस्कारों की और ज्यादा जरूरत है।

समय की नज़ाकत को समझते हुए आज हर परिवार की यह पहली जिम्मेदारी है कि वह अपने बच्चों को संस्कारी बनायें।

- लेखक संतोष श्रीवास्तव बी 33 रिषी नगर ई 8 एक्स टेंशन बाबडिया कलां भोपाल

वक्त की कीमत

है वक्त
बड़ा बलवान
अविरल
घुमता
चक्र
सुबह-ओ-शाम
बनता
राजा से रंक
और रंक से
राजा

****

घुमती रहती
जिन्दगी
पहिये सी
ठहरती नहीं
जिन्दगी

****

हुआ
आविष्कार
पहिये का
हुई आसान
जिन्दगी
मिली गति
मानव को

****

है रिश्ता
पति पत्नी के बीच
एक गाड़ी सा
चले पहिये
बराबरी से
हंसी-खुशी
खट्टी मीठी सी
है जिन्दगी
वक़्त है
बड़ा बलवान

स्वलिखित

लेखिका नूतन श्रीवास्तव **भोपाल**

जीवन में वास्तुशास्त्र का महत्व

वास्तुशास्त्र हमारे जीवन के लिए आवश्यक हें जिसप्रकार हम कही भ्रमण पर जाते है और कही अज्ञात स्थान पर ठहरते है तो सबसे पहले उस स्थान की स्वच्छता और मनोनुकूल देखते है उसके बाद ही वहां रूकते है,ठीक उसी प्रकार हम अपने दैनिक जीवन में दिनभर कार्य से लौटने के बाद शाम को अपने घरलौटते है तो हमारा मन यही सोचता है कि घर आराम दायक और अच्छे शकून देने वाला हो, यही मानसिकता एक अच्छे वास्तु सम्मत आवास में मिलती है जिसके लिए पृथक से हमारे ऋषि महात्माओं और पूर्व विद्वानों ने वास्तु शास्त्र की रचना की।

वास्तु शास्त्र विषय ज्योतिष का ही एक अंग है जिसके आधार पर ग्रह आरंभ के लिए वृषभचक्र एवं गृह प्रवेश के लिए कलश चक्र का निर्धारण हमारे विद्वान ऋषियों ने प्रथक से किया है जिसमें सूर्य नक्षत्र से चंन्द्र नक्षत्र तक गणना करते हुए वृषभ चक्र एवं कलश चक्र शोधन के लिएमुहूर्त दिए गएहै । जिनके आधार पर भवन का निर्माण और भवन में प्रवेश करने के पश्चात भवन में रहने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से सुख संतुष्ट एवं आनंदित रहता है ।यह जरूरी नहीं है कि अच्छे वास्तु सिद्धांतों के अनुरूप भवन बनने के पश्चात व्यक्ति को कोई कठिनाइयां नहीं आती हो यह जीवन पथ है इसमें कई ऊंची नीची घांटिया है जिन्हें सुरक्षित रूप से चलकर पार करना होता है महर्षि पाराशर ने विशोंन्तरीदशा का क्रम भी इसप्रकार रखा है कि क्रूर ग्रह के बाद शुभ ग्रह और उसके बाद पापग्रहों के प्रभाव की दशाओं को रखा गया है जिससे अशुभ ग्रहों के अशुभत्व भोगने के बाद शुभ ग्रहों की दशा अन्तर्दशाएं प्राप्त होकर जीवन में शुभत्व देकर नवीनता प्रदान करती है। प्रसन्नता और कठिनाईयों को प्रेमपूर्वक पार करने में ही तो अच्छा वास्तु सम्मत भवन मददगार होता है।

वास्तु सम्मत भवन होने के कारण ही व्यक्ति को कोई बड़ी दुर्घटना छोटे में पार करना होजाती है बाधकेश की दशा व्यक्ति के अच्छे वास्तु के आवास में रहने तथा जीवन में सदाचरण के साथ ईश्वर भक्ति करते रहने से जीवन की समस्या ठीक होकर शांति और संतुष्टी प्रद रहती है।अच्छे वास्तु सम्मत भवन में जाने के कारण ही तो व्यक्ति सम्मानित जनों का साथ प्राप्त करता है।तथा सम्मान प्राप्त करता है। यह अच्छे वास्तु सम्मत आवास का ही प्रभाव मान सकते है।

भवन बनाने के समय चारों तत्वों अग्नि तत्व पृथ्वी तत्व वायु तत्व एवं जल तत्व का ध्यान रखना आवश्यक है। पंच तत्वों का हमारा शरीर है और उसी अनुसार ब्रह्मांड में भी पंचतत्व ही मौजूद हैं इस कारण यदि इन तत्वों का ध्यान रखा गया तो निश्चित रूप से भवन आनंददायक सिद्ध होगा चारों दिशाओं की जानकारी सभी को रहती है अन्य चार दिशाएं भी चारों दिशाओं के कोने में स्थित है आग्नेय कोण में अग्नि तत्व प्रधान वस्तुओं रसोई घरको स्थापित करना होता है । नेऋत्य कोण मैं पृथ्वी तत्व का निवास होता है इसी कारण नेऋत्य कोण में मास्टर बैडरूम बनाया जाता है। उसके पश्चात उत्तर पश्चिम दिशा की तरफ वायु तत्व को स्थापित किया जाता है। अर्थात वायव्य कोण में निश्चित रूप से खिड़की दरवाजा होना ही चाहिए जिससे कि भवन में पर्याप्त वायु आती रहे इसके

पश्चात उत्तर एवं पूर्व के मध्य की दिशा ईशान्य कोण की कहलाती है जिसमें जल तत्व प्रधान अस्तित्व रखा जाना चाहिए अर्थात अंडर ग्राउंड पानी की टंकी तथा अपनी आराधना का स्थान होना चाहिए ईशान्य कोण को नीचा इसलिए रखा जाता है परिभ्रमण के समय में पृथ्वी का भी झुकाव अपने एक्सिस पर होता है। इस कारण हमें भी अपनी ईश वंदना के समय शरीर को 23:30 डिग्री झुककर प्रणाम करते हुए आराधना करना चाहिए जिससे जीवन मेंप्रार्थना के साथ गुरुत्व की भावनाआने से नम्रता भी समावेश हो सकती है।

इसके अलावा एक तत्व की कमी रह गई है जिसे की भवन के मध्य में आकाश तत्व के रूप में ब्रह्म स्थान को छोड़ा जाना चाहिए यदि ब्रह्म स्थान का भाग खुला नहीं रहने की स्थिति हो तब उस स्थान पर भारी सामग्री नही रखते हुए रिक्त रखा जाना चाहिए ।ताकि मानसिक दवाब नही रह सके ।दसवी दिशा भूगर्भ की मानी गई है इसी कारण भूगर्भ में भवन प्रारंभ होने के पहले एवं भवन बनने के पश्चात गृह प्रवेश के समय नाग का जोड़ा एवं पंचधातु को भवन प्रवेश के समय सूर्य संक्रान्ति अनुसार निर्धारित वास्तुपुरूष के पांव की तरफ पूजन करके भूमि गर्भ में रखना होता है जिससे कि भवन की नकारात्मक शक्ति समाप्त होकर धनात्मक ऊर्जा मकान में रहने वाले को प्राप्त हो सके ।दस दिशाओं के दस दिक्पाल की पूजनस्थापना से नकारात्मक उर्जा समाप्त होती है।

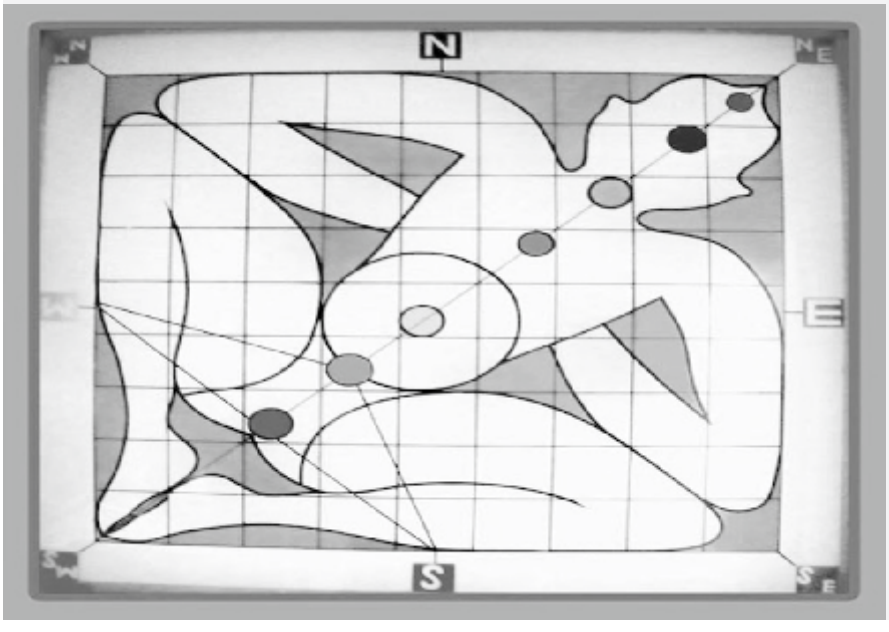

इसी प्रकार पांचों तत्वों के राशियो के अनुसार ही संबंधित व्यक्ति की जन्म कुंडली में आत्म कारक ग्रह लग्न एवं राशि स्वामी की स्थिति को निर्धारित करते हुए वास्तु सम्मत भवन में निवास करना चाहिए जिससे कि मानसिक रूप से संतुष्टि एवं सुख अनुभव हो सके। भवन और सुख तथा माता का भाव चतुर्थ भाव ही कहलाता है इसी भाव से मानसिक संतुष्टि भी देखी जाती है अतः भवन के भाव को यदि कोई शुभ ग्रह देखता है यह स्थित हो तब ऐसी स्थिति में उसी ग्रह की आराधना अथवा चित्र लगाया जाना चाहिए जिससे उस ग्रह की धनात्मक ऊर्जा समय-समय पर मिलती रहे साथ ही हमारी प्राचीन परंपरा के अनुसार स्वस्तिक चिन्ह को बहुत शुभ माना गया है वास्तु को बढ़ाने के लिए घर में घर के बाहर स्वस्तिक चिन्ह दरवाजे के दोनों तरफ लगाए जाने से नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होकर धनात्मक ऊर्जा की वृद्धि होती है।

जन्म वारों का जातक के स्वभाव पर प्रभाव

सप्ताह में कुल सात दिन के सात वार होते है. हम सभी लोगों का जन्म इन सातों वारों में से किसी एक वार को हुआ है। ज्योतिषशास्त्र कहता हैं, वार का हमारे व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है. हमारा जन्म जिस वार में होता है उस वार के प्रभाव से हमारा व्यवहार और चरित्र भी प्रभावित होता है. आइये देखें कि किस वार में जन्म लेने पर व्यक्ति का स्वभाव कैसा होता है.

1. रविवार को पैदा हुये जातक

रविवार सप्ताह का प्रथम दिन होता है. इसे सूर्य का दिन माना जाता है. इस दिन जिस व्यक्ति का जन्म होता है वे व्यक्ति तेजस्वी, गर्वीले और पित्त प्रकृति के होते है . इनके स्वभाव में क्रोध और ओज भरा होता है. ये चतुर और गुणवान होते हैं. इस तिथि के जातक उत्साही और दानी होते हैं. अगर संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाए तो उसमें पूरी तकत लगा देते हैं.

2. सोमवार को पैदा हुये जातक

सोमवार को जन्म लेने वाला व्यक्ति बुद्धिमान होता है. इनकी प्रकृति स्वभाव शांत होता है. इनकी वाणी मधुर और मोहित करने वाली होती है. ये स्थिर स्वभाव वाले होते हैं सुख हो या दुःख सभी स्थिति में ये समान भाव से रहते हैं. धन के मामले में भी ये भाग्यशाली होते हैं. इन्हें राज्य व समाज से मान सम्मान मिलता है

3. मंगलवार को उत्पन्न जातक

मंगलवार को जिसका जन्म होता है वह व्यक्ति जटिल बुद्धि वाला होता है, ये किसी भी बात को आसानी से नहीं मानते हैं और सभी बातों में इन्हें कुछ न कुछ कमी दिखाई देती है. ये विवाद प्रेमी और पराक्रमी होते हैं. ये अपनी बातो पर कायम रहने वाले होते हैं. जरूरत पड़ने पर ऐसे जातक हिंसा पर भी उतर आते हैं. इनके स्वभाव की एक बड़ी विशेषता है कि ये अपने परिवार व कुटुम्बों का पूरा ख्याल रखते हैं.

4. बुध को पैदा हुये जातक

बुधवार को जन्म लेने वाले व्यक्ति मधुर वचन बोलने वाले होते हैं . ऐसे जातक पठन पाठन में रूचि लेते हैं और ज्ञानी होते हैं. ये लेखन में रूचि लेते हैं और अधिकांशतः इसे अपनी जीवका बनाते हैं. ये अपने विषय के अच्छे जानकार होते हैं. इनके पास सम्पत्ति होती है। वाणी और संगीत प्रिय होते है।

5. बृहस्पतिवार को पैदा हुये जातक

गुरूवार को जिनका जन्म होता है, वे विद्या एवं धन से युक्त होता है अर्थात ये ज्ञानी और धनवान होते हैं. ये विवेकशील होते हैं और शिक्षण को या ज्ञान देना पसंद करते हैं. ये लोगों के सम्मुख आदर और सम्मान के साथ प्रस्तुत होते हैं. ये सलाहकार भी उच्च स्तर के होते हैं.

6. शुक्रवार को पैदा हुये जातक

जिस व्यक्ति का जन्म शुक्रवार को होता है वह व्यक्ति चंचल स्वभाव का होता है . ये सांसारिक सुखों में लिप्त रहने वाले होते हैं. ये तर्क करने में निपुण और नैतिकता में बढ़ चढ कर होते हैं. ये धनवान और कामदेव के गुणों से प्रभावित रहते हैं . इनकी बुद्धि तीक्ष्ण होती है. ये अंधविश्वासी नहीं होते हैं। वैभवशाली जीवन को पसंद करते हैं।

7. शनिवार को पैदा हुये जातक

जिस व्यक्ति का जन्म शनिवार को होता है उस व्यक्ति का स्वभाव कठोर होता है . ये पराक्रमी व परिश्रमी होते

हैं. अगर इनके ऊपर दुःख भी आये तो ये उसे भी सहना जानते हैं. ये न्यायप्रिय एवं गंभीर स्वभाव के होते हैं. सेवा करना इन्हें काफी पसंद होता है.

व्यक्ति के चरित्र और स्वभाव पर जन्मतिथि का प्रभाव

प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक तिथियों का एक चक्र होता है जैसे अंग्रेजी तिथि में 1 से 30 या 31 तारीख का चक्र होता है। ज्योतिषशास्त्र में सभी तिथियों का अपना महत्व है। क्योंकि सूर्य आत्मा का कारक और चन्द्रमा मन का कारक होता है सूर्य एवं चन्द्रमा के 12 अंश के अंतर से तिथि बनती है अतः तिथि का अपना महत्व होता है।

सभी तिथि अपने आप में विशिष्ट होती है। हमारे स्वभाव और व्यवहार पर तिथियों का काफी प्रभाव पड़ता है।हमारा जन्म जिस तिथि में होता है उसके अनुसार हमारा स्वभाव होता है। तिथिवार व्यक्ति के स्वभाव के विषय में जानकारी निम्नानुसार है।

1.प्रतिपदा- ज्योतिषशास्त्र के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म प्रतिपदा तिथि में होता है वह व्यक्ति अनैतिक तथा कानून के विरूद्ध जाकर काम करने वाला होता है इन्हें तामसी भोजन के शौकीन होते हैं। आम तौर पर इनकी दोस्ती ऐसे लोगों से रहती है जिन्हें समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता।

2.द्वितीया तिथि- ज्योतिषशास्त्र कहता है, द्वितीया तिथि में जिस व्यक्ति का जन्म होता है, उस व्यक्ति का हृदय साफ नहीं होता है। इस तिथि के जातक का मन किसी की खुशी को देखकर आमतौर पर खुश नहीं होता, बल्कि उनके प्रति ग़लत विचार रखता है। इनके मन में कपट और छल का घर होता है, ये अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए किसी को भी धोखा दे सकते हैं। इनकी बातें बनावटी और सत्य से दूर होती हैं। इनके हृदय में दया की भावना बहुत ही कम रहती है, यह किसी की भलाई तभी करते हैं जबकि उससे अपना भी लाभ हो। ये परायी स्त्री से लगाव रखते हैं जिससे इन्हें अपमानित भी होना पड़ता है।

3.तृतीया तिथि-

तृतीया तिथि में जन्म लेने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से अस्थिर होता है अर्थात उनकी बुद्धि भ्रमित होती है। इस तिथि का जातक आलसी और मेहनत से जी चुराने वाला होता है। ये दूसरे व्यक्ति से जल्दी घुलते मिलते नहीं हैं बल्कि लोगों के प्रति इनके मन में द्वेष की भावना रहती है। इनके जीवन में धन की कमी रहती है, इन्हें धन कमाने के लिए काफी मेहनत और परिश्रम करना होता है।

4.चतुर्थी तिथि - ज्योतिष मान्यताओं के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म चतुर्थी तिथि को होता है वह व्यक्ति बहुत ही भाग्यशाली होता है। इस तिथि में जन्म लेने वाला व्यक्ति बुद्धिमान एवं अच्छे संस्कारों वाला होता है। ये मित्रों के प्रति प्रेम भाव रखते हैं। इनकी संतान अच्छी होती है। इन्हें धन की कमी का सामना नहीं करना होता है और ये सांसारिक सुखों का पूर्ण उपभोग करते हैं।

5.पंचमी तिथि- पंचमी तिथि बहुत ही शुभ होती है। इस तिथि में जन्म लेने वाला व्यक्ति गुणवान होता है। इस तिथि में जिस व्यक्ति का जन्म होता है वह माता पिता की सेवा को धर्म समझता है, इनके व्यवहार में सामाजिक व्यक्ति की झलक दिखाई देती है। इनके स्वभाव में उदारता और दानशीलता स्पष्ट दिखाई देती है। ये हर प्रकार के सांसारिक भोग का आनन्द लेते हैं और धन धान्य से परिपूर्ण जीवन का मज़ा प्राप्त करते हैं।

6.षष्ठी तिथि- षष्ठी तिथि को जन्म लेने वाला व्यक्ति सैर सपाटा पसंद करने वाला होता है। इन्हें देश-विदेश घुमने का शौक होता है अतः ये काफी यात्राएं करते हैं। इनकी यात्राएं मनोरंजन और व्यवसाय दोनों से ही प्रेरित होती हैं। इनका स्वभाव कुछ रूखा होता है और छोटी छोटी बातों पर लड़ने को तैयार हो जाता हैं।

7.सप्तमी- ज्योतिषशास्त्र के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म सप्तमी तिथि को होता है वह व्यक्ति बहुत ही भाग्यशाली होता है। इस तिथि का जातक गुणवान और प्रतिभाशाली होता है, ये अपने मोहक व्यक्तित्व से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की योग्यता रखते हैं। इनके बच्चे गुणवान और योग्य होते हैं। धन धान्य के मामले में भी यह काफी भाग्यशाली होते हैं। ये संतोषी स्वभाव के होते हैं इन्हें जितना मिलता है उतने से ही संतुष्ट रहते हैं।

8.अष्टमी- अष्टमी तिथि को जिनका जन्म होता है वह व्यक्ति धर्मात्मा होता है। मनुष्यों पर दया करने वाला तथा गुणवान होता है। ये कठिन से कठिन कार्य को भी अपनी निपुणता से पूरा

कर लेते हैं। इस तिथि के जातक सत्य का पालन करने वाले होते हैं यानी सदा सच बोलने की चेष्टा करते हैं। इनके मुख से असत्य तभी निकलता है जबकि किसी मज़बूर को लाभ मिले।

9.नवमी- नवमी तिथि को जन्म लेने वाला व्यक्ति भाग्यशाली एवं धर्मात्मा होता है। इस तिथि का जातक धर्मशास्त्रों का अध्ययन कर शास्त्रों में विद्वता हासिल करता है। ये ईश्वर में पूर्ण भक्ति एवं श्रद्धा रखते हैं। धनी स्त्रियों से इनकी संगत रहती है इनके पुत्र आज्ञाकारी और गुणवान होते हैं।

10.दशमी- देशभक्ति तथा समाज में परोपकार के मामले में दशमी तिथि के जातक श्रेष्ठ होते हैं। देश व दूसरों के हितों मे लिए ये सर्वस्व न्यौछावर करने हेतु तत्पर रहते हैं। इस तिथि के जातक धर्म-अधर्म के बीच अंतर को अच्छी तरह समझते हैं और हमेशा धर्म पर चलने वाले होते हैं।

11.एकादशी- एकादशी तिथि को जन्म लेने वाला व्यक्ति धार्मिक तथा सौभाग्यशाली होता है। मन, बुद्धि और हृदय से ये पवित्र होते हैं। इनकी बुद्धि तीक्ष्ण होती है और लोगों में ज्ञान तथा बुद्धिमानी के लिए जाने जाते है। इनकी संतान गुणवान और अच्छे संस्कारों वाली होती है, इन्हें अपने बच्चों से सुख व सहयोग मिलता है। समाज के प्रतिष्ठित लोगों से इन्हें मान सम्मान मिलता है।

12.द्वादशी- द्वादशी तिथि में जन्म लेने वाले व्यक्ति का स्वभाव अस्थिर होता है। इनका मन किसी भी विषय में केन्द्रित नहीं हो पाता है बल्कि हर पल इनका मन चंचल रहता है। इस

तिथि के जातक का शरीर पतला व कमज़ोर होता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से इनकी स्थिति अच्छी नहीं रहती है। ये यात्रा के शौकीन होते हैं और भ्रमण सैर सपाटे का आनन्द लेते हैं।

13.त्रयोदशी- त्रयोदशी तिथि ज्योतिषशास्त्र में अत्यंत श्रेष्ठ मानी जाती है। इस तिथि में जन्म लेने वाला व्यक्ति में महानता होती है अर्थात् महापुरुष होता है। व्यक्ति बुद्धिमान और विद्वान होता है और अनेक विषयों में अच्छी जानकारी रखता है। ये मनुष्यों के प्रति दया भाव रखते हैं तथा किसी की भलाई करने हेतु तत्पर रहते हैं तथा समाज में काफी प्रसिद्धि हासिल करते हैं।

14.चतुर्दशी- जिस व्यक्ति का जन्म चतुर्दशी तिथि को होता है वह व्यक्ति नेक हृदय का एवं धार्मिक विचारों वाला होता है। इस तिथि का जातक श्रेष्ठ आचरण करने वाला होता है अर्थात धर्म के रास्ते पर चलने वाला होता है। इनकी संगति भी उच्च विचारधारा रखने वाले लोगों से होती है। ये बड़ों की बातों का पालन करते हैं। आर्थिक रूप से ये सम्पन्न होते हैं। देश व समाज में इन्हें मान प्रतिष्ठा मिलती है।

15.पूर्णिमा-जिस व्यक्ति का जन्म पूर्णिमा तिथि को होता हे वह व्यक्ति पूर्ण चन्द्र की तरह आकर्षक और मोहक व्यक्तित्व का स्वामी होता है। इनकी बुद्धि उच्च स्तर की होती है। ये अच्छे खान पान के शौकीन होते हैं। ये सदा अपने कर्म में जुटे रहते हैं। ये परिश्रमी होते हैं और धनवान होते हैं। ये स्वभाव से मोहित करने वाले होते हैं।

16.अमावस- अमावस्या तिथि को जन्म लेने वाला व्यक्ति चतुर और कुटिल होता है। इनके मन में दया की भावना बहुत ही कम रहती है। इनके स्वभाव में इर्ष्या अर्थात दूसरों से जलने की प्रवृति होती है। इनके व्यवहार व आचरण में कठोरता दिखाई देती है। ये दीर्घसूत्री अर्थात किसी भी कार्य को पूरा करने में काफी समय लगाते है।

ग्रहों के दुष्प्रभाव कैसे दूर करें

अरविंद पाण्डेय

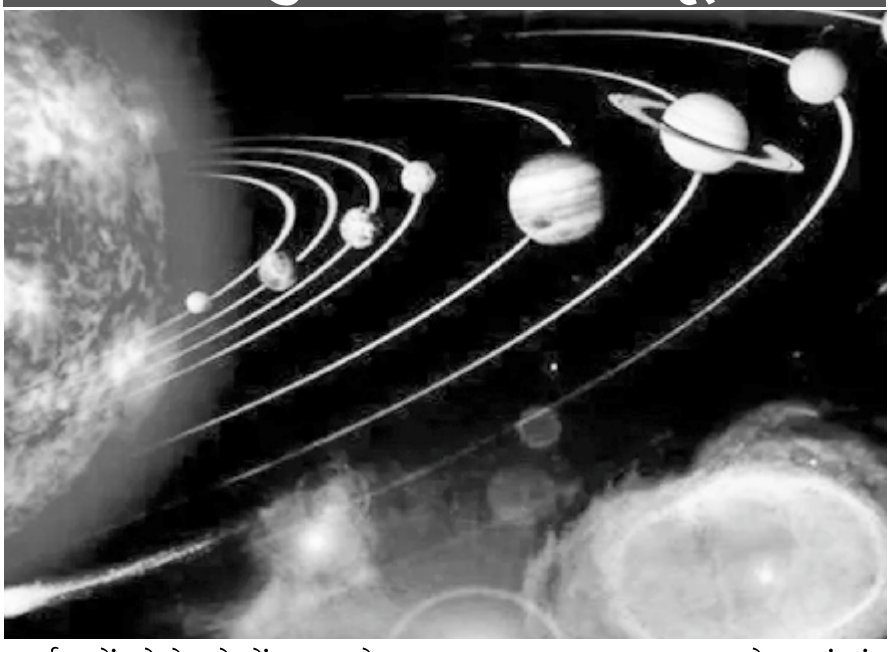

प्राचीन काल से चले आ रहे विभिन्न प्रकार के उपाय हमारे ऋषि-मुनियों ने समस्या आने के पूर्व के उपाय बताए हुए हैं जिन्हें अपनाए जाने के कारण समस्या उपस्थित ही नहीं हो पाती। जैसे कि बच्चों को जन्म होने के बाद चांदी के पात्र से अन्नप्राशन कराना चन्द्रमा को प्रबल करने का संकेत देता है।

जन्म दाता माता के सिरहाने लोहे का छोटा चाकू जन्म लेने वाले बच्चे और माता को अशुभ स्थिति से बचाव करती है समस्या देने वाला ग्रह शनि है जिसे सिरहाने के नीचे दबा देने से समस्याएं नियंत्रित रहेंगी तथा उपस्थित ही नहीं होंगी ।

बालक जब बड़ा होता है तो उसके कमर में चांदी का कमरबंद ,हाथों में चांदी के कड़े तथा गले में चांदी की गलबंद पहना दी जाती है जिससे कि बच्चे का चंद्रमा अनुकूल रहे शुभ प्रभाव देता रहे जिससे मानसिकता उच्च स्तर की बनी रहे तथा समाज के कार्यों में योगदान देने की प्रवृत्ति बालक को रहे ।सु संस्कारित भी रहे क्योंकि चंद्रमा ही मन का देवता है उसके मन को केंद्रित करने के लिए चांदी के आभूषण बचपन में पहनाए जाते थे ।संयुक्त परिवार में रहते हुए बच्चों को उनकी दादी धार्मिक कहानियां एवं किस्से सायंकाल सुनाती रहती थी। जिससे कि बच्चों को आत्म विश्वास और सुसंस्कार मिल सके।

आज के समय में बच्चों को संस्कारित बनाने के उपाय करने की बजाय पूरा परिवार दूरदर्शन के सामने बैठकर दूषित विचार के कार्यक्रमों को देखने में व्यस्त होगया है जिससे बच्चों के संस्कारभी उसी अनुरूप बनने लगे है जिससे कि आज समाज की स्थिति प्रतिकूलता दे रही है।

प्राचीन समय में ग्रहों को दृष्टिगत रखते हुए ही जीवन में जीने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सूत्र दिए गए थे जिन्हें आज भी यदि अपनाया जाए तो ग्रहों के अशुभ फल प्राप्त नहीं होते हुए किसी खर्चीले उपाय की आवश्यकता भी ना पड़े कुछ चुनिंदा उपाय निम्नानुसार हैं:-

हमे अपने दैनिक जीवनके व्यवहार में निम्न बातों का ध्यान रखेंगे तो ग्रहों के अनिष्ट फल का निवारण स्वतः ही हो जावेगा।

सूर्य- अनुशासित रह कर पिता की आज्ञा का पालन।

चन्द्र- माता की सेवा करना किसी का मन नही दुखाना।

मंगल- भाईयों के प्रति भ्रातृ धर्म को ध्यान रखना। अपना क्रोध एवं अंह को कम करना।

बुध- वाणी से प्रियवचन रहना। सभी बच्चों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करना।

गुरू- विद्वानों का सम्मान करना। ज्ञान का सदैव दान करते रहना।

शुक्र- सभी मातृ शक्तियों का सम्मान करना। चरित्रवान रहना।

शनि- सदैव न्याय पूर्ण रहना किसी के साथ अन्याय या भेद भाव की वृति नही रखना।

राहु- जीवन में अपनी परिस्थिति अनुसार रहना,किस्मत की लम्बी उड़ाने नही भरना। यथा संभव समाज में जल की व्यवस्था करना।

केतु- अभिमान से दूर रहना। दूरगामी परिणाम सोचकर कार्य करते रहना।

यदि उपरोक्त अनुसार जीवन में ध्यान देते रहें तो ग्रहों का अशुभत्व अधिक कष्टप्रद कदापि नही हो सकेगा।

मधुमेह ठीक हो सकता है मगर...

(मधुमेह वाणी पत्रिका से साभार)

डॉ. सुभाष शर्मा

लगभग हम सभी को यह एहसास है कि मधुमेह एक बार हो गई तो फिर वह जिंदगी भर साथ रहती हैं। हम में से कई का यह सोचना भी है कि इंसुलिन एक बार लगा तो वह कभी छूट नहीं सकता। लेकिन हमने से बहुत कम लोगों को मालूम है कि कुछ विशेष परिस्थितियों में विशेष सावधानियां रखते हुए तथा जीवन शैली संबंधित दिशा निर्देशों का अक्षरश पालन करते हुए मधुमेह की औषधियों की आवश्यकता लंबे समय के लिए टल जाती हैं। कई बार यह अवधि कई दशकों की भी हो सकती हैं।

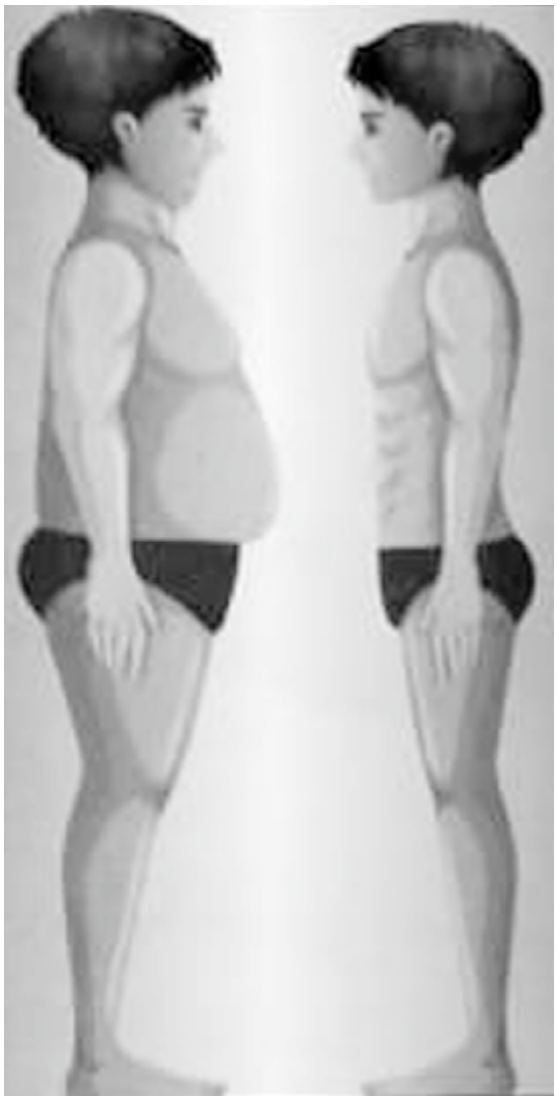

कौन है वह लोग जिनका मधुमेह ठीक हो सकता है या पलट सकता है?

1. मोटापा- मरीज जितना मोटा होगा उसकी मधुमेह पलटने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।आप अपना मोटापा कम कर लीजिए और आपकी औषधियां/ इंसुलिन की आवश्यकता कम होते होते समाप्त हो जाएगी।

वे मधुमेही जो बहुत दुबले हैं उनके लिए यह संभावना बहुत कम है कि उनकी औषधियां इंसुलिन कभी छूट पाए।

मोटापा कैसे दूर करें?- इसकी जानकारी के संबंध में मेडिकल एवं अन्य साहित्य भरा पड़ा है। यहां मैं आपसे चंद प्रमुख जानकारियां साझा करना चाहूंगा। एक भ्रांति है कि तेल घी खाने से मोटापा बढ़ता है। अत्यधिक तेल घी के सेवन से अन्य नुकसान होते हैं, मगर मोटापे का कारण अनाज एवं शर्करा (कार्बोहाइड्रेट्स) ही है। इनका सेवन जितना न्यून होगा हमारा वजन उतनी ही शीघ्रता से कम होगा। अनाज एवं शर्करा का सेवन शाम को नहीं करना चाहिए।इनका वैज्ञानिक कारण यह है कि रात को भोजन के बाद हमारे पास सोने के अलावा कोई गतिविधि नहीं रहती है। अतः अनाज की सारी कैलोरी वजन बढ़ाने में जाती है। यहां पर यह उक्ति सार्थक लगती है कि नाश्ता बादशाही, दोपहर का भोजन आम आदमी का तथा रात का भोजन मुफलिस (गरीब) का। रात को अनाज नहीं खाने का तात्पर्य यह नहीं कि आप को भूखे सोना है वरन आपको मट्ठा, दही, चना, खट्टे फल आदि का सेवन करने की मनाही नहीं है। इस प्रकार वजन कम करते हुए व मधुमेह को नियंत्रण से संबंधित सभी चेष्टाओ(आहार-विहार औषधि) को करते हुए बहुत संभावना है कि आपकी औषधि की आवश्यकता कुछ महीनों में समाप्त हो जाए।

बहुत दुबले मधुमेह के रोगी यह कभी उम्मीद ना करें कि उनकी औषधि की आवश्यकता कभी कम हो सकती हैं।

2. अधिक उम्र में आरंभ हुआ मधुमेह- बहुदा देखने में आया है कि निदान के समय मधुमेह ही की उम्र जितनी अधिक होगी मधुमेह का पलटना उतना ही अधिक संभव होगा।

यदि कोई युवक 20 - 25 साल की उम्र में मधुमेह ही होता है तो उसके मधुमेह का पलटना संभव नहीं हो पाता। लेकिन जिनकी मधुमेह का निदान 60-65 वर्ष की उम्र में हुआ है, उनके लिए थोड़े से प्रयासों में, कुछ महीनों बाद मधुमेह की औषधियां लेने की आवश्यकता कम हो जाएगी।

3. कितनी पुरानी है मधुमेह- अगर आपको मधुमेह हुए तीन-चार वर्षों से अधिक हो चुके हैं तो आप डायबिटीज के पलटने का विचार त्याग दीजिए तथा मान के चलिए कि आप को इस रोग के साथ एवं इसकी औषधियों के साथ बाकी जीवन बिताना है। मधुमेह के पता चलने के तुरंत बाद यदि संभलकर उपरोक्त सभी नियमों का पालन किया जाए तो बहुत संभव है कि मधुमेह पलट जाए।

4. औषधि जनित मधुमेह- अक्सर देखा गया है कि किसी कारण से जैसे गठिया, दमा, चर्म रोग आदि में स्टेरॉइड नामक औषधि को देने की आवश्यकता पड़ जाती हैं। इन दवाओं का एक प्रभाव होता है कि अगर आप मे टाईप-2 मधुमेह के जींस है, तो मधुमेह हो जाती है। यह डायबिटीज भी स्टेरॉइड बंद करने के बाद तथा अच्छे मधुमेह अनुशासन का पालन करते हुए पलट सकती हैं

5. बेरियाट्रिक सर्जरी- यह कई प्रकार की होती है। इस शल्यक्रिया से मोटापा दूर करने में प्रभाव कारी परिणाम मिलते हैं। कई मरीजों में 50 किलो से अधिक वजन घट जाता है। अगर यह मरीज मधुमेंही था तो इसकी दवाइयों की आवश्यकता

समाप्त हो जाती हैं। दरअसल चंद वर्ष पहले जब यह सर्जरी प्रकाश में आई थी, तो समाचार के रूप में इसे मधुमेह के उपचार के लिए की प्रचारित किया गया था।

6. पेन्क्रियाटिक डायबिटीज- पैंक्रियाज के रोग के बाद जब मधुमेह होता है, तो इसका पलटना कभी संभव नहीं होता।

7. गर्भावस्था में मधुमेह हैं- गर्भवती महिलाओं का एक वर्ग है जिन्हें गर्भावस्था के समय मधुमेह हो जाती है।इसकी पहचान होने तक गर्भ से शिशु को बहुत हानि हो चुकी होती है।इस देरी से बचने के लिए गर्भावस्था की तीनों तिमाही में ग्लूकोस टांलरेंस परीक्षण करवाया जाता है।

इसे (post 75 gram 2 hour glucose tolerance test)GTT कहते हैं। पकड़ में आने पर गर्भवती को सतत निगरानी में रखकर ब्लड शुगर का नियंत्रण किया जाता है। जैसे ही यह गर्भवती बच्चे को जन्म देती है, इस प्रसूता की मधुमेह चमत्कारिक रूप से तुरंत ठीक हो जाती है।

तो हुआ ना यह भी डायबिटीज रिवर्सल का एक और प्रमाण? कहानियां खत्म हो जाए तो क्या बात है। लेकिन ऐसा होता नहीं। कुछ वर्ष बीतने पर इस महिला को मधुमेह होने की संभावना रहती है।

इससे बचने के लिए आवश्यक जीवन शैली उपाय करते रहना चाहिए जिनकी चर्चा हम आपसे मधुमेह वाणी में सतत करते रहते हैं। यही हमारा उद्देश्य एवं प्रण है।

8. अन्य मधुमेह- जैसे टाइप 1 मधुमेह, लाड़ा (LADA) मोड़ी (MODI)(लाडा एवं मोडी भी होता है।

(भोपाल से प्रकाशित पत्रिका मधुमेह वाणी से साभार)

- सम्पादक

वैदिक ज्योतिष में पितृ आदि-दोष की पहचान और निदान

पं. के.आर. उपाध्याय, भोपाल

पित्र-श्राप की सही जानकारी सिर्फ जन्म कुण्डली देखकर ही नहीं लगाई जा सकती है, अगर कुंडली ना होने पर प्रश्न कुंडली, हस्त-रेखा (सामुद्रिक विज्ञान), अपराविज्ञान और शकुन शास्त्र के माध्यम से भी पित्र दोषका सही पता लगाया जा सकता है, परन्तु प्राय ये विधिंयाँ प्रचलन में नहीं है अतः मुख्य रूप से जन्म कुण्डली से ही पित्र दोष का निर्णय वर्तमान में किया जाता है।

चार प्रकार के प्रवल पित्र-दोष

सूर्य... आत्मा एवं पिता का कारक गृह है पिता पक्ष का विचार सूर्य से होता है।

चन्द्रमा... मन एवं माता पक्ष का कारक ग्रह है।

मंगल... हमारे रक्त , जीन्स, परम्परा, पौरुष और बंधुत्व पक्ष का कारक ग्रह है।

शुक्र....हमारे भोग, ऐश्वर्य और स्त्री पक्ष का कारक ग्रह है।

सूर्य जब राहु- की युति में हो तो ग्रहण योग बनता है, सूर्य का ग्रहण अतः पिता या आत्मा का ग्रहण हुआ यानि पित्र-श्राप या श्रापित आत्मा। और चंद्र केतु की युति, अमावस्या दोष या चंद्र ग्रहण दोष भी एक प्रकार का पित्र दोष ही होता है क्यों कि चंद्र हमारी भोंतिक देह का कारक है।

चार अत्यंत कष्टकर पित्र-दोष

सूर्य- सूर्य राहू सूर्य शनी या सूर्य केतु की युति पित्र दोष का निर्माण करती है।

चन्द्र- राहू, केतु , शनी या सूर्य की युति में हो तो पित्र दोष (मातृ पक्ष) होता है।

मंगल भी यदि पूर्णास्त है या इन क्रूर ग्रहों से युक्त है तो भी वंशानुगत पित्र दोष होता है।

शुक्र या सप्तम भाव यदि सूर्य, मंगल, शनि या राहु से युक्त हो तो भी स्त्री पक्ष से पित्र श्राप बनता है।

वैसे समस्त ग्रहों के दूषित होने से कुंडली में विभिन्न प्रकार के अन्य पित्रादि श्राप भी बन सकते हैं.... परंतु अभी हम कुछ प्रमुख पित्र दोषों (श्रापों) को समझते हैं :-

शनि सूर्य पुत्र है, यह सूर्य का नैसर्गिक शत्रु भी है, अतः शनि की सूर्य पर दृष्टि भी पित्र दोष उत्पन करती है। इसी पित्र दोष से जातक आदि-व्याधि-उपाधि तीनो प्रकार की पीड़ाओं से कष्ट उठाता है, उसके प्रत्येक कार्ये में अड़चनें आती रहती हैं, कोई भी कार्य सामान्य रूप से निर्विघ्न सम्पन्न नहीं होते है, दूसरे की दृष्टि में जातक सुखी-सम्पन्न दिखाई तो पड़ता है, परन्तु जातक आंतरिक रूप से दुखी होता रहता है, जीवन में अनेक प्रकार के कष्ट उठाता है, कष्ट किस प्रकार के होते है इसका विचार व निर्णय सूर्य राहु की युति अथवा सूर्य शनि की दृष्टि सम्बन्ध या युति जिस भाव में हो उसी पर निर्भर करता है, कुंडली में चतुर्थ भाव नवम भाव, तथा दशम भाव में सूर्य राहु अथवा चन्द्र राहु की युति से जो पित्र दोष उत्पन्न होता उसे श्रापित पितृ दोष कहते है, इसी प्रकार पंचम भाव में राहु गुरु की युति से बना गुरु चांडाल योग भी प्रबल पितृ दोष कारक होता होता है, संतान भाव में इस दोष के कारण प्रसव

कष्टकारक होते हैं, आठवे या बारहवे भाव में स्थित गुरु प्रेतात्मा से पित्र दोष करता है, यदि इन भावो में राहु बुध की युति में हो तथा सप्तम, अष्टम भाव में राहु और शुक्र की युति में हो तब भी पूर्वजो के दोष से पित्र दोष होता है, यदि राहु शुक्र की युति द्वादश भाव में हो तो पित्र दोष स्त्री जातक से होता है इसका कारण भी स्पष्ट कर दें क्योंकि बारहवाँ भाव भोग एव शैया सुख का स्थान है, अतः इस भावके दूषित होने से स्त्री जातक से दोष (श्राप) होना स्वभाविक है ये अनैतिक संबंधों का कारण भी हो सकता है।

अन्य पित्र व प्रेत श्रापित योग

1- यदि कुण्डली मेंअष्टमेश राहु के नक्षत्र में तथा राहु अष्टमेश के नक्षत्र में स्थित हो तथा लग्नेश निर्वल एवं पीड़ित हो तो जातक पित्र दोष एव भूत प्रेतादि से शीघ्र प्रभावित होते हैं।।

2- यदि जातक का जन्म सूर्य चन्द्र ग्रहण में हो तथा घटित होने वाले ग्रहण का सम्बन्ध जातक के लग्न, षष्ट एव अष्टम भाव से बन रहा हो तो ऐसे जातक पित्र दोष,भूत प्रेत, एव आत्माओं के प्रभाव से पीड़ित रहते हैं।।

3- यदि लग्नेश जन्म कुण्डली में अथवा नवमांश कुण्डली में अपनी नीच राशि में स्थित हो तथा राहु , शनि, मंगल के प्रभाव से युक्त हो तो जातक पित्र दोष, प्रेतात्माओं का शिकार होता है।।

4- यदि जन्म कुण्डली में अष्टमेश पंचम भाव तथा पंचमेश अष्टम भाव में स्थित हो तथा चतुर्थेश षष्ठ भाव में स्थित हो और लग्न या लग्नेश पापकर्तरी (प्रतिबंधक) योग में स्थित हो तो जातक मातृ श्राप एवं अतृप्त मातृ आत्माओं से प्रभावित होता है।।

5- यदि चन्द्रमा जन्म कुण्डली अथवा नवमांश कुण्डली में अपनी नीच राशि में स्थित हो या चन्द्र एव लग्नेश का सम्बन्ध क्रूर एव पाप ग्रहों से बन रहा हो तो जातक पित्र दोष, प्रेत-वाधा, एवं पित्रात्माओं से प्रभावित होता है।।

6- यदि कुंडली में शनि एव चन्द्रमा की युति हो अथवा चन्द्रमा शनि के नक्षत्र में, अथवा शनि चन्द्रमा के नक्षत्र में स्थित हो तो जातक पित्र दोष, एव अतृप्त आत्माओं से शीघ्र प्रभावित होता है।।

7- यदि लग्नेश जन्म कुंडली में अपनी शत्रु राशि में निर्बल भाव दूषित होकर स्थित हो तथा क्रूर एव पाप ग्रहो से युक्त हो तथा शुभ ग्रहो की दृष्टि लग्न भाव एव लग्नेश पर नहीं पड़ रही हो, तो जातक प्रेतात्माओं, एव पित्र दोष से पीड़ित होता है।।

8- यदि जातक का जन्म कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी के मध्य हुआ हो और चन्द्रमा अस्त, निर्बल, एव दूषित हो, अथवा चन्द्रमा पक्षबल में निर्बल हो, तथा राहु शनि से युक्त नक्षत्र परिवर्तन योग बना रहा हो तो श्राप के कारण जातक अदृश्य रूप से मानसिक बाधाओं का शिकार होता है।।

9-यदि कुंडली में चन्द्रमा राहु के नक्षत्र में स्थित हो तथा अन्य क्रूर एव पाप ग्रहों का प्रभाव चन्द्रमा, लग्नेश, एव लग्न भाव पर हो तो जातक अतृप्त आत्माओं से प्रभावित होता है।।

10- यदि कुंडली में गुरु का सम्बन्ध राहु से हो तथा लग्नेश एवं लग्न भाव पापकर्तरी योग में हो तो जातक को अतृप्त आत्माएं अधिक परेशान करती है ।।

11- यदि बुध एव राहु में नक्षत्रीय परिवर्तन हो तथा लग्नेश निर्बल होकर अष्टम भाव में स्थित हो साथ ही लग्न एव लग्नेश पर क्रूर एव पाप ग्रहो का प्रभाव हो तो जातक अतृप्त आत्माओं से परेशान रहता है और मनोरोगी बन जाता है।।

12- यदि कुंडली में अष्टमेश लग्न में स्थित हो (मेष लग्न को छोडकर अन्य लग्नों में) तथा लग्न भाव तथा लग्नेश पर अन्य क्रूर तथा पाप ग्रहो का प्रभाव हो तो जातक अतृप्त आत्माओं का शिकार होता है।।

13- यदि जन्म कुण्डली में राहु जिस राशि में स्थित हो उसका स्वामी निर्बल एव पीड़ित होकर अष्टम भाव में स्थित हो तथा लग्न एव लग्नेश पापकर्तरी योग में स्थित हो तो जातक ऊपरी हवा, प्रेत बाधित और आत्माओं से परेशान हो सकता है ।।

सिर्फ इतना ही नहीं और भी दूषित ग्रहों से पित्र-ऋण (श्राप) दोष भी बनते हैं जो जीवन में बहुत ही अवरोध पैदा करके नाना भाँति के कष्ट देते हैं :-

जैसे- पित्र दोष(श्राप) के अन्य कारण व प्रकार

1- सूर्य से पिता, चाचा, ताऊ, दादा, परदादा, नाना, मामा, मौसा या समतुल्य पैत्रिक (पित्रपुरुष) ऋण (श्राप)।

2-चंद्र से मात, मातृपक्ष या मातृतुल्य स्त्रियों के ऋण (श्राप)।

3-मंगल से भाई, मित्र, स्नेही या इनके समान पित्रों का ऋण (श्राप)।

4-बुध से बहन-भांजी बुआ, साली, ननद या समतुल्य का ऋण (श्राप)।

5-गुरू से गुरुदेव, ब्राह्मण, महात्मा, ज्ञानीजन, शिक्षक, विद्वान, पंडित या कुल पूज्य पुरुष आदि का ऋण (श्राप)।

6-शुक्र से पत्नी, प्रेमिका अथवा शैया

सुख देने वाली स्त्रियों का ऋण (श्राप)।।

7-शनी से सेवक, कर्मचारी, मातहत, वेटर, मजदूर, मिस्त्री, चांडाल, भिखारी, या दीन-दुखियों का ऋण (श्राप)।।

8-राहु-केतु से प्राकृतिक, पर्यावरण, सामाजिक, क्षेत्रपाल, देश, मातृभूमि, सरकारी अधिकारी, कर चोरी, जाने-अन्जाने की गई हिंसा, जीवहत्या या अनैतिक व्यवहार व व्यापार के अभिश्राप (ऋण)।।

हस्त-रेखा से भी

भिन्न-भिन्न ग्रह पर्वतों के योग एवं पर्वतों पर पाऐ जाने वाले चिन्ह जैसे– क्रोस, जाल, द्वीप, वलय, भंग, दाग (तिलादि), झाँई, या अन्य अशुभ चिन्हों से भी सभी प्रकार के पित्रादि दोषों (श्रापों) को सहजता से जाना जा सकता है। अनुभव एवं थोडे से अभ्यास की जरूरत होती है। चूंकि पितृ श्रापभी भांति भांति के पाऐ जाते हैं, इन्ही पित्रादि दोषो के कारण जातक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, और शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, अकस्मात दुर्घटनाओं से परेशान रहता है, और शनै-शनै जातक का जीवन कष्टमय बनता जाता है, एवं कई बार तो दिखने में सम्पंन व्यक्ती भी आंतरिक तौर से पीडित होकर मृतकों जैसा जीवन जीने पर भी मजबूर हो सकता है और दोष की सही जानकारी ना होने पर श्रापमुक्ती के लिए दर-दर भटकता रहता है व तमाम तंत्र, मंत्र, रत्न , व्रत, जाप या उपाय करके भी पीडित रहता है अन्ततः वैदिक तंत्र-ज्योतिषादि को ही ढ़ोंगी मान बैठता है।।

तब जाचक करें क्या

एक बात ध्यान दें कि मृत्यु के अलावा प्रत्येक बीमारी, समस्या का इलाज भी है हर एक श्राप, दोष, दुर्भाग्य, और पाप का प्रायश्चित कर्म-विधान व उसको करने का सही स्थान (तीर्थ) और मुहुर्त भी हमारे वैदिक शास्त्रों में बताया है एवं अत्यंत फलदायी भी होता है ये अकाट्य सत्य है वर्तमान कर्मों से ... भविष्य का लेख भी परिवर्तित हो सकता है।।

अतः जिस तरह पित्रादि-दोष (श्राप) या ऋण कई प्रकार के होते हैं..... उसी तरह इनके निदान (प्रायश्चित कर्म-विधान) भी देश, काल, परिस्थितियों के अनुसार वैदिक व तंत्र अलग-अलग तरीके से हो सकता है परंतु विधिवत किसी वैदिक-तंत्र विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में कराना ही उचित होता है।

एक श्रापित कुलदोष योग बताता हूँ:-

अगर किसी एक ही परिवार (माता, पिता,भाई,बहन,पुत्र,पुत्री,पति,पत्नी) में से किन्ही दो से अधिक सदस्यों की कुंडली में... एक ही दोष बन रहा हो तो निशंदेह वो कोइ सामान्य कुंडली दोष नहीं होता, अपितु कोई विकट श्रापित कुल दोष होता है... जिसके परिणाम भी आगे चलकर... अत्यधिक कष्टकर हो सकते हैं।। इसलिए सर्वप्रथम जाचक को... इस विषय के विषेशज्ञ व तत्वज्ञ ज्योतिषाचार्य से उचित परामर्श लेना चाहिये और उनके द्वारा बताऐ गये स्थान(तीर्थ) व मुहुर्त में ..... पूर्ण श्रद्धा और समर्पण भाव से इन श्रापों (दोषों) का प्रायश्चित कर्म-विधान करवाना चाहिए।।

कृपाराम उपाध्याय
ज्योतिर्विद, तंत्रज्ञ एवं तत्ववेक्ता

कैंसर रोग और ज्योतिषीय विश्लेषण

अर्चना गुप्ता
जमशेदपुर, झारखण्ड

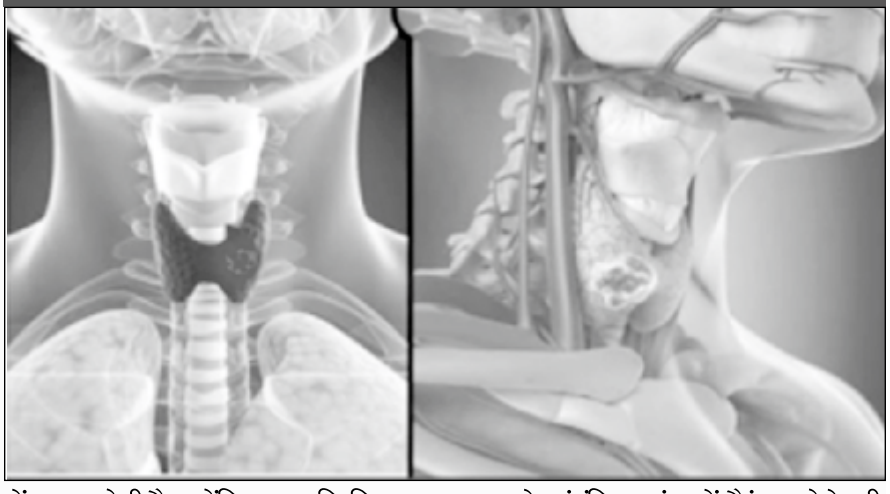

आधुनिक समय में मानव समाज के लिए कैंसर रोग बहुत ही खतरनाक और चिंताजनक समस्या है। हालांकि मेडिकल साइंस ने बहुत प्रगति की है लेकिन कैंसर के मामले में अभी शत-प्रतिशत सफलता नहीं मिली है। कैंसर के कुछ मामलों में प्रारंभिक अवस्था में ऑपरेशन या रेडिएशन द्वारा ठीक किए जाते हैं। लेकिन अधिकांश मामलों में डाक्टर असहाय होते भी देखे गए हैं। अतः आधुनिक ज्योतिषियों का कर्तव्य बनता है कि इस खतरनाक चुनौतीपूर्ण समस्या पर गहराई से विचार कर मानव कल्याण हेतु कुछ नवीन कार्य करें।

कैंसर जैसे भयानक रोगों की उत्पत्ति में कौन-कौन से ग्रहों का प्रभाव रहता है यह जानने से पहले कैंसर के लक्षण को जानना जरूरी है। कैंसर रोग में किसी घाव का ना भरना, बार-बार रक्तस्राव होना, विशेषकर स्त्रियों के मासिक धर्म के बंद हो जाने के बाद ऐसा होता है। गले की खराबी या रोग ठीक होने का नाम ना ले, कोई असाधारण गांठ होना या किसी भाग का बढ़ जाना, स्त्रियों के स्तन में गांठ पड़ जाना, किसी अल्सर के इलाज के बाद भी ठीक ना होना।

मानव शरीर में कैंसर की उत्पत्ति में कोशिकाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। कोशिकाओं में श्वेत एवं लाल रक्त कण होते हैं ज्योतिष में श्वेत रक्त कण को चंद्र तथा कर्क राशि सिग्नीफाई करते हैं तथा लाल रक्त कण को मंगल सिग्नीफाई करते हैं इसीलिए ज्योतिष में कैंसर जैसे भयानक रोग के लिए चंद्र का तथा मंगल का विशेष महत्व है।

कैंसर एक लंबी अवधि तक चलने वाला रोग है। शनि और राहु लंबे समय तक चलने वाले रोग देते हैं इसीलिए इन दोनों ग्रहों की भूमिका भी कैंसर रोग होने में मुख्य होती है क्योंकि बृहस्पति विस्तार का कारक है और कैंसर रोग में कोशिकाओं की अनवरत वृद्धि होती है। कैंसर रोग में बृहस्पति का भी महत्वपूर्ण रोल है। अत- कैंसर रोग का संबंध शनि राहु तथा पीड़ित चंद्र मंगल गुरु से होता है। शरीर में किसी भी प्रकार की रसौली जल से होती है अतः यहां जल तत्व राशियों कर्क वृश्चिक तथा मीन का बहुत महत्व है। कर्क राशि का नाम कैंसर है और इसका चिन्ह में कैकडा है कैकडा की प्रवृत्ति होती है की जिस स्थान को अपने पंजों में जकड़ लेता है उसे अपने साथ लेकर ही छोड़ता है।इसी प्रकार कोशिकाएं मानव जीवन के जिस अंग को अपना स्थान बना लेती हैं उसे शरीर से अलग करके ही हटाया जाता है। जल तत्व राशियों के पाप ग्रस्त होने पर कैंसर की संभावना प्रबल हो जाती है। इसके साथ साथ मेष, वृष, तुला, मकर राशियों से भी संबंध देखा गया है।

ग्रहों तथा राशियों के साथ-साथ भावों का भी महत्व होता है। छठा भाव रोग तथा अष्टम भाव दीर्घकालिक रोग के लिए देखा जाता है और बारहवें भाव हॉस्पिटेला इजेशन का है। जन्म कुंडली में जब एक ही भाव पर अधिकतर पाप ग्रहों का प्रभाव हो विशेषकर शनि मंगल राहु का तब उस भाव से संबंधित अंग में कैंसर होने की संभावना बन जाती है।

जब जन्म कुंडली में नेपच्यून व यूरेनस आमने-सामने हो तब इसे अत्यधिक अशुभ माना जाता है।

जब चंद्र, मंगल, गुरु का पीड़ित होना और 6 8 12 भाव और उनके स्वामियों से संबंध बनाएं तथा पीड़ित ग्रहों की दशा आ जाए तब इस रोग के होने की संभावना बनती है। अशुभ ग्रह अथवा रोग कारक ग्रहों की महादशा, अंतर्दशा, प्रत्यंतर दशा हो लग्न /लग्नेश, मेष राशि ,मंगल पर शनि राहु केतु व षष्ठेश का प्रभाव युति दृष्टि द्वारा हो तो जातक को मस्तिष्क का कैंसर ब्रेन ट्यूमर हो सकता है। द्वितीय भाव/ भावेश,वृषभ राशि ,शुक्र पर पापी ग्रहों का प्रभाव हो तो मुंह का कैंसर होता है। द्वितीय भाव पर मंगल और केतु युति दृष्टि प्रभाव डालते हैं तो व्यक्ति तंबाकू चबाने का आदी हो जाता है जिससे कैंसर की संभावना बनती है। दूसरे भाव में शनि राहु हो और चतुर्थ भाव भावेश पर चंद्र पर पापी ग्रहों का प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष प्रभाव हो तो व्यक्ति धूम्रपान का आदी बन जाता है जो आगे चलकर फेफड़े के कैंसर का कारण बनता है। तृतीय भाव में पापी प्रभाव हो तो गले में कैंसर होता है। रक्त कारक ग्रह चंद्र ,मंगल के

ऊपर शनि राहु केतु का अशुभ प्रभाव हो और लगन लग्नेश व पीड़ित हो तो ब्लड कैंसर होता है। पंचम भाव/ भावेश, कारक गुरु, सिंह राशि और सूर्य कमजोर हो और उन पर पापी ग्रह शनि मंगल राहु केतु और षष्ठेश का प्रभाव हो तो एसिडिटी ,अल्सर होकर इंटेस्टाइन में कैंसर की संभावना बन जाती है।

लगन/ लग्नेश पूरे शरीर का प्रतिनिधित्व करती हैं लेकिन शरीर के अलग-अलग हिस्सों की अंदरूनी और बाहरी हिस्सों का विश्लेषण करने के लिए जन्म कुंडली को दो भागों में बांटना जरूरी है। इसमें दाएं और बाएं शरीर के अंगो का विश्लेषण किया जा सकता है। विश्लेषण करने के बाद ही शरीर के उन हिस्सों में बैठे ग्रह का युति/ दृष्टि संबंध से पता लगाया जा सकता है कि कैंसर शरीर के किस अंग को प्रभावित करेगा।

यदि योगकारक ग्रह की दशा हो तो रोग का आरंभ में ही पता चल जाता है और उपचार हो जाता है और यदि अकारक ग्रहों की दशा हो तो जातक की बीमारी का प्रारंभिक अवस्था में डायग्नोज नहीं हो पाता और सही उपचार भी नहीं हो पाता। जन्मकुंडली के साथ-साथ नवांश कुंडली, जन्म में षष्टिआंश कुंडली, त्रिशांश कुंडली का भी भली-भांति विश्लेषण करना चाहिए और उसके बाद किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

ज्योतिष पूर्व जन्म के किए गए कर्मों का आधार है अर्थात ज्योतिष द्वारा हम यह जान सकते हैं कि हमारे पूर्व जन्म के किए गए कर्मों का परिणाम हमें इस किस प्रकार प्राप्त होगा यह किसी रोग के रूप में भी प्राप्त हो सकता है।

ज्योतिष विज्ञान कैंसर सहित अन्य रोगों के पहचानने में भी सहायक होता है तथा इस रोग से इसके साथ साथ यह भी मालूम किया जा सकता है कि रोग किस उम्र में होगा और यह मृत्यु दायी होगा अथवा नहीं अर्थात हमें यह भी ज्ञान

वृश्चिक लग्न की पत्रिका

लग्नेश मंगल अष्टम भाव में वक्री होकर राहु केतु अक्ष पर तृतयेश चतुर्थेश अकारक वक्री शनि के साथ तथा राहु के साथ बैठकर दूसरे भाव पर दृष्टि दे रहे हैं। मारक भाव में बैठे अष्टमेश बुध केतु के साथ। यहां मंगल षष्ठेश भी है। मंगल की दृष्टि काल पुरुष के द्वितीयेश शुक्र पर है तथा राहु की दृष्टि तत्कालिक द्वितीयेश गुरु पर है। इनके कैंसर होने के योग हैं। शनि मंगल राहु की दशा में दिसंबर 2006 से फरवरी 2007 के मध्य इनका मुह का कैंसर डायग्नोज हुआ।

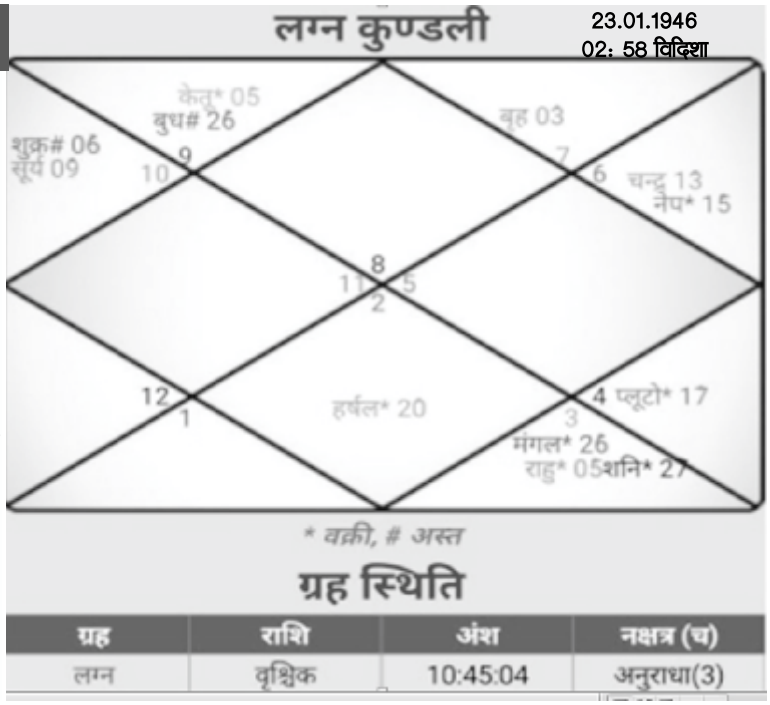

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र (च)
लग्न	वृश्चिक	10:45:04	अनुराधा(3)

कर्क लग्न की पत्रिका

लग्नेश चंद्र छठे भाव में केतु के डिस्पोजिटर एकादशेश शुक्र के साथ। सप्तमेश अष्टमेश शनि बारहवें भाव में वक्री होकर केतु के प्रभाव में आकर लगन को प्रभावित कर रहे हैं। कर्क राशि को प्रभावित कर रहे हैं। तथा मंगल युक्त राहु भी कर्क राशि को प्रभावित कर रहे हैं। षष्ठेश गुरु अष्टम में बैठकर शनि को, बारहवें भाव को और चतुर्थ भाव को प्रभावित कर रहे हैं। इस तरह इस जातिका को ब्रेस्ट कैंसर हुआ।

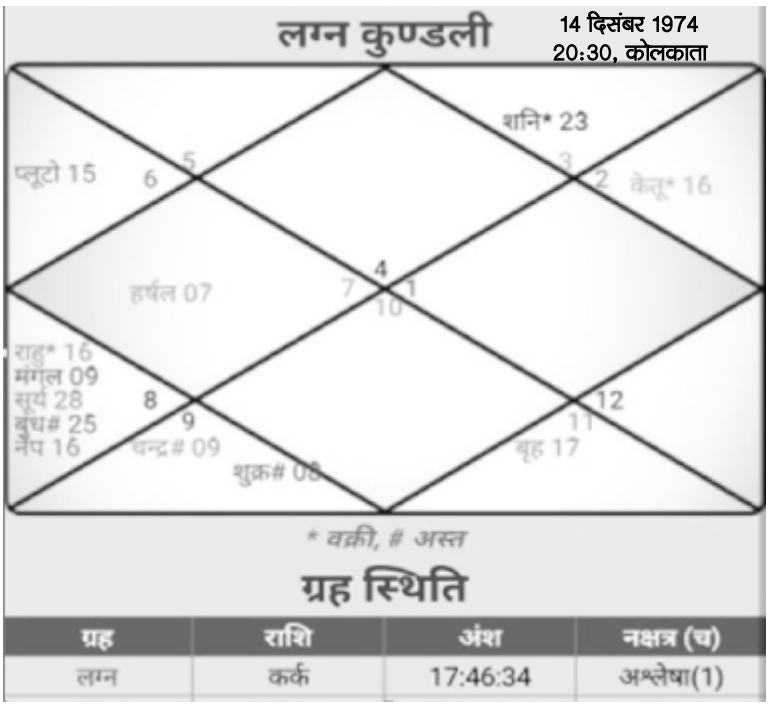

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र (च)
लग्न	कर्क	17:46:34	अश्लेषा(1)

हो सकता है कि यह बीमारी क्योरेबिल है अन्यथा नहीं । समय रहते प्रतिकूल ग्रहों का मंत्र जाप एवं अन्य उपायों द्वारा शांत करके इस रोग की कलिष्टता से बचा जा सकता है। श्री मृतसंजीवनी और श्री महामृत्युंजय मंत्र का जाप व अनुष्ठान कराना चाहिए। श्री मंत्र संजीवनी का जप मृत हो रहे शरीर में भी जान डाल देता है। जिस प्रकार राम रावण युद्ध में मेघनाथ द्वारा चलाए गए शक्ति बाण से लक्ष्मण मृत समान हो गए थे। उस समय हनुमान जी द्वारा लाई गई संजीवनी बूटी का अर्क लक्ष्मण जी को देने पर उन्हें नया जीवन मिला था। इसी तरह महामृत्युंजय जप की महिमा अपरंपार है। यह असाध्य रोग से मुक्ति प्रदान करता है। अकाल मृत्यु से बचने के लिए मे श्री मृत संजीवनी और श्री महामृत्युंजय जप का मंत्र का जप करना चाहिए। यह कैंसर पीड़ित व्यक्ति भी कर सकते हैं या घर के अन्य सदस्य भी कर सकते हैं। यदि घर के सदस्य करने में असमर्थ हो तो श्रेष्ठ ब्राह्मण से भी कराया जा सकता है। अकाल मृत्यु रोधक यंत्र का भी प्रयोग किया जा सकता है। इसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता। भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से दाड़िम की कलम से शुभ मुहूर्त में उक्त मंत्र का निर्माण कर उसकी विधिवत प्राण प्रतिष्ठा करें। फिर ताबे व चांदी के सिद्ध कवच में डालकर मॉम से मुंह को बंद कर दें और लाल धागे के सहारे गले में धारण करें। शिव के पंचाक्षर मंत्र का अनुष्ठान भी दीर्घायु के लिए किया जाता है। इसमें कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों से भगवत कृपा से छुटकारा मिल जाता है। अनुष्ठान के साथ-साथ चिकित्सा भी चालू रखनी चाहिए। चिकित्सा के साथ-साथ मंत्र चिकित्सा करने से चमत्कारी ढंग से फल मिलते हैं।इससे व्यक्ति के संचित पाप नष्ट होते हैं और रोग से निवृत्ति हो जाती है। सभी आयु वर्ग तथा स्त्री पुरुषों के लिए समान रूप से सिद्धि दायक है। घी का दीपक जलाकर रुद्राक्ष की माला पर गायत्री मंत्र का कम से कम एक माला जाप नियमित रूप से करना चाहिए। शाकाहारी भोजन करना चाहिए और ईश्वर में विश्वास करना चाहिए।

वृष लग्न की पत्रिका

लग्नेश शुक्र षष्ठेश भी है जो चतुर्थ भाव में वक्री होकर बैठे हैं। मार्केश मंगल अष्टमेश गुरु और केतु के डिस्पोजिटर होकर द्वादशेश होकर नीच के होकर कर्क राशि में बैठे हैं और शनि से दृष्ट है और कर्क राशि के स्वामी चंद्र लग्न में राहु केतू अक्ष पर हैं। इस जातिका को राहु केतु की दशा में 2013-2014 के मध्य ब्रेस्ट कैंसर डायग्नोज हुआ।

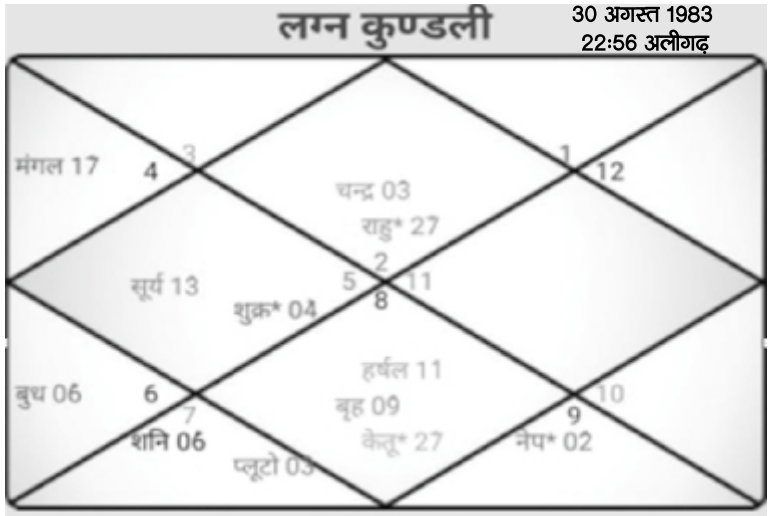

* वक्री, # अस्त

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र (च)
लग्न	वृष	07:47:17	कृतिका(4)

वृश्चिक लग्न की पत्रिका

मंगल अष्टम भाव में अष्टमेश बुध के साथ, केतु के डिस्पोजिटर सूर्य के साथ। मंगल यहाँ षष्ठेश भी है। छठे भाव में अकारक शनि हैं जो कि राहु के डिस्पोजिटर हैं। मिथुन राशि और बुध पर मंगल शनि राहु का प्रभाव। जातिका को गले का कैंसर हुआ लेकिन गुरु की दृष्टि के कारण ठीक भी हो गया।

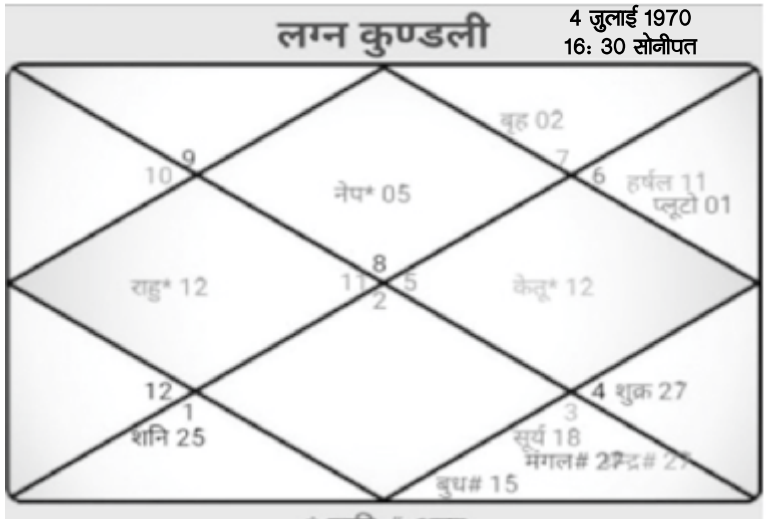

* वक्री, # अस्त

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र (च)
लग्न	वृश्चिक	10:23:31	अनुराधा(3)

किसी कुण्डली को कैसे देखें और निर्णय लें

फलित ज्योतिष के अंतर्गत फलित करने के सि.द्धांतों को निम्नानुसार समझा जा सकता है ।

जिस भाव के फल को देखना है उसके भाव ,भावेश और कारक यह तीन प्रकार की स्थितियों के स्वामी ग्रह कहां पदस्थ है और उनकी उच्च सम, मित्र स्थिति हैअथवा शत्रु ग्रहों की दृष्टि से सम्बधित भाव प्रभावित तो नही होरहा है।इन बातों का फलित करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए।

जन्म कुण्डली की शुद्धता

सही फलित करने के लिए शुद्ध जन्मपत्रिका होना आवश्यक है इसके लिए लग्न स्पष्ट को सबसे पहले देख लेना चाहिए उसके पश्चात ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट, चलित चक्र और सुदर्शन चक्र तथा सम्बन्धित भाव के लिए निर्धारित की गई वर्ग कुंडली भी सर्वप्रथम फलित के पूर्व देखी जानी चाहिए।

इसके साथ ही विशोंतरी दशा ,अंतर्दशा ,प्रत्यंतर दशा तथा सुक्ष्मदशा का अध्ययन करना भी फलित करने के लिए पहले आवश्यक है, ताकि तत्समय प्रचलितदशा के द्वारा विचाराधीन भाव प्रभावित हो रहा है या नहीं। तभी उस भाव का अपना फलित प्राप्त होसकेगा।

ग्रहों के विभिन्न संबंधों का अध्ययन

फलित करने से पहले ग्रहों के विभिन्न संबंधों का अध्ययन करना चाहिए इसमें सर्वप्रथम ग्रहों का राशि परिवर्तन, ग्रहों कादृष्टि संबंध, अन्यतर स्थान से बैठकर ग्रहों से दृष्टि संबंध तथा ग्रहों की युति का संबंध इस प्रकार इन संबंधों के आधार पर फलित करने में स्पष्टताऔरआसानी हो सकती है।

स्थिर कारक के अतिरिक्त चर कारक का भी ध्यान रखा जाना चाहिए जिसमें सर्वाधिक अंशो का ग्रह आत्म कारक फिर उससे घटते क्रम में अमात्य कारक ,मातृ कारक , पुत्र कारक ,जाति कारक और दारा कारक स्थिति के ग्रह होते हैं जिन्हे भी देख लेना चाहिए।

अष्टक वर्ग साधन

फलित करने में अष्टक वर्ग का भी ध्यान रखा जाना चाहिए प्रत्येक भाव को जो बिंदु मिले हैं वह कम से कम 25 होना चाहिए इससे अधिक होना उस भाव को बली बताता है, 25 से कम होना उस भाव के सुख/फल में कमी दर्शाता है।

दशाओं का जन्म तारबल

विशोतरी महादशा के अंतर्गत तारा बल का बहुत अधिक महत्व है जन्म दशा से आरंभ करते हुए जन्म संपत ,विपत, क्षेम ,प्रत्यरि,साधक ,वध ,मित्र और अति मित्र नाम से तारा बल की दशाएं होती हैं इनमें विपत ,प्रत्यरी एवं वध नामक दशाओं की तारा कष्ट दायक होती है चाहे ग्रहों की स्थिति कितनी ही शुभत्व क्यों नही रखती हो।अपना पूरा शुभ फल नही देपाती।

बाधक भाव के ग्रह पति

बाधक भाव/भावेश का अपना अलग महत्व है फलित करते समय बाधक भाव/भावेश का स्वामी की दशा अंतर्दशा प्रत्यंतर दशा या सूक्ष्म दशा तो नहीं है इसका ध्यान रखना भी आवश्यक है यह तो सर्वविदित है कि चर लग्न के लिए एकादश भाव बाधक है उसी प्रकार द्विस्वभावी लग्न के लिए सप्तम भाव बाधक और स्थिर लग्न के लिए नवम

(जीवन वैभव के विद्यार्थी)

भाव भावेश बाधक है जब इनकी दशा अंतर्दशा प्राप्त होती है तब फलित करने में सावधानी की आवश्यकता होती है। बाधक भाव सम्बधित भाव के लिए बाधाए /कष्टप्रद होता है।बारह भावो के फलित केलिए उस भाव को लग्न मानकर बाधक भाव को देखलेना चाहिए।

सम्बधित भाव सिद्धि

संबंधित भाव जिसका फल देखना है उसके लिए फलदीपिका ग्रंथ में भाव सिद्धि नाम का अध्याय दिया हुआ है जिस में उल्लेख है कि

1. संबंधित भाव का स्वामीजिस राशि और अंश में हो उससे त्रिकोण में गोचरवश जब लग्नेश आवें।

2. लग्नेश जिस राशि में या उस भांवेश के अंश में हो अथवा उससे त्रिकोण में जब गोचरवश भावेश परिभ्रमण करें।

3. जब लग्नेश और भावेश गोचरवश एक दूसरे को देखें या एक दूसरे से युक्त होजाए।

4. जब भाव कारक गोचर वश उस स्थान पर गोचरवश आवें जहां जन्म कुण्डली में लग्नेश या चन्द्र राशि का स्वामी परिभ्रमण कर रहा हो।

5. जब लग्नेश गोचर परिभ्रमण के दौरान उस भाव पर अंशात्मक रूपसे उपस्थित होरहा हो जिस भाव के बारेमे हमें विचार करना हों। मेरे अनुभव में यह भी आया है कि ग्रह की अंशात्मक स्थिति लग्न पंचम नवम भाव के स्वामी अथवा चन्द्रमा के जन्मस्थ अंशात्मक स्थिति से गोचर वश परिभ्रमित होने पर उस भाव का फल प्राप्त होता है। बशर्ते कि विशोंतरी दशा के आधार पर उस सम्बधित भाव के ग्रह स्वामी की दशा प्रचलन में हो। विषय बहुत बड़ा है विस्तार के भय से अपना फलित अनुभव के बिन्दु लेखन को यही विराम देना चाहता हुं।

ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श
ग्रहों के अरिष्ठ प्रभाव के निवारण हेतु
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के लिए

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
बी–14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल
फोन : 0755–2418908, मो.: 9425008662
समय प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक
ईमेल : hcp2002@gmail.com
परामर्श के लिए
पूर्व समय लेना आवश्यक :

दशम भाव

दशम भाव कर्म भाव है, राज्य भाव भी कहलाता है, जन्म के बाद चतुर्थ भाव का सप्तम अर्थात पिता का भाव भी माना गया है।

सम्मान प्राप्ति, उद्योग धंधे, रोजगार की दशा अर्थात स्थिति, व्यक्ति की कार्य क्षमता कर्मठता, यश अपयश, जीवन यापन का साधन, इच्छाएं,जीवन की आशा है जो कि फलीभूत हो या नहीं हो इसका ज्ञान भी दशम भाव से प्राप्त किया जाता है। कर्म की गति की कमजोरी अथवा श्रेष्ठता का ज्ञान भी दशम भाव से किया जाता है काल पुरुष की दसवीं राशि शनि ग्रह की है अतएव जबांग में शनि की स्थिति शनि का बल कितना है यह भी विचारणीय होता है तभी व्यक्ति का कार्य करने का आकलन किया जा सकता है।

सभी ग्रहों का प्रथक प्रथक प्रभाव दशम भाव से होता है सूर्य से पिता के प्रभाव का कार्य, जातक की शक्ति और लक्ष्मी संपन्नता, चंद्रमा से मन और बुद्धि के अनुसार कार्य की दक्षता, मंगल से ताकत कार्य करने की हिम्मत, विवेक शीलता, राजसीयता बुध के बारे में कहा गया है कि यह कार्य कराने वाला है स्नायु मंडल का स्वामी है, स्नायु मंडल यदि पुष्ठ है तो व्यक्ति कार्य करने की क्षमता अधिक रखेगा, कार्यशील होता है कामकाज में व्यस्त रहता है।बुध के कमजोर होने पर व्यक्ति में संकुचित प्रवृत्ति होती है अधिक क्रियाशील नहीं रहती। इसलिए दशम का कारक बुध भी माना है प्रज्ञावान, धन, शरीर की पुष्टि पुत्र और ज्ञान पूर्ण कार्य का विचार बृहस्पति से किया जाता है। पली, सवारी, आभूषण, स्त्री पुरुष का प्रेम संबंध और सुख का कारक शुक्र है। आयु, जीवन, मृत्यु का कारण, विपत्ति और नौकरी का विचार शनि से किया जाता है। राहु से दादा जी का और केतु से नाना जी का विचार किया जाता है।

शरीर में स्थित अंगों के लिए दशम भाव घुटने, जोड़ों का दर्द, गठिया, एक्जिमा, चमड़ी के रोग, शरीर का बाहय त्वचा, बाल, नाखून और शरीर की हड्डियों का विचार किया जाता है।

इन्हीं उपरोक्त ग्रहों और ग्रहों के विचारों के अनुसार दशम भाव के लिए हमारे ऋषि महात्माओं तथा आदिकालीन वरिष्ठ ज्योतिषियों में दशम भाव के कारक के रूप में सूर्य, गुरु,बुध और शनि को माना है इन ग्रहों की प्रबलता जिन भावों में होती है दशम भाव के लिए निर्धारित कार्य उसी के अनुसार व्यक्ति करता है।

केवल हम दशम भाव के अनुसार ही कार्य का अथवा दशम भाव के लिए निर्धारित कार्य का निर्धारण नहीं कर सकते क्योंकि जब तक लगने की स्थिति, लग्नेश का प्रबल होना, लग्न में लग्नेश के नक्षत्र के ज्ञान के बाद ही दर्शन का लाभ संभव है लग्न पूरे भवन का मुख्य द्वार तो दशम भाव उस में स्थित एक कमरा है जो कि मुख्य द्वार से होकर ही अंदर प्रवेश का संकेत देता है। जलोग का कोई भी भाव का पूर्ण फल लग्न और लग्नेश के बली होने पर ही संभव है। इसी कारण लग्न का कारक केवल ग्रहों के राजा सूर्य को ही रखा गया है। बारह भाव के कारक

1. सूर्य 2. गुरु 3. मंगल 4. चंद्र बुध 5. गुरु 6. मंगल शनि 7. शुक्र 8. शनि 9 गुरु और सूर्य 10. सूर्य बुध गुरु शनि 11. बृहस्पति 12. शनि निर्धारित किए हैं । को मानते हैं जबकि प्रत्येक व्यक्ति के जननांग में मुख्य दायित्व मूलत्रिकोण जिससे कि धर्म त्रिकोण कहा जाता है जो कि अग्नि तत्व की भाव राशियां होती है 1,5,9.

सबसे पहले लग्न को ही प्राथमिकता दी गई है कहा गया है कि जीवन का पहला **सुख निरोगी काया है** लग्न प्रबंध है तो व्यक्ति कुछ करने की क्षमता और क्षमता रखेगा। उसके बाद पंचम था उसकी बुद्धि, बल, आत्म बल,धनात्मक बुद्धि से सोचेगा तो उसे कार्य करने की सूची आएगी उसके बाद नवम भाव इसका कारक गुरु है अर्थात सूसंस्कारित आचरण का धारण करना, धर्म के लाता है और यही भाग्य का भाव है, सुसंस्कारित आचरण से युक्त धर्म ज्ञान व्यक्ति का द्वितीय भाव कर्म है, स्वस्थ शरीर स्वस्थ बुद्धि और सदाचरण वालों का कर्म भी बलवान होता है संशय नहीं

दशम भाव के साधन के लिए वर्ग कुंडली में दशमांश कुंडली का महत्व बताया गया है।जो कि कर्म फल का आचरण करता है हमारे जीवन में हमारे पूर्व संचित कर्मों के आधार पर ही जन्म नक्षत्र और जन्म कालिक ग्रहों के अनुसार नियत समय पर जन्म होता है इसी के आधार पर दशमांश कुंडली का निर्धारण किया जाता है। शुभ ग्रहों के प्रभाव से शुभ कारक पाप ग्रह और क्रूर ग्रहों के आधार पर पाप और दूषित कर्म करने की प्रवृत्ति बन जाती है जिसे हमारे संस्कार और सुबुद्धि ही सुधार कर सकती है। कहां गया है कि-

सकल पदारथ है जग माही
कर्म हीन नर पावत नाही।।

तात्पर्य है कि कर्म नहीं करने वाले को तो कोई भी बुद्धि प्राप्त हो ही नहीं सकती।

संकलन – आशुतोष पाण्डेय

पपीते के औषधीय गुण

संकलन–(आरती एवं अमृता पाण्डेय)

पपीता एक ऐसा मधुर फल है जो सस्ता एवं सर्वत्र सुलभ है। यह फल प्राय- बारहों मास पाया जाता है। किन्तु फरवरी से मार्च तथा मई से अक्तूबर के बीच का समय पपीते की ऋतु मानी जाती है। कच्चे पपीते में विटामिन 'ए' तथा पके पपीते में विटामिन 'सी' की मात्रा भरपूर पायी जाती है।

आयुर्वेद में पपीता (पपाया) को अनेक असाध्य रोगों को दूर करने वाला बताया गया है। संग्रहणी, अजीर्ण, मन्दाग्नि, पाण्डुरोग (पीलिया), प्लीहा वृध्दि, बन्ध्यत्व को दूर करने वाला, हृदय के लिए उपयोगी, रक्त के जमाव में उपयोगी होने के कारण पपीते का महत्व हमारे जीवन के लिए बहुत अधिक हो जाता है।

पपीते के सेवन से चेहरे पर झुर्रियां पड़ना, बालों का झड़ना, कब्ज, पेट के कीड़े, वीर्यक्षय, बवासीर, चर्मरोग, उच्च रक्तचाप, अनियमित मासिक धर्म आदि अनेक बीमारियां दूर हो जाती है।

पपीते में कैल्शियम, फास्फोरस, लौह तत्व, विटामिन- ए, बी, सी, डी प्रोटीन, कार्बोज, खनिज आदि अनेक तत्व एक साथ हो जाते हैं।

पपीते का बीमारी के अनुसार प्रयोग निम्नानुसार किया जा सकता है।

1) पपीते में 'कारपेन या कार्पेइन' नामक एक क्षारीय तत्व होता है जो रक्त चाप को नियंत्रित करता है।

इसी कारण उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) के रोगी को एक पपीता (कच्चा) नियमित रूप से खाते रहना चाहिए।

2) बवासीर एक अत्यंत ही कष्टदायक रोग है चाहे वह खूनी बवासीर हो या बादी (सूखा) बवासीर। बवासीर के रोगियों को प्रतिदिन एक पका पपीता खाते रहना चाहिए। बवासीर के मस्सों पर कच्चे पपीते के दूध को लगाते रहने से काफी फायदा होता है।

3) पपीता यकृत तथा लिवर को पुष्ट करके उसे बल प्रदान करता है।

पीलिया रोग में लीव्हर यकृत अत्यन्त कमजोर हो जाता है, पपीते का सेवन बहुत लाभदायक होता है। पीलिया के रोगी को प्रतिदिन एक पका पपीता अवश्य खाना चाहिए। इससे तिल्ली को भी लाभ पहुंचाया है तथा पाचन शक्ति भी सुधरती है।

4) महिलाओं में अनियमित मासिक धर्म से पीड़ित महिलाओं को ढाई सौ ग्राम पका पपीता प्रतिदिन कम से कम एक माह तक अवश्य ही सेवन करना चाहिए। इससे मासिक धर्म से संबंधित सभी परेशानियां दूर हो जाती है।

5) जिन प्रसूता को दूध कम बनता हो, उन्हें प्रतिदिन कच्चे पपीते का सेवन करना चाहिए। सब्जी के रूप में भी इसका सेवन किया जा सकता है।

6) सौंदर्य वृध्दि के लिए भी पपीते का इस्तेमाल किया जाता है। पपीते को चेहरे पर रगड़ने से चेहरे पर व्याप्त कील मुंहासे, कालिमा व मैल दूर हो जाते हैं तथा एक नया निखार आ जाता है। इसके लगाने से त्वचा कोमल व लावण्ययुक्त हो जाती है। इसके लिए हमेशा पके पपीते का ही प्रयोग करना चाहिए।

7) कब्ज सौ रोगों की जड़ है। अधिकांश लोगों को कब्ज होने की शिकायत होती है। ऐसे लोगों को चाहिए कि वे रात्रि भोजन के बाद पपीते का सेवन नियमित रूप से करते रहें। इससे सुबह दस्त साफ होता है तथा कब्ज दूर हो जाता है।

8) समय से पूर्व चेहरे पर झुर्रियां आना बुढ़ापे की निशानी है। अच्छे पके हुए पपीते के गूदे को उबटन की तरह चेहरे पर लगायें। आधा घंटा लगा रहने दें। जब वह सूख जाये तो गुनगुने पानी से चेहरा धो लें तथा मूंगफली के तेल से हल्के हाथ से चेहरे पर मालिश करें। ऐसा कम से कम एक माह तक नियमित करें।

9) नए जूते-चप्पल पहनने पर उसकी रगड़ लगने से पैरों में छाले हो जाते हैं। यदि इन पर कच्चे पपीते का रस लगाया जाए तो वे शीघ्र ठीक हो जाते हैं।

10) पपीता का नियमित प्रयोग पुरूषों के लिए भी लाभकारी है !

11) हृदय रोगियों के लिए भी पपीता काफी लाभदायक होता है।

अगर वे पपीते के पत्तों का काढ़ा बनाकर नियमित रूप से एक कप की मात्रा में रोज पीते हैं तो अतिशय लाभ होता है।*

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2020

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अक्टूबर 2020

मास का आरंभ मानसिक चिंताओं की कमी से होगा, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाएं, उग्रता को कम करें, सेहत कमजोर रह सकती है, पारिवारिक चिंताएं तथा तनाव रह सकता है। संतान की चिंताओं को कम करने का प्रयास करें। यदि विद्याध्ययनरत हैं तो उसे योग्य वातावरण उपलब्ध कराएं। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय पर कार्य/अध्ययन नहीं होने से चिंताएं रहेगी। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय रहेगा। व्यापारी वर्ग को आर्थिक चिंताएं तथा भ्रमण अधिकता रहेगी। मास के 7, 8, 15, 17, 19 एवं 23 अशुभ हैं।

नवंबर 2020

मास के प्रारंभ में आर्थिक रुकावटें दूर होंगी। अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को सफलता से निर्वहन कर सकेंगे। दापत्य सुख उत्तम रहेगा। किसी राजकीय कार्य के लिए प्रयास में सफलता मिलेगी। व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च की संभावना मास के उत्तरार्द्ध में रहेगी। व्यापारी वर्ग को अपने कार्य से लाभ। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को समय पर सहयोग मिलेगा। मास की 2, 4, 6, 8, 10, 13, एवं 21 तारीखों में सावधानी बरतें।

दिसंबर 2020

मास के पूर्वार्द्ध में स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतें। अनावश्यक चिंताए नहीं पालें। अपने पारिवारिक सदस्यों से भावनाओं में आकर संबंध न बिगाड़ें, इसमें सावधानी बरती जाए। अपने नियमित कार्य तथा आय वृद्धि के अवसर बनेंगे। व्यापारी वर्ग को साझेदारी में सावधानी रखनी चाहिए। कृषक वर्ग समय का ध्यान देकर कार्य करें। नौकरी वर्ग वालों को अधिकारियों की अप्रसन्नता विद्यार्थी वर्ग को कठिन यत्न करने पर सफलता। दिनाँक 2, 4, 8, 13, 17, 26 अशुभ हैं।

वृषभ
ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अक्टूबर 2020

मास के पूर्वार्द्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। मान-समान में वृद्धि होगी किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। चिंताएँ कम होने लगेंगी। स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को आर्थिक रुकावटें रहेंगी। कृषक वर्ग को विगत माह से कुछ राहत मिलेगी। नौकरी वर्ग को चिताएं अधिक, विद्यार्थी वर्ग को सहयोग मिलेगा। दिनाँक 1, 4, 7, 10, 13, 17, 23 कमजोर हैं यात्राएँ टालें।

नवंबर 2020

यह मास आपके लिए संतुलित दिमाग से काम करते हुए सफलता प्राप्त करने का है। मास का प्रारंभ कुछ चिंताएं देता है लेकिन उत्तरार्द्ध में लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक चितांएं मास में रहेंगी। उनका निराकरण करने में अधिक य करना पड़ेगा। ऋणग्रस्तता को अधिक नहीं बढ़ने दें। विद्यार्थी वर्ग को माह सामान्य, कृषकों के लिए अपने कार्य के अनुपात में सफलतादायक रहेगा। व्यापारी वर्ग को समुचित लाभ के योग, कर्मचारी वर्ग को अधिक संतुष्टिप्रद मास में 4, 5, 9, 12, 13, 17 एवं 18 दिवस शुभ हैं।

दिसंबर 2020

मास का पूर्वार्द्ध पारिवारिक चिंतादायक है। अपनी कही गई बातों का गलत प्रभाव होगा। शांत रहना अधिक श्रेयस्कर है। राज्य अथवा कर्मपक्ष से संतोष रहेगा। पुराने व्यवधान दूर होंगे। उत्तरार्द्ध में आर्थिक लाभ होगा। साझेदारी के कार्य में संतोष मिलेगा किसी प्रिय व्यक्ति से भेंट होगी। व्यापारी वर्ग को आर्थिक कठिनाईयाँ अधिक रहेंगी। नौकरी वर्ग को अधिकारियों की प्रसन्नता रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को समय पर लाभ एवं सुविधाएं मिलेगी। मास की 3, 6, 9, 12, 18, 21 तारीखों शुभ हैं।

मिथुन
का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

अक्टूबर 2020

अधिकारियों की अप्रसन्नता। विवाद से दूर रहे। आर्थिक रुकावटें। कोर्ट कचहरी के विवाद में व्यस्तता। उत्तरार्द्ध में चिंताओं में कमी। स्वास्थ्य में कमजोरी। किसी अप्रिय घटना से मन को दुःख। व्यापारी वर्ग को आलस्य के फलस्वरूप कार्यों में लाभ की गुंजाईश कम रहेगी। कृषक वर्ग को भूमि संबंधित विवाद से सावधानी रखना चाहिए। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक, जोखिम भरे कार्य में सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग को परिस्थितियां अनुकूल। दिनाँक 1, 5, 7, 9, 11, 17 शुभ रहेंगी।

नवंबर 2020

यह मास विगत समय से अनुकूल रहेगा। कठिनाईयों के कार्य आसानी से हल होंगे। पारिवारिक सुख मिलेगा। संतान को अपने कार्य में सफलता से परिवार में सुख-शांति महसूस करेंगे। साझेदारों पर अनावश्यक क्रोध से बचें। अन्यथा विवाद संभव है। मास के उत्तरार्द्ध में भ्रमण यथासंभव टालें। कृषक वर्ग को समय रहते अपने कार्य निपटाने पर लाभ संभव। नौकरी वर्ग को स्थानांतरण। विद्यार्थी वर्ग को सफलता रहेगी। मास की 2,7,11,17,19,24 तारीख शुभ है।

दिसंबर 2020

अधिक कार्य के कारण शारीरिक कमजोरी महसूस करेंगे इसी कारण माह के उत्तरार्द्ध में कार्य में बाधाएं तथा पेंडिंग रह सकता है। कार्यों की सफलता में रूकावट आना संभव है। नियमित कार्यों में सतर्कता रखना आवश्यक है। व्यापारी वर्ग को खर्च पर नियंत्रण, नौकरी वर्ग को अधिक कठिनाई से सफलता, कृषक वर्ग को उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को स्थान परिवर्तन अथवा शिक्षा में बदलाव संभव है। (मास की तारीख 3, 6, 12, 18, 24 शुभ है) रहेगा।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2020

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अक्टूबर 2020

यह माह आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। अपने लाभ का अनुपात व्यय से कम होगा इसलिए संतुलित व्यय करने का प्रयास करना चाहिए। पारिवारिक कार्यों में अधिक व्यस्तता रहेगी। कोर्ट कचहरी के विवाद रहेंगे। दूसरों के विवाद से बचना चाहिए। व्यापारी वर्ग को आय में कमी, नौकरी वर्ग वालों को व्यस्तता अधिक। कृषक वर्ग अपने कार्यों में लाभ, विद्यार्थियों को अनुकूल समय है। (तारीख 5,7,13,17,23,30 शुभ है)

नवंबर 2020

अपने कार्य के विस्तार की ललक इस माह में पूरी होगी। इस समय होने वाले निर्णय अपने भविष्य के लिए अनुकूल रहेंगे। अपने कार्य के लिए अधिक समय देवे ताकि सफलता मिल सके। पत्नी एवं संतान की ओर से स्वास्थ्य की चिंता रह सकती है। व्यापारी वर्ग को समुचित लाभ और अच्छे संपर्क की वृद्धि। नौकरी वर्ग वालों को संतोष, कृषक वर्ग को उत्तमलाभ, विद्यार्थी वर्ग को आर्थिक कष्ट। (तारीख 2, 4, 8 12, 16, 20, 24, 28 उत्तम रहेगी)

दिसंबर 2020

विगत माह की कठिनाईयों से कार्य इस माह के अंत तक सफलता दायक रहेंगे। साझेदारों अथवा विश्वसनीय मित्र के भरोसे छोड़े गए कार्य की पुनः पुनरावृत्ति करनी पड़ेगी। कोर्ट, कचहरी के विवादों में असफलता नहीं हो इसका ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को आर्थिक हानि प्रद। नौकरी वर्ग वालों को सजगता से कार्य करना चाहिए। कृषक वर्ग को ऋणग्रस्तता में कमी करना हितकारक होगा। विद्यार्थी वर्ग का व्यर्थ भ्रमण संभव। मास की 1,3,6,9,11,19,27,29 शुभ है।

सिंह
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, रे

अक्टूबर 2020

मास के प्रथम दो सप्ताह अधिक दौड़ धूप के रहेंगे। लेकिन पिछले माह की अपेक्षाकृत उत्तरोत्तर सुधार के योग है। व्यर्थ के भ्रमण संभव हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। विरोधी वर्ग के षडयंत्र के शिकार न हो इसका ध्यान रखें। पारिवारिक चिंताएं अधिक रहेंगी। अपनी सेहत का ध्यान रखें। आहार समय पर लें। भ्रमण और खर्च बढ़ेगा। व्यापारी वर्ग को अधिक यत्न से लाभ। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय। विद्यार्थी वर्ग को खर्च की अधिकता रहेगी। (मास की 2,4,7,9,13,17 शुभ हैं।)

नवंबर 2020

मास के पूर्वार्द्ध में अपने प्रयास लाभदायक रहेंगे। कुछ रूके हुए कार्यपूर्ण होंगे। धनलाभ भी यथासंभव होगा। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। कुछ नजदीकी मित्रों से वैचारिक विवाद संभव है। व्यर्थ भ्रमण नहीं हो इसका ध्यान रखें। राजपक्ष के कार्यों को यथासमय निपटाएं। विद्यार्थी वर्ग को समय के दुरुपयोग से बचना चाहिए। कृषक वर्ग को समय पर सफलता तथा धनलाभ मिलेगा। व्यापारी वर्ग समस्याग्रस्त रहेगा, कर्मचारी वर्ग के लिए अपने कार्य से सफलता मिलेगी। मास की 3, 6, 9, 10, 13, 19, 22 एवं 26 शुभ हैं।

दिसंबर 2020

स्वास्थ्य का ध्यान रखें, परिजनों से व्यर्थ विवाद से बचें। व्यर्थ भ्रमण संभव है। अज्ञात शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। खाद्य पदार्थ के सेवन में ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को खर्च की अधिकता (आपके अनुपात में), नौकरी वर्ग के लिए अधिकारियों एवं सहयोगियों की प्रसन्नता। दिनाँक 2, 4, 6, 8, 10, 18, 20, 22 एवं 26 शुभ हैं।

कन्या
टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अक्टूबर 2020

मास का पूर्वार्द्ध अनुकूल परिस्थिति वाला रहेगा। सफलता, सामजिक यश और पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान देना होगा। कार्य बोझ बढ़ा रहेगा लेकिन आपकी मनोशक्ति इसे समय पर पूरा करेगी। मास के उत्तरार्द्ध में व्यर्थ भ्रमण होगा। व्यापारी वर्ग को उत्तम लाभप्रद मास। नौकरी वर्ग वालों कार्य के प्रति सजगता रखना चाहिए। कृषक वर्ग को उत्तम लाभ, विद्यार्थी वर्ग को आर्थिक कठिनाईयां रहेंगी। मास की 3,6,9,12,18,21,27 तारीख शुभ है।

नवंबर 2020

मास में अपने कार्यों की सफलता के लिए नए अवसर मिलेंगे। अपने मन और बुद्धि से कार्यों में सफलता के शुभ अवसर मिलेंगे। समाज में मान-समान प्रतिष्ठा वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग को व्यापार में इच्छित लाभ तथा अपने किए गए कार्यों से यश मिलेगा। कृषक वर्ग को सहयोग और धन लाभप्रद रहेगा। नौकरी वर्ग को अधिकारियों की ओर से संतोष मिलेगा। विद्यार्थीवर्ग को उत्तम लाभ के अवसर मिलेंगे। मास की दि. 2, 3, 4, 7, 9, 12, 21, 24 शुभ रहेंगी।

दिसंबर 2020

यह माह अपने कार्यों में सफलतादायक रहेगा, इसलिये ध्यानपूर्वक कार्य करें। बिना कारण भ्रमण होगा। राजकीय कार्यों में सतर्कता बरतें। अपने नजदीकी मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। किसी समानजनक व्यक्ति का अपने कार्यों में सहयोग मिलेगा। आर्थिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में खर्च होगा। व्यापारी वर्ग के लिए उत्तम समय है। नौकरी वर्ग वालों का कार्य की सराहना मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अधिक प्रयास की जरूरत है। (1,4,9,11,17,24,26 शुभ हैं)

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2020

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

तुला
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अक्टूबर 2020

मास का पूर्वार्ध आपके लिए रुके हुए काम पूरे करेगा करेगा साथ ही व्यापार-व्यवसाय में सावधानी बरतना चाहिए। पारिवारिक चिंताएं रहेगी पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें मास के उत्तरार्ध में आपको अपने कार्यों को उत्तम तरीके से करने के अवसर प्राप्त होंगे। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा व्यापारी वर्ग को उचित लाभ कृषक वर्ग को चिंताएं तथा विद्यार्थी वर्ग को सफलताएं प्राप्त होगी नौकरी करने वालों को सावधानी से कार्य करने की सलाह है। मास की 2,3 ,6, 8,10 ,12 ,13 ,21,22 एवं 30 तारीख के शुभ है।

नवम्बर 2020

मास का प्रारंभ आपके लिए अपने मन और मस्तिष्क को संतुलित रखकर कार्य करने के लिए है कुछ निर्णय से लाभ में कमी रह सकती है संतान की चिंता अधिक रहेगी। मांस के अंतिम 2 सप्ताह विशेष सावधानी के हैं व्यापारी वर्ग अपने कार्य में सावधानी रखें कृषक वर्ग को समुचित लाभ प्राप्त होगा नौकरी करने वालों को अधिक दौड़ धूप रहेगी विद्यार्थी वर्ग को अधिक सजगता से अध्ययन करने से लाभ मिलेगा मास की एक 4, 5, 9, 12, 14, 16, 20, 24 एवं 29 तारीख शुभ रहेगी।

दिसम्बर 2020

इस मास में प्रारंभिक 2 सप्ताह में परेशानियों और आर्थिक कठिनाइयों का समय रहेगा। अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों में परिवर्तन ना करें हो सकता है। आगामी समय में वेद पूर्ण हो सके मास की तृतीय एवं चतुर्थ सप्ताह मैं अपने कार्यों में सफलता प्राप्त होगी विशिष्ट जनों का समागमन होगा। राजकीय कार्यों में सावधानी बरतें व्यापारी वर्ग को उत्तम लाभ के योग हैं कृषक वर्ग अपने निर्णय को सावधानी से क्रियान्वित करें नौकरी करने वालों को अपने कार्य का समुचित लाभ मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग समय का पूर्ण सदुपयोग करें मास की 3 ,5, 7 ,9 11,13 ,19 ,23 ,27 एवं 30 अनुकूल हैं।

वृश्चिक
तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अक्टूबर 2020

मास का प्रारंभ अधिक व्यय कारक है। व्यर्थ भ्रमण भी हो सकता स्वास्थ्य की दृष्टि से भी सावधानी रखना आवश्यक है। पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी राजकार्य समय पर होंगे मास के उत्तरार्ध में किसी मांगलिक कार्य में व्यस्तता रहेगी तथा कार्य दायित्व भी बढ़ेगा पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा व्यापारी वर्ग के लिए मास अनुकूल है। कृषक वर्ग के लिए अधिक व्यस्तता तथा खर्च कारक है। नौकरी करने वालों को भ्रमण अधिक होगा विद्यार्थी वर्ग के लिए समय संतुष्टि प्रद नहीं। मास की 2, 6 ,9 ,12 ,18 ,21 ,24 तथा 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2020

मास के प्रारंभ में शत्रु पक्ष पराजित होगा अपने कार्यों में गति मिलेगी किंतु पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए पारिवारिक चिंताएं रहेगी। मास के उत्तरार्ध में भ्रमण में सावधानी रखना चाहिए व्यर्थ खर्च पर नियंत्रण रखें व्यापारी वर्ग के लिए समय कमजोर कृषक वर्ग के लिए अनुकूलता नौकरी करने वालों के लिए सामान्य तथा विद्यार्थियों के लिए समय का सदुपयोग करने करना चाहिए माह की 5,7 ,13 ,18 ,21 एवं 29 शुभ फलदायक है।

दिसम्बर 2020

यह माह आपको लाभप्रद सिद्ध होगा। पारिवारिक सुख संतोष तथा अपने कार्यों में धन लाभ प्राप्त होगा राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी मास के उत्तरार्ध में अपने किसी निकटतम व्यक्ति से विवाद ना हो इसका ध्यान रखें व्यर्थ भ्रमण से भी बचे व्यापारी वर्ग को यह मास शुभ है कृषक वर्ग को मास में अधिक खर्च नौकरी वर्ग को अपने कार्यों से संतुष्टि मिलेगी विद्यार्थी वर्ग को अपने अध्ययन में संतुष्टि मिलेगी। इस माह की 3, 6, 9, 12, 16, 21, 24 तथा 29 तारीख शुभ है।

धनु
ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भ

अक्टूबर 2020

मास का पूर्वार्द्ध आपको रचनात्मक कार्यक्रमों के करने में सहयोगी रहेगा अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहेगी पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा। मास के अंतिम 2 सप्ताह में खर्च की अधिकता रहेगी। किसी पुराने कार्य को करने में अधिक यत्न करना पड़ेगा। व्यापारी वर्ग को खर्च कारक समय। कृषक वर्ग को लाभप्रद। नौकरी करने वालों को अपने कार्यों से संतुष्टि रहेगी। विद्यार्थी वर्ग समय के सदुपयोग करने का ध्यान रखें इस माह की 4 ,14 ,16 ,19, 21 ,27 एवं 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2020

मास का पूर्वार्ध आपको अधिक व्यस्तता का है कार्य के पूर्ण होने तक सावधानी एवं सतर्कता रखना आवश्यक है। लाभ के सुअवसर प्राप्त होंगे मास का उत्तरार्ध आपको अपने पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता देगा, साथ ही धन लाभ की समुचित व्यवस्था भी करेगा व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में व्यस्तता अधिक, नौकरी वर्ग को समय संतोषप्रद, विद्यार्थी वर्ग को अधिक य करने से लाभ. मिलेगा मास की 3 ,7, 9 ,11, 16 ,19, 23 एवं 26 तारीख शुभ है।

दिसम्बर 2020

मासका पूर्वार्द्ध रुके हुए कार्य पूर्ण करने में सहयोगी रहेगा। भ्रमण की अधिकता रहेगी तथा राजकीय कार्य समय पर हल होंगें। मास के उत्तरार्ध में आपको अपने नजदीकी मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। सुखद यात्रा भी संभव है अपने कार्यों में विशेष ध्यान देने से सफलता मिलेगी व्यापारी वर्ग को सामान्य समय ।कृषक वर्ग को आर्थिक कठिनाइयां। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक। विद्यार्थी वर्ग का समय का ध्यान रखना चाहिए। मास की 3, 6 9 ,12, 18, 21 एवं 27 तारीख शुभ है।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2020

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मकर
भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी

अक्टूबर 2020

मास के प्रथम सप्ताह मैं कई दिनों की इच्छाओं की पूर्ति होगी स्थाई संपत्ति के योग बन सकते हैं। पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें बच्चों की इच्छित प्रगति हो सकेगी मास के अंतिम 2 सप्ताह उच्च वर्ग के लोगों से संपर्क होगा तथा कार्य के नए आयाम प्राप्त होंगे धन लाभ की संभावना व्यापारी वर्ग के लिए यह शुभ समय है। कृषक वर्ग के लिए अपने प्रयास में सफलता प्राप्त होगी। नौकरी वर्ग वालों के लिए प्रयास में सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग सचेत रहकर पढ़ाई करें मास के 3, 5, 9, 11, 14, 23, 26 एवं 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2020

मास का आरंभ व्यस्तता पूर्ण रहेगा। द्रव्य लाभ तथा भावी योजनाएं क्रियान्वित करने के लिए प्रयास में गति मिलेगी। दांपत्य जीवन में तनाव रहेगा। संतान की समुचित प्रगति संभव ।मास के अंतिम 2 सप्ताह चुनौतियों पूर्ण रहेंगे इसमें अपने व्यावसायिक कम्पीटीटर तथा दूरके सम्बन्ध रखने वालों की ओर से कार्य में अप्रत्यक्ष रूप से बाधाएं आ सकती है। अपने संबंध सु मधुर रखने का फिरभी प्रयास करें। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को वांछित सफलता हैं। नौकरी वर्ग को अधिक सजगता से कार्य करना चाहिए। विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्य की पुनरावृत्ति करना जरूर आवश्यक है मास की 3 7 11 13 19 26 शुभ है।

दिसम्बर 2020

मास के प्रारंभ पक्ष में आर्थिक रुकावटें दूर होगी। समय पर लाभ होगा अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को सफलता से निर्वहन कर सकेंगे दांपत्य सुख उत्तम रहेगा। व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च के योग बनेंगे। मास अंतिम 2 सप्ताह में भ्रमणकी अधिकता रहेगी,तथा अपने किए जाने वाले कार्य का तनाव भी अधिक रहेगा धन लाभ में सामान्य रूप से कमी रहेगी व्यापारी वर्ग को अधिक खर्च से सावधान रहना चाहिए कृषक वर्ग अपनी कृषि कार्य में सावधानी बरतें व्यर्थ खर्च संभव नौकरी करने वालों को समय सामान्य रहेगा विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्यों में रुकावटें आना संभव है मास की 2, . 8, 12, 16, 20 ,24 एवं 30 तारीख अनुकूल है।

कुंभ
गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अक्टूबर 2020

इस माह के आरंभ में आपकी राशि वालों को धार्मिक तथा मांगलिक खर्च की अधिकता रहेगी। किस उपलक्ष में भ्रमण करने के योग भी बन सकते हैं राजकीय कार्य में सफलता प्राप्त होगी मास के अंतिम 2 सप्ताह में स्थाई संपत्ति के क्रय करने के योग बन सकते है। संतान पक्ष से संतुष्टि तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों में व्यस्त रहने की संभावना है। व्यापारी वर्ग को समय शुभ है कृषक वर्ग को अधिक य करना पड़ेगा। नौकरी करने वालों को समय शुभ है। विद्यार्थी वर्ग को अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए मास की 3 ,7, 11, 17, 21एवं 23 तारीख शुभ है

नवम्बर 2020

मास का पूर्वार्ध खर्चीला है अपनी बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यय हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य के कारण भी व्यय संभव है। माह के उत्तरार्द्ध में अपने पुराने रुके हुए कार्य पूर्ण होने के योग हैं पुराने मित्रों से वैचारिक मतभेद ना हो इसका ध्यान रखे। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल, कृषक वर्ग को समयअधिक खर्चीला, नौकरी वर्ग को अपने कार्यों से संतोष, विद्यार्थी वर्ग कोशिक्षा मे व्यवधान रह सकता हैं। मास की 3 6 नो 12 18 24 एवं 30 तारीख शुभ है।

दिसम्बर 2020

मास का पूर्वार्ध आपके लिए शुभ और सफलता दायक है। अपने पुराने मित्रों से संपर्क होगा। कोई रुका हुआ कार्य पूर्ण होने की उम्मीद है। मास का उत्तरार्ध अपने नियमित कार्यों में सफलता दायक है राजकार्यो में विजय, यश और सफलता मिलेगी। संतान पक्ष से संतुष्टि रहेगी व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल ।कृषक वर्ग को अपने नियमित कार्यों में लाभ। नौकरी वालों को अधिक व्यस्तता पूर्ण तथा विद्यार्थी वर्ग को अपने अध्ययन में संतोष मिलेगा इस माह की 3, 6, 9 ,12 ,18 ,24 एवं 30 तारीख शुभ रहेगी।

मीन
दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची

अक्टूबर 2020

मास का पूर्वार्ध संघर्षपूर्ण है आर्थिक रुकावटें रहेगी अपने कार्य को समय पर पूरा करने में अड़चनें आएंगी। इस समय आपका आत्म बल ही महत्वपूर्ण रहेगा जिससे कि सफलता के लक्ष्य तक पहुंच पाएंगे पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें नाश के अंतिम 2 सप्ताह में समय में सुधार आएगा तथा अनिश्चितता का दौर समाप्त होगा। संतान को भी इच्छित सफलता प्राप्त होगी राजकीय कार्यों में यश प्राप्त होगा व्यापारी वर्ग को अंतिम 2 सप्ताह लाभप्रद है कृषक वर्ग की व्यस्तता और व्यय की अधिकता रहेगी। नौकरी करने वालों को समय पर लाभ मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग को समय अनुकूल है मास की 2,4 ,6 ,10, 12 ,18 ,22, 27 एवं 30 अनुकूल तारीख हैं।

नवम्बर 2020

मांस का आरंभ अपने कार्यों में सफलता के लिए होगा साथ ही नए कार्यों के अवसर सामने आएंगे। समाज में मान सम्मान की वृद्धि होगी तथा संतान एवं पत्नी पक्ष की चिंताएं कब होगी मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। मांस का तीसरा एवं चौथा सप्ताह अपने नए कार्यों को पूर्ण रूप ता देने के लिए उत्तम है विशिष्ट व्यक्ति यों के सहयोग प्राप्त होने केअवसर मिलेंगे। मास के उत्तरार्ध में व्यर्थ की शत्रुता तथा लांछन लग सकते हैं लेकिन आप के उद्देश्य को पूर्ण करने में सावधानी रखें ग्रह योग आपको सफलता प्रदाय करने में सहयोगी है। व्यापारी वर्ग को अंतिम 2 सप्ताह अनुकूल नहीं है। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में सफलता और व्यस्त था दोनों रहेगी नौकरी करने वालों को सावधानी पूर्ण कार्य करना चाहिए विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग हिला देगा ही लाभ देगा ।मासकी 1,4 ,7 ,10 ,14,16 ,20, 22 27 एवं 30तारीखें शुभ फलदायक रहेंगी।

दिसंबर 2020

मास का पूर्वार्ध सामान्य रहेगा कार्यों में अवरोध अवश्य दूर होंगे लेकिन विभिन्न प्रकार की व्यस्तता रहेगी जिससे कि अपने कार्य में रुकावट रहसकती है। खर्च की अधिकता रहेगी और सामाजिक कार्यों में अधिक दौड़-धूप करना पड़ेगी मांस के अंतिम 2 सप्ताह शुभ फलदायक है ।किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग प्राप्त होकर धन एवं यश का लाभ प्राप्त होगा। पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें व्यापारी वर्ग को लाभ में कमी कर्षिक वर्ग को समय पर लाभ प्राप्त होगा तथा व्यस्तताएं बढ़ेगी। नौकरी करने वालों को राजकीय कार्यों में सफलता प्राप्त होगी विद्यार्थी वर्ग को अपने शैक्षणिक कार्य में किसी बात को लेकर व्यवधान संभव है माह की 4, 6 ,8 ,12, 16 20, 24 एवं 30 शुभ फलदायक है।

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसंबर 2020

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

अक्टूबर 2020 के व्रत पर्व

1 अक्टूबर, गुरुवार - स्नानदान व्रतादि की पुरूषोत्तमी पूर्णिमा

2 अक्टूबर, शुक्रवार - अधिक आश्विन कृष्ण पक्ष, महात्मा गांधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती

4 अक्टूबर, रविवार - सर्वार्थसिद्धियोग

5 अक्टूबर, सोमवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत

6 अक्टूबर, मंगलवार - अंगारकी चतुर्थी व्रत

10 अक्टूबर, शनिवार - दुर्गाष्टमी व्रत

13 अक्टूबर, मंगलवार - पुरूषोत्तमी एकादशी (स्मार्त एवं वैष्णव)

14 अक्टूबर, बुधवार - प्रदोष व्रत

16 अक्टूबर, शुक्रवार - स्नानदान श्रद्धादि की अमावस्या,पुरुषोत्तम मास समाप्त

17 अक्टूबर, शनिवार - शुद्ध आश्विन शुक्ल पक्ष, नवरात्रि आरंभ, घटस्थापना

20 अक्टूबर, मंगलवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

21 अक्टूबर, बुधवार - नत पंचमी

24 अक्टूबर, शनिवार - महाष्टमी/अन्नपूर्णाष्टमी व्रत

25 अक्टूबर, रविवार - महानवमी/दुर्गानवमी व्रत/विजयादशी पर्व

26 अक्टूबर, सोमवार - माधवाचार्य जयन्ती

27 अक्टूबर, मंगलवार - पापांकुश एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

28 अक्टूबर, बुधवार - प्रदोष पर्व, पद्यनाथ द्वादशी

31 अक्टूबर, शानिवार - स्नानदान व्रतादि की शारदीय पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा व्रत/कोजागरी पूर्णिमा, महर्षि वाल्मिकी जयंती

शुभ मुहूर्त अक्टूबर 2020

1 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार (दिन में 12.15 से 13.30 के बीच)

2 अक्टूबर, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, हल प्रवहण, बीज बोना, उत्तर की यात्रा, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10.30)

3 अक्टूबर, शनिवार - नवीन व्यापार, उत्तर की यात्रा (दोपहर 13.30 से 16.30)

4 अक्टूबर, रविवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में)

6 अक्टूबर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, पूर्व ,दक्षिण की यात्रा (11.15 से 13.30 दिन में)

7 अक्टूबर, बुधवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, हल प्रवहण, नवीन व्यापार (सवेरे 10.35 से 12.15 दिन में)

11 अक्टूबर, रविवार - उत्तर की यात्रा (सवेरे 9.15 से 11.50 दिन में)

15 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, हल प्रवहण, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 8.30 सायं 18.30 से 20.10)

18 अक्टूबर, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.15 से 12.15)

19 अक्टूबर, सोमवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, हल प्रवहण, कूपारंभ, उत्तर की यात्रा, नवीन व्यापार (सायं 16.30 से 18.15)

21 अक्टूबर, बुधवार - हल प्रवहण, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 9.10)

22 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, कूपारंभ (सूर्योदय से सवेरे 7.30 दिन में 12.00 से 13.15)

23 अक्टूबर, शुक्रवार - नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, हल प्रवहण, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 6.58 सायं 18.58 से 19.30)

25 अक्टूबर, रविवार - पूर्व की यात्रा (सवेरे 9.15 से 10.30)

26 अक्टूबर, सोमवार - नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, हल प्रवहण, बीज बोना (सवेरे 9.10 से 10.30 सायं 15.30 से 18.18)

28 अक्टूबर, बुधवार - नामकरण, कूपारंभ, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)

29 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, पश्चिम, उत्तर की यात्रा (दिन में 12.05 से 13.35)

31 अक्टूबर, शनिवार - नवीन व्यापार (दिन में 13.30 से 16.30)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसंबर 2020

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

नवंबर 2020 के व्रत पर्व

1 नवम्बर, रविवार - कार्तिक कृष्ण पक्ष आरंभ

2 नवम्बर, सोमवार - अशून्य शयन व्रत

4 नवम्बर, बुधवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत/करवाचौथ व्रत

8 नवम्बर, रविवार - अहोई अष्टमी/राधाष्टमी व्रत

11 नवम्बर, बुधवार - रम्भा एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

12 नवम्बर, गुरुवार - गोवत्स एकादशी

13 नवम्बर, शुक्रवार - प्रदोष व्रत, धनतेरस, धनवंतरी जयन्ती

14 नवम्बर, शनिवार - दीपावली पर्व/श्राद्ध की अमावस्या, बालदिवस पर्व

15 नवम्बर, रविवार - स्नानदान की अमावस्या, गोवर्धन पूजन/अन्नकूट

16 नवम्बर, सोमवार - भाईदूज, कार्तिक शुक्ल पक्ष आरंभ

18 नवम्बर, बुधवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

19 नवम्बर, गुरुवार - ज्ञानपंचमी

20 नवम्बर, शुक्रवार - सूर्यसष्ठी, डालछठ

22 नवम्बर, रविवार - गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी

23 नवम्बर, सोमवार - अक्षयनवमी पर्व

25 नवम्बर, बुधवार - प्रबोधिनी एकादशी (स्मार्त)

26 नवम्बर, गुरुवार - प्रबोधिनी एकादशी (वैष्णव)

27 नवम्बर, शुक्रवार - प्रदोष व्रत

28 नवम्बर, शनिवार - वैकुण्ठ चतुर्दशी

30 नवम्बर, सोमवार - स्नानदान की पूर्णिमा, गुरुनानक जयन्ती, देव दीपावली

शुभ मुहूर्त नवंबर 2020

2 नवम्बर, सोमवार - दक्षिण की यात्रा (सवेरे 9.00 से 10.15)

3 नवम्बर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना, पूर्व एवं दक्षिण की यात्रा (दिन में 11.30 से 13.30)

4 नवम्बर, बुधवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 7.00 से 9.00)

6 नवम्बर, शुक्रवार - नामकरण, अन्नप्राशन, पूर्व उत्तर यात्रा (सूर्योदय से सवेरे 10.20)

8 नवम्बर, रविवार - नवीन व्यापार (सवेरे 10.15 से 12.15)

10 नवम्बर, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 11.30 से 13.30)

12 नवम्बर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, कूपारंभ, जीर्ण गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 7.35 दिन में 12.15 से 13.35)

13 नवम्बर, शुक्रवार - नामकरण, अन्नप्राशन, जीर्ण गृहप्रवेश, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10.40)

15 नवम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार (सवेरे 9.30 से 12.15 दिन में)

16 नवम्बर, सोमवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन (सवेरे 9.15 से 10.30)

19 नवम्बर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, नवीन व्यापार (दिन में 12.5 से 13.35)

20 नवम्बर, शुक्रवार - नामकरण, कूपारंभ, नवीन व्यापार, पूर्व दक्षिण यात्रा (सूर्योदय से सवेरे 10.15 के बीच)

21 नवम्बर, शनिवार - गृहारंभ भूमिपूजन, जीर्णगृह प्रवेश, दक्षिण यात्रा (दिन में 13.30 से 16.35)

24 नवम्बर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (दिन में 11.30 से 13.30)

25 नवम्बर, बुधवार - नामकरण, कूपारंभ, जीर्ण गृहप्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)

26 नवम्बर, गुरुवार - नामकरण, अक्षारारमभ, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 12.15 से 13.35)

27 नवम्बर, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, अन्नप्राशन, अक्षारारम्भ, नवीन व्यापार, उत्तर यात्रा (सूर्योदय से सवेरे 10.30)

30 नवम्बर, सोमवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, गृहारंभ भूमिपूजन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से 10.30, सायं 16.30 से 18.15)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसंबर 2020

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

दिसंबर 2020 के व्रत पर्व

1 दिसंबर, मंगलवार - मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष

3 दिसंबर, गुरुवार - सौभाग्य सुन्दरी व्रत/संकष्ठी चतुर्थी व्रत

7 दिसंबर, सोमवार - रुक्मिणी अष्टमी

8 दिसंबर, मंगलवार - काल भैरवाष्टमी, कालाष्टमी

9 दिसंबर, बुधवार - अनलानवमी

11 दिसंबर, शुक्रवार - उत्तरा एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

12 दिसंबर, शनिवार - शनि प्रदोष व्रत

14 दिसंबर, सोमवार - स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या, सोमवती अमावस्या

15 दिसंबर, मंगलवार - मूलनक्षत्र, धनुराशि में सूर्य संक्रान्ति (मलमास आरंभ)

18 दिसंबर, शुक्रवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

19 दिसंबर, शनिवार - श्रीराम विवाहोत्सव

20 दिसंबर, रविवार - स्कन्दषष्ठी/गुहाषष्ठी

21 दिसंबर, सोमवार - मित्र सप्तमी

22 दिसंबर, मंगलवार - दुर्गाष्टमी

23 दिसंबर, बुधवार - महानन्दानवमी

25 दिसंबर, शुक्रवार - मोक्षदा एकादशी (स्मार्त एवं वैष्णव), गीता जयंती, क्रिसमस डे

26 दिसंबर, शनिवार - अखण्ड द्वादशी

27 दिसंबर, रविवार - प्रदोष व्रत

29 दिसंबर, मंगलवार - व्रत की पूर्णिमा, दत्तात्रेय जयन्ती

30 दिसंबर, बुधवार - स्नानदान की पूर्णिमा

31 दिसंबर, गुरुवार - ईस्वी नववर्ष 2021 की पूर्व संध्या

शुभ मुहूर्त दिसंबर 2020

1 दिसंबर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना, दक्षिण की यात्रा (दिन में 11.05 से 13.15)

2 दिसंबर, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, कूपारंभ खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 9.15)

3 दिसंबर, गुरुवार - कर्णवेध (सूर्योदय से सवेरे 7.5 सायं 19.28 से 20.15)

4 दिसंबर, शुक्रवार - उत्तरदिशा की यात्रा (सूर्योदय से सवेरे 10.30)

7 दिसंबर, सोमवार - कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.15 से 13.35)

9 दिसंबर, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15)

10 दिसंबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना, कर्णवेध, कूपारंभ, जीर्णगृह प्रवेश (दिन में 12.52 से 13.35)

11 दिसंबर, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, कूपारंभ, जीर्णगृह प्रवेश (सूर्योदय से सवेरे 10.35 दिन में 12.15 से 13.30)

12 दिसंबर, शनिवार - जीर्णगृह प्रवेश (दिन में 13.30 से 16.30)

17 दिसंबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (दिन में 13.30 से 16.30)

18 दिसंबर, शुक्रवार - नामकरण, अन्नप्राशन, पूर्व एवं दक्षिण की यात्रा (सूर्योदय से सवेरे 10.40)

19 दिसंबर, शनिवार - पश्चिम दिशा की यात्रा (दिन में 13.30 से 16.30)

23 दिसंबर, बुधवार - पश्चिम दिशा की यात्रा (सवेरे 10.30 से 12.15)

24 दिसंबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (दिन में 12.05 से 13.35)

25 दिसंबर, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना, पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्राएं (सूर्योदय से सवेरे 10.40)

27 दिसंबर, रविवार - प्रसूति का स्न्नान, नवीन व्यापार, पूर्व की यात्राएं (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में)

31 दिसंबर, गुरुवार - नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, उत्तर, पश्चिम की यात्रा (दिन में 12.15 से 13.35 के बीच)

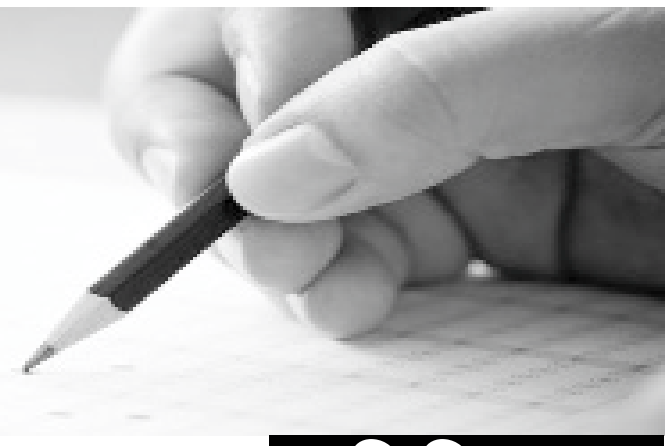

आपके पत्र प्रतिक्रियाएं

संपादक महोदय

जीवन वैभव पत्रिका को देखकर लगा कि इसे पढ़ा जाए समय की कमी के कारण समय निकालकर इस पत्रिका को पढ़ी यह बहुत अच्छी लगी। पत्रिका में दिए गए सभी विषय परिवार की सभी सदस्यों को ज्ञानवर्धक प्रतीत हुए। स्वास्थ्य के बारे में दी गई जानकारी वर्तमान समय के परिपेक्ष में बहुत अच्छी लगी संपादक मंडल को धन्यवाद।

- गरिमा जोशी, नोएडा, हरियाणा

जीवन वैभव पत्रिका में दिए गए आलेख पठनीय है तथा उनमें से विशेषकर श्री एसएस लाल तथा श्री बी एल शर्मा का ज्योतिष संबंधी आलेख बहुत उत्तम प्रतीत हुआ ज्योतिष विषय पर बहुत सुख क्षमता एवं गहराई से मनन करने योग्य आलेख प्रकाशित होना जीवनबैभव में लिखने वाले लेखक एवं विषय केसंयोजन करने के लिए संपादक एवं सम्पादक मंडल के बधाई के पात्र हैं।

- रामेश्वर शर्मा, सेवानिवृत्त सहायक यंत्री, उज्जैन

जीवन वैभव त्रैमासिक पत्रिका मेरे मित्र के यहां पढ़ने को मिली मुझे समग्र जानकारी अच्छी प्रतीत हुई तथा सदस्यता ग्रहण करने की इच्छा जागृत हुई मैं अपना अरे वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने के लिए आपको पेटीएम द्वारा राशि प्रेषित कर रही हूं कृपया पत्रिका निरंतर प्रेषित करते रहें।

- मोनिका पाराशर ज्योतिर्विद, इंदौर

चरित्र निर्माण स्वास्थ्य एवं अध्यात्म के साथ-साथ ज्योतिष के गुढ़विषय की पत्रिका जीवन वैभव पढ़कर मन प्रसन्न हुआ कि ज्योतिष और वास्तु के कुछ सूत्र का अध्ययन किया जाय जीवन वैभव पत्रिका एसे उत्तम और सग्रहणीयआलेख तथा सिद्धान्त सूत्र दिए जाते हैं। इसके लिए बहुत-बहुत आभार।

- रुद्रीका जोशी, उज्जैन

आप सभी का हृदय से आभार आपके द्वारा पत्रिका के विषयों को पढ़कर सराहा गया यह बड़ी गर्व की बात है ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आने वाली पीढ़ी नैतिकता और संस्कार को महत्व दे रही है जोकि जीवन वैभव का एकमात्र आधारभूत उद्देश्य है ज्योतिष विषय में भी सही परामर्श देना तथा पूछने वाले को निस्वार्थ भाव से पत्रिका में दिए गए ग्रहों के फलित को निरूपण करना विषय के प्रति वफादारी है इसी कारण ज्योतिष विषय में विद्वानों की हालत प्रकाशित किए जाते हैं किसी प्रकार का व्यवसायीकरण का उद्देश प्रकाशित आलेखों मेंकदापि दृष्टिगोचर नहीं होता है यह पाठक स्वयं पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं इस पत्रिका के स्थापना के 34 वर्ष पूरे हो रहे हैं इसमें यदि कोई बदलाव या विषय विशेष को जोड़ा जाना हो तो कृपया पाठक गण अपनी प्रतिक्रिया में व्यक्त करने का कष्ट करें ताकि तदनुसार पाठकों के हित में जानकारी को कम अथवा अधिक बढ़ाई जा सके धन्यवाद आपका सहयोग सदैव मिलता रहे इस आशय की अपेक्षा के साथ...

- हेमचन्द्र पाण्डेय, संपादक

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक, अरेरा कालोनी, शाखा भोपाल के जीवन वैभव खाता क्रमांक 50159870448 में जमा करते हुए बैंक की जमा पर्ची (स्लिप) सदस्यता आवेदन पत्र के साथ प्रेषित कर दें। यदि इलाहाबाद बैंक के अतिरिक्त अन्य बैंक से शुल्क जमा कराये जाने की स्थिति में एन.ई.एफ.टी. (नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रांसफर) माध्यम से निम्नानुसार शुल्क जमा कराएं –

खाता क्रमांक	:	50159870448
खाते का नाम	:	जीवन वैभव
आय.एफ.एस.सी. कोड	:	ALLA 0210197

यदि आप रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका प्राप्त करना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड डाक का शुल्क पृथक से सदस्यता की राशि के साथ जोड़कर प्रेषित कर दें। अन्यथा साधारण डाक से पत्रिका प्रेषित की जावेगी।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662; **ईमेल:** hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम .....

डाक का पूरा पता .....

.....

.....

दूरभाष/मोबाईल .....

सदस्यता ..... आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण 1800/- 300/- 100/-

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक ..... दिनांक .....

चैक क्रमांक ..... दिनांक .....

जीवन वैभव के नाम से इलाहाबाद बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका "जीवन वैभव" के बारे में आपकी राय:-

.....

.....

.....

.....

.....

पाठक के हस्ताक्षर

पता:

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर

प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662

ईमेल: hcp2002@gmail.com

नोट: उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई-मेल द्वारा प्रेषित करें ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

नाम : .....

पता : .....

जन्म तारीख : .....

जन्म समय : .....

जन्म स्थान : .....

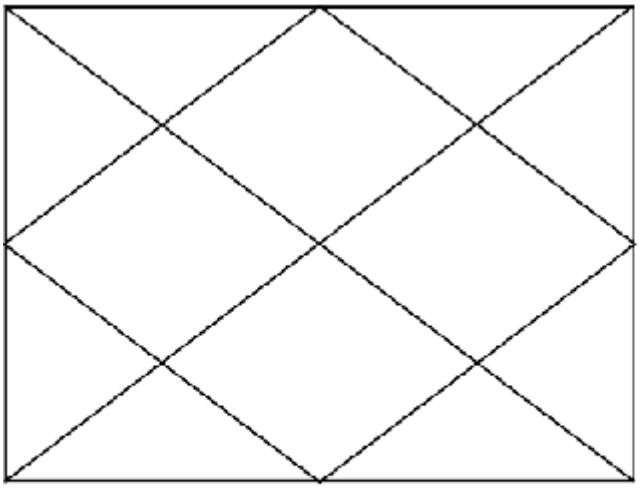

कोई एक प्रश्न .....

.....

.....

भवदीय

.....

नोटः- जीवन वैभव के विद्वान लेखकों और पाठकों के द्वारा ज्योतिष परामर्श पत्रिका के माध्यम से चाहा है हमारे द्वारा ज्योतिष परामर्श कूपन उपरोक्तानुसार दिया गया है इसकी पूर्ति करते हुए हमें प्राप्त होने पर ज्योतिष विद्वानों का एक मण्डल विचार-विमर्श उपरांत परामर्श उत्तर नाम प्रकाशित नहीं करते प्रदाय करेगा।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी
जीवन वैभव
15-ए, महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी
एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

(शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी
सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक)

लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द पाण्डेय

निःशुल्क पुस्तक प्राप्त करने के लिए
जीवन वैभव के त्रैवार्षिक सदस्य बनें ...
पाँच पुस्तकें प्राप्त करने के लिए
डाक खर्च देना आवश्यक नहीं।

व्यवस्थापक :
जीवन वैभव
15 ए, जोन-।, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662
ईमेल : hcp2002@gmail.com

लक्ष्मी प्राप्ति हेतू श्री सूक्त

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।।1।।

तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विंदेयं, गामश्वं पुरूषानहम्।।2।।

अश्वपूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम्।।3।।

कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रा ज्वलंतीं तृप्तां तर्पयंतीं।
पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।4।।

चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम्।
तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।5।।

आदित्यवर्णे तपसोधिह्यजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदंतु या अंतरा याष्च बाह्या अलक्ष्मीः।।6।।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिष्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। 7।।

क्षुत्पिपासामलां जयेष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ।। 8।।

गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।9

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥10

कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥11

आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ 12।।

आर्द्रापुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ 13

आर्द्रायः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ 14।।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्या हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वन्विन्देयं पुरुषानहम् ।।15।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥16

जीवन वैभव ज्योतिष त्रैमासिक पत्रिका जो कि जीवन की समृद्धि के लिए गागर में सागर है–

प्रत्येक अंक में देश के सम्मानित एवं मूर्धन्य विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेख समाविष्ट रहते है। इस पत्रिका की सदस्यता निम्नानुसार ले सकते है।

वार्षिक सदस्यता रू.100/–, त्रैवार्षिक रू. 300/–, आजीवन सदस्यता रू. 1800/–

विगत तीन वर्ष के एक साथ सजिल्द अंक 350 रू.।

उपरोक्तानुसार सदस्यता ''जीवन वैभव'' के नाम से अरेरा कॉलोनी की इलाहाबाद बैंक के
खाता क्र. 50159870448, आईएफएससी कोड ALLA0210197
के अनुसार जमा कर रसीद की प्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

- जीवन वैभव पत्रिका में विविध विषय जो कि परिवार एवं समाज के लिये उपयोगी है, इन विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती है, ज्योतिष, चरित्र–निर्माण, योग, होम्योपैथी, आहार चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म आदि। जीवन वैभव में स्थाई स्तंभ प्रत्येक अंकों में प्रकाशित होते हैं जो कि संग्रहणीय हैं।
- **वंदना', अमृतवाणी , वैभवदर्शन , गीता माता , उचितआहार, चिकित्सा , धर्मिक शिक्षाप्रद जानकारी, ज्योतिष एवं स्वास्थ्य, व्रत पर्व, विविध मुहूर्त, त्रैमासिक भविष्यफल आदि जानकारी प्रत्येक अंक में उपब्ध रहती है।**
- महापुरूषों द्वारा दिए गए आर्शीर्वचन एवं सुखी जीवन के लिए अनमोल सुझाव पृथक से बाक्स के रूप में दिये जाते हैं जो पाठकों को लाभप्रद एवं रोचक लगते हैं।
- **जीवन वैभव का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है, तथा जीवन वैभव के उपरोक्त पुराने उपलब्ध अंक कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।**

कार्यालय का पता **व्यवस्थापक जीवन वैभव**
15 ए. प्रेस काम्प्लेक्स, जोन–1 महाराणा प्रताप नगर, भोपाल म.प्र.
संपर्क : 9425008662, ईमेल : *hcp2002@gmail.com*